@haryanavatika www.haryanavatika.in @haryanavatika @haryanavatika

हरियाणा वाटिका

राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

लोहारू से प्रकाशित सोच बिल्कुल निष्पक्ष

RNI No-HARHIN/2019/79021 वर्ष : 06, अंक: 235 पृष्ठ: 08, मूल्य: रू. 1.00 रविवार, 29 जून 2025 haryanavatika@gmail.com +91-9255149495

प्रेरणास्त्रोतः स्व. डॉ. एलसी वालिया

हरियाणा सरकार ने किया सातवें राज्य वित्त आयोग का गठन

चंडीगढ़/हरियाणा वाटिका एजेंसी

हरियाणा सरकार ने राज्य, पंचायती राज संस्थाओं (पीआरआई) और शहरी स्थानीय निकायों के बीच वित्तीय संसाधनों के वितरण की समीक्षा और सिफारिश करने के लिए सातवें राज्य वित्त आयोग का गठन किया है। हरियाणा के पूर्व मुख्य सचिव श्री संजीव कौशल को आयोग का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है, जबकि आईएएस अधिकारी श्री अंशज सिंह इसके सदस्य सचिव होंगे। अन्य सदस्यों की नियुक्ति बाद में की जाएगी।

मुख्य सचिव श्री अनुराग रस्तोगी द्वारा इस संबंध में अधिसूचना जारी की गई है। आयोग राज्य सरकार और जिला परिषदों, पंचायत समितियों तथा ग्राम पंचायतों के बीच करों, शुल्कों, उपकरों और टैक्सों की शुद्ध आय के वितरण के लिए सिद्धांतों की सिफारिश करेगा। साथ ही, यह भी बताएगा कि किन करों और शुल्कों को पंचायती राज संस्थाओं को सौंपा या उनके द्वारा संग्रहित किया जा सकता है। इसके अलावा, आयोग राज्य के कंसोलिडेटेड फंड से पीआरआई को दिए जाने वाले अनुदानों और उनकी वित्तीय स्थिति को सुधारने के उपायों पर भी सिफारिश करेगा। इसी तरह, आयोग शहरी स्थानीय निकायों के बारे में भी सुझाव देगा, जिसमें नगरपालिकाओं और राज्य सरकार के बीच करों और शुल्कों का वितरण, नगरपालिकाओं को सौंपे जाने योग्य करों की पहचान करना, उन्हें मिलने वाले अनुदान और उनके वित्तीय सशक्तिकरण के लिए आवश्यक उपाय करना शामिल है। सातवां राज्य वित्त आयोग 31 मार्च, 2026 तक हरियाणा के राज्यपाल को अपनी अंतिम रिपोर्ट सौंपेगा। यह रिपोर्ट वर्ष 2026-27 से 2030-31 तक पांच वर्ष की अवधि को कवर करेगी और स्थानीय शासन की वित्तीय रूपरेखा को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। आयोग का मुख्यालय पंचकूला में होगा और इसके लिए कार्यालय स्थान स्वर्ण जयंती हरियाणा वित्तीय प्रबंधन संस्थान में आवंटित किया जाएगा।

युवा मॉक पार्लियामेंट नीति-निर्माण की एक जीवंत प्रयोगशाला : सीएम

मुख्यमंत्री ने गुरुग्राम की धरती से युवाओं को दिया राष्ट्र निर्माण का मंत्र

चंडीगढ़/हरियाणा वाटिका एजेंसी

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि युवा मॉक पार्लियामेंट सिर्फ एक कार्यक्रम नहीं है, यह लोकतंत्र का उत्सव और नीति-निर्माण की एक जीवंत प्रयोगशाला है। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे इस मॉक पार्लियामेंट के माध्यम से देश को यह स्पष्ट संदेश दें कि लोकतंत्र की रक्षा ही हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी आज गुरुग्राम में आयोजित युवा मॉक पार्लियामेंट में युवाओं को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि युवा मॉक पार्लियामेंट केवल एक शैक्षणिक अभ्यास भर नहीं है, बल्कि आज के दिन को संविधान हत्या दिवस के रूप में भी याद करते हुए, आपातकाल के उस काले अध्याय पर विमर्श करने का अवसर है, जिसने लोकतंत्र की आत्मा को कुचलने का दुस्साहस किया था।

गुरुग्राम ने हमेशा नवाचार और आकांक्षा की भावना को आगे बढ़ाया

मुख्यमंत्री ने कहा कि गुरुग्राम की धरती पर आयोजित यह कार्यक्रम न केवल युवाओं के उज्ज्वल भविष्य का संकेत है, बल्कि लोकतंत्र की एक सशक्त प्रयोगशाला के रूप में इसकी भूमिका अत्यंत सराहनीय है। उन्होंने कहा कि गुरु द्रोण की इस पावन भूमि और मिलेनियम सिटी के रूप में प्रसिद्ध गुरुग्राम ने हमेशा नवाचार और आकांक्षा की भावना को आगे बढ़ाया है। आज का यह आयोजन इस शहर की पहचान को और अधिक सशक्त करता है।मुख्यमंत्री ने कहा कि जब वे आप जैसे ऊर्जावान युवाओं को देखते हैं, तो विकसित भारत और विकसित हरियाणा का संकल्प और भी सुदृढ़ हो जाता है। उन्होंने कहा कि अमृतकाल की यह पीढ़ी ही वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में अग्रसर करेगी। इस लक्ष्य की प्राप्ति में युवा मॉक पार्लियामेंट मील का पत्थर साहिब होगी।

संसद में गूंजने वाला हर शब्द और बनने वाला हर कानून देश के अंतिम व्यक्ति के जीवन को करता है प्रभावित

नायब सिंह सैनी ने युवाओं से कहा कि वे संसद को केवल एक इमारत के रूप में न देखें बल्कि उसे 140 करोड़ देशवासियों की आकांक्षाओं के केंद्र के रूप में समझें। संसद में गूंजने वाला हर शब्द और बनने वाला हर कानून देश के अंतिम व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करता है।

इस युवा मॉक पार्लियामेंट का उद्देश्य केवल संसदीय प्रक्रियाओं की नकल भर करना नहीं है बल्कि उस भावना को आत्मसात करना है जो भारतीय लोकतंत्र को विशिष्ट बनाती है। वे किसी भी विषय पर बोलते समय गहन अध्ययन करें और तथ्यों व आंकड़ों के आधार पर अपनी बात रखें। जब वे सरकार की किसी नीति का समर्थन करें, तो उसके पीछे की सोच और उसके दूरगामी परिणामों को अवश्य समझाएं। उन्होंने कहा कि विरोध करना लोकतंत्र का अधिकार है लेकिन केवल विरोध के लिए विरोध नहीं बल्कि समाधान और विकल्प के साथ रचनात्मक आलोचना ही लोकतंत्र की असली ताकत है। उन्होंने स्पष्ट किया कि लोकतंत्र में विरोध होना चाहिए न कि अवरोध।

भारत वैश्विक समस्याओं के समाधान में बन चुका भागीदार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व की सराहना करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि आज भारत वह देश नहीं रहा जो दुनिया से मदद मांगता था बल्कि अब भारत वैश्विक समस्याओं के समाधान में भागीदार बन चुका है। उन्होंने कहा कि रक्षा, डिजिटल, स्टार्टअप, टेक्नोलॉजी, ग्रीन एनर्जी, स्पेस टेक्नोलॉजी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और सेमीकंडक्टर मिशन जैसे क्षेत्रों में भारत अब वैश्विक मंच पर अग्रणी स्थान प्राप्त कर रहा है।

युवा संकल्प लेकर एक भारत-श्रेष्ठ भारत की भावना को और अधिक मजबूत करें

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने युवाओं से आग्रह किया कि वे युवा मॉक पार्लियामेंट से प्रेरणा लेकर अपने जीवन में चार महत्वपूर्ण संकल्प अपनाएं। वे देश के किसी भी एक ज्वलंत मुद्दे पर गहन अध्ययन करें और उसके समाधान के लिए समाज में जागरूकता फैलाएं। अपने जीवन में किसी भी प्रकार के शॉर्टकट को न अपनाएं। परिवारवाद और भ्रष्टाचार की राजनीति को नकारें और एक भारत-श्रेष्ठ भारत की भावना को और अधिक मजबूत करें।

वह आपातकाल नहीं, अन्याय काल था - खेल राज्य मंत्री गौरव गौतम

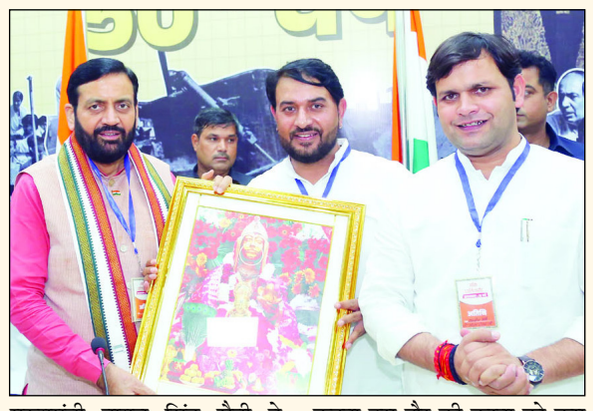

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने युवाओं से आग्रह किया कि वे युवा मॉक पार्लियामेंट से प्रेरणा लेकर अपने जीवन में चार महत्वपूर्ण संकल्प अपनाएं। वे देश के किसी भी एक ज्वलंत मुद्दे पर गहन अध्ययन करें और उसके समाधान के लिए समाज में जागरूकता फैलाएं। अपने जीवन में किसी भी प्रकार के शॉर्टकट को न अपनाएं। परिवारवाद और भ्रष्टाचार की राजनीति को नकारें और एक भारत-श्रेष्ठ भारत की भावना को और अधिक मजबूत करें।

खेल राज्य मंत्री गौरव गौतम ने कहा कि वर्ष 1975 में लगाए गए आपातकाल को केवल आपातकाल कहना उस दौर की क्रूरता को कम करके आंकना होगा। असल में वह अन्याय काल था, जब संविधान, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और आम नागरिकों के अधिकारों का बेरहमी से दमन किया गया। जब कोई चुना हुआ प्रतिनिधि तानाशाही की राह पर चल पड़ता है और सत्ता के मद में संविधान तक की अवमानना करता है, तब लोकतंत्र पर जो कुठाराघात होता है, उसका सबसे बड़ा उदाहरण आपातकाल है। इस अवसर पर उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री राव नरबीर सिंह, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मोहनलाल कौशिक, विधायक मुकेश शर्मा, तेजपाल तंवर, श्रीमती विमला चौधरी सहित अन्य गणमान्य उपस्थित रहे।

स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार तथा शिक्षा प्रसार के लिए राज्य सरकार निरंतर प्रयासरत

चंडीगढ़/हरियाणा वाटिका एजेंसी

हरियाणा के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री कृष्ण कुमार बेदी ने कहा है कि स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार तथा शिक्षा प्रसार के लिए राज्य सरकार निरंतर प्रयासरत है। प्रदेश के आमजन को स्वास्थ्य लाभ मिले इसके लिए चिकित्सा सुविधाओं को अति आधुनिक बनाया जा रहा है साथ ही गरीब एवं आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्तियों को सरकारी अस्पतालों में निःशुल्क इलाज एवं उपचार उपलब्ध करवाया जा रहा है। भविष्य में हरियाणा एक स्वस्थ एवं समृद्ध प्रदेश बनेगा और नरवाना हलका में भी स्वास्थ्य सेवाओं तथा सुविधाओं का भरपूर लाभ मिलेगा।

श्री बेदी शनिवार को नरवाना (जींद) में नागरिक अस्पताल में ब्लॉक पब्लिक हैल्थ यूनिट के शिलान्यास कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि यह यूनिट हॉल नगर परिषद द्वारा बनाया जाएगा और इसके निर्माण पर करीब 60 लाख रुपए खर्च किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि इस ब्लॉक यूनिट में मल्टीपर्पज हॉल की व्यवस्था होगी। इस बहुउद्देशीय हॉल में आवश्यकतानुसार समय-समय विभाग द्वारा हेल्थ चेकअप कैंप आयोजित किए जा सकेंगे। इसके अलावा इस हाल में पैथोलॉजी लैब, नर्सिंग रूम, बोर्ड रूम तथा अन्य स्वास्थ्य सबंधित चेकअप व टेस्ट की सुविधाएं भी उपलब्ध रहेंगी।

उन्होंने कहा कि नरवाना वर्षों से स्वास्थ्य सेवाओं की दृष्टि से पिछड़ा रहा है और यहां बेहतर चिकित्सा एवं उपचार सुविधाओं की कमी भी रही है। इस क्षेत्र के आसपास दूसरे इलाकों में भी बढ़िया किस्म के अस्पताल तथा मैडिकल संस्थान के ना होने से इलाका वासियों को अपने इलाज के लिए रोहतक, चड़ीगढ़, हिसार या पटियाला जाना पड़ता है।

बरसात से पहले नालों की सफाई सुनिश्चित करें निगम अधिकारी: विधायक निखिल मदान

सोनीपत/हरियाणा वाटिका एजेंसी

शनिवार को विधायक निखिल मदान ने शहर की आधा दर्जन कालोनियों का दौरा किया और वहां पर सीवरेज ओवरफ्लो और पेयजल आपूर्ति संबंधी समस्याओं को सुना और मौके पर ही मौजूद निगम अधिकारियों को त्वरित समाधान के दिशा निर्देश दिए। विधायक निखिल मदान ने निगम अधिकारियों के साथ प्रगति नगर, भरतपुरी, विशाल नगर और सरदारों वाली गली में मौके पर पहुंच कर सीवरेज ओवरफ्लो की समस्या का हाल देखा और समाधान करवाया।

विधायक निखिल मदान प्रगति नगर में पहुंचे जहां उन्होंने डेरी संचालक द्वारा सीवरेज लाइन में गोबर और अन्य गंदगी बहाने के कारण पैदा हुई सीवरेज ओवरफ्लो और दूषित जल भराव की समस्या का निरीक्षण किया। विधायक निखिल मदान ने मौके पर ही मशीन बुलवाकर सीवर लाइन की सफाई करवाई तथा डेयरी संचालक को गोबर और किसी भी प्रकार की गंदगी सीवरेज लाइन में ना बहाने की सख्त हिदायत दी।

निखिल मदान ने कहा कि आज डेयरी संचालक का सीवरेज लाइन में गोबर बहाने के कारण चालान किया गया है। अगर आगे भी इसी तरह की गतिविधि डेयरी संचालक द्वारा की जाती है तो डेयरी को सील भी किया जाएगा।

इसके पश्चात विधायक निखिल मदान विशाल नगर गली नंबर 2 में पहुंचे जहां उन्होंने पेयजल आपूर्ति में सीवरेज का पानी आने की शिकायत का संज्ञान लिया और मौके पर ही निगम अधिकारियों को बुलाकर सीवरेज लाइन की सफाई करवाने का आदेश दिए।

पारदर्शिता और सरल व्यवस्था की बदौलत आमजन में सन्तुष्टिभाव: डॉ अरविंद

मोदी-नायब सरकार की योजनाओं से धरातल पर आमजन को हो रहा लाभ

चंडीगढ़/हरियाणा वाटिका एजेंसी

हरियाणा के सहकारिता , विरासत व पर्यटन मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार द्वारा बीते 11 साल में पारदर्शिता और व्यवस्था को सरल बनाया गया है, इससे आमजन को सरकारी कार्यालयों के चक्कर नहीं काटने पड़ते। उन्होंने कहा कि सैंकड़ों योजनाओं का घर बैठे लाभ उठाने की व्यवस्था की बदौलत आज आमजन में भाजपा सरकार के प्रति संतुष्टि का भाव है। आज सहकारिता मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने गोहाना में नियमित साप्ताहिक दरबार लगाते हुए क्षेत्रवासियों से जनसंवाद किया। विभिन्न गांवों और शहरी क्षेत्र से आए सैंकड़ो लोगों से मुलाकात करते हुए उनका कुशलक्षेम जाना व इसके उपरांत उनकी समस्याएं सुनी। कैबिनेट मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि जब भी कोई व्यक्ति अपनी समस्या लेकर सरकारी कार्यालय में जाए तो उसकी बात को प्राथमिकता से सुनते हुए उचित कार्रवाई की जाए।

उन्होंने कहा कि अधिकारी आमजन के साथ विनम्र व्यवहार करते हुए उनकी समस्या का मौके पर ही निपटान करेंगे तो उनकी परेशानियां दूर हो जाएंगी। कैबिनेट मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने कहा कि बीते 11 साल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व की केंद्र सरकार व मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व की प्रदेश सरकार द्वारा गरीब, वंचित व जरूरतमंद के उत्थान को लेकर प्रभावी कदम उठाए गए हैं।

महापुरूषों द्वारा दिए गए उपदेश आज भी प्रासंगिक: बेदी

चंडीगढ़/हरियाणा वाटिका एजेंसी

हरियाणा के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री श्री कृष्ण कुमार बेदी ने कहा है कि संत महापुरूष किसी विशेष जाति या वर्ग तक सीमित नहीं होते बल्कि सर्व समाज के आदर्श होते हैं। भारत भूमि आधिकाल से ही साधु, संत, सन्यासी, तपस्वियों एवं महापुरूषों की जननी रही है और समय- समय पर अनेक संतों, गुरुओं ने भारत के साथ- साथ पूरी दूनिया को समरस्ता, समानता तथा सौहार्द का संदेश दिया है। महापुरूषों द्वारा दिए गए उपदेश वर्तमान समय में भी बराबर प्रासंगिक हैं और संतों की वाणी से सर्व समाज के कल्याण का रास्ता प्रशस्त होता है। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री श्री कृष्ण कुमार बेदी शनिवार को नरवाना (जींद) में एलआईसी रोड स्थित वाल्मीकि भवन में संत कबीर जी की 628वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित प्रकट उत्सव में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। उन्होंने अपने सम्बोन्धन में कहा कि संत कबीर जी का नाम संत महापुरूषों की अग्रणी पंक्ति में आता है। संत कबीर जी किताबी ज्ञान से परे थे, लेकिन दिव्य एवं आलौकिक शिक्षा के भंडार थे। संत शिरोमणि कबीर जी ने जीवन प्रयंन्त समाज को जाति- पाति, छुआछात से ऊपर उठकर आपसी भाईचारे के साथ आगे बढ़ने का पाठ पढ़ाया। जात का पूछो संत की पूछो उसका ज्ञान, कबीर खड़ा बाजार में, मांगे सबकी खैर, ना काहू से दोस्ती ना काहू से बैर- संत कबीर जी के इन दोहों से आज भी मानव समाज को एकजुटता तथा समरस्ता से जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। सामाजिक कुरीतियों से आगे बढ़कर शिक्षा प्रसार के साथ मनुष्य व्यक्तिगत तथा सामाजिक तौर पर मानव जाति के लिए कल्याणकारी बन सकता है और उसे संत कबीर जी की इसी मान्यता को अपने जीवन में धारण करना चाहिए। संत कबीर जी के सिद्धातों तथा आदर्शों को अपनाना ही साधु, संतों के प्रति मानव समाज की सच्ची श्रद्धाजंलि होगी। कैबिनेट मंत्री ने आगे कहा कि मौजूदा केन्द्र एवं राज्य सरकार संत महापुरूषों द्वारा दिखाए रास्ते पर चलते हुए सर्व समाज के कल्याण की परिकल्पना को साकार करने के प्रति वचनबद्ध है। शोषित, पीड़ित, वंचित तथा पिछड़ा वर्ग का उत्थान सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शुमार है।

मुख्यमंत्री सैनी के नेतृत्व में हो रहे समान रूप से विकास कार्य: राणा

करनाल/हरियाणा वाटिका एजेंसी

असंध विधायक योगेन्द्र राणा ने आज असंध से खिजराबाद तक जाने वाली सडक के निर्माण कार्य का विधिवत शिलान्यास किया। इस महत्वपूर्ण विकास कार्य के लिए विधायक योगेन्द्र राणा ने हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सैनी, केंद्रीय ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल एवं लोक निर्माण विभाग मंत्री रणबीर सिंह गंगवा का आभार प्रकट करते हुए कहा कि यह सडक असंध विधानसभा क्षेत्र के विकास को नई गति देगी और क्षेत्रवासियों के आवागमन को और अधिक सुगम बनाएगी। विधायक ने कहा कि हरियाणा के मुख्यमंत्री सैनी के कुशल नेतृत्व में सभी विकास कार्य तीव्र गति से पूर्ण हो रहे हैं और विकास कार्य के लिए धन की कोई कमी आड़े नहीं आने दी जाएगी। आज सीएम सैनी के नेतृत्व में प्रदेश का विकास हो रहा है और सडक से लेकर गांव तक आज हरियाणा संवर रहा है, बदल रहा है ओर आगे बढ़ रहा है। असंध विधानसभा क्षेत्र में लोगों को बिजली, पेयजल सप्लाई से जुड़ी लाइनों और सिवरेज व्यवस्था तथा पार्कों के सौन्दर्यकरण सहित तमाम मूलभूत सुविधाएं मुहैया करवाई जा रही हैं।

हरविंद्र कल्याण ने करीब 3.77 करोड़ की 7 परियोजनाओं का किया उद्घाटन व शिलान्यास

करनाल/हरियाणा वाटिका एजेंसी

हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष हरविन्द्र कल्याण ने शनिवार को घरौंडा हलके में तीन करोड़ 76 लाख 45 हजार रुपये की 7 परियोजनाओं का उद्घाटन एवं शिलान्यास किया। इस मौके पर उन्होंने ग्रामीणों से कहा कि वे खुलकर अपनी समस्याओं व मांगों को रखें, हर वाजिब कार्य को पूरा कराया जाएगा। हलके में तरक्की की मजबूत नींव रखी जा चुकी है। लंबित कार्यों को तेजी से पूरा कराया जा रहा है। स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के लिए प्रशिक्षण केंद्र का निर्माण कार्य शुरू हो चुका है। इसे दो साल के अंदर पूरा कराने का प्रयास किया जाएगा। हरविन्द्र कल्याण ने गांव भरतपुर में पीडब्ल्यूडी सडक से श्मशान घाट तक के रास्ते का शिलान्यास किया। पंचायती राज विभाग द्वारा बनवाए जाने वाले 1278 मीटर लंबे इस रास्ते पर 57 लाख 25 हजार रुपए की लागत आएगी। पेवर ब्लॉक से बनाए जाने वाले इस रास्ते का निर्माण कार्य चार महीने में पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। उन्होंने सदरपुर गांव में उप स्वास्थ्य केंद्र का भी शिलान्यास किया। इसका निर्माण जिला परिषद की ओर से कराया जाएगा। इस पर 67 लाख 26 हजार रुपये की लागत आएगी।

27 लाख रुपये में बनी सडक का किया उद्घाटन

विधानसभा अध्यक्ष ने मुंडी गढ़ी.गढ़ी खजूर सडक से गांव बस्सी तक मंडी बोर्ड द्वारा बनवाई गई 220 मीटर लंबी संपर्क सडक का उद्घाटन किया। इस पर 27 लाख रुपये खर्च हुए हैं। इसके बाद गांव गढ़ी खजूर में हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद की ओर से गांव के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में 14 कमरों के निर्माण कार्य का शिलान्यास किया। इन पर 1 करोड़ 92 लाख 39 हजार रुपये की लागत आएगी। निर्माण कार्य 18 सितंबर तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। उन्होंने इसी गांव में पंचायती राज विभाग की ओर से एसएचजी के लिए बनवाये गए हॉल और महिला चौपाल में बनाए गए कमरे का भी उद्घाटन किया। इन पर क्रमशः आठ व नौ लाख रुपये खर्च हुए हैं। 15 लाख 55 हजार रुपये की लागत से पीडब्ल्यूडी रोड से डेरा बामनी तक बनी फिरनी ड्रेन के निर्माण कार्य का उद्घाटन किया।

हलके में तेजी से हो रहे विकास कार्य

सदरपुर गांव में ग्रामीणों को संबोधित करते हुए विधानसभा अध्यक्ष हरविन्द्र कल्याण ने कहा कि यहां उप स्वास्थ्य केंद्र बनवाने की पुरानी मांग थी जो अब पूरी होने जा रही है। उन्होंने कहा कि यमुना बैल्ट में चौपाल, स्कूल, गली, खेत के रास्ते, सामुदायिक केंद्र आदि के काफी विकास कार्य हुए हैं, अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। अधूरे कामों को तेजी से पूरा किया जा रहा है। बाढ़ से बचाव के लिए यमुना के तटबंधों को मजबूत किया जा रहा है। पंचायत ने गांव में स्कूल के लिए दो एकड़ जमीन दी है। पंचायत से कहा है कि कुछ और जमीन उपलब्ध कराई जाए ताकि भविष्य में स्कूल भवन व खेल सुविधाओं के विस्तार में कोई दिक्कत न आए। स्पीकर ने गांव की बेटियों को कड़े परिश्रम और उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि शिक्षित होकर वे अफसर बनें और गांव व राष्ट्र का नाम रोशन करें।

पढ़ाई के लिए संसाधनों में किसी भी प्रकार की कमी नहीं आने दी जाएगी।

कभी किसी संसाधन की जरूरत हो तो उन्हें निसंकोच बताएं।

इस मौके पर सिविल सर्जन

गुजवि ने किए ने विभिन्न विषयों के परीक्षा परिणाम घोषित

हरियाणा वाटिका/सुरेंद्र सोढी
हिसार, 28 जून। गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय ने विभिन्न विषयों के परीक्षा परिणाम घोषित किए हैं। विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक प्रो. यशपाल सिंगला ने बताया कि दिसम्बर 2024 में आयोजित एमएससी साइकोलॉजी कोर्स कोड-111 प्रथम सेमेस्टर (रिअपीयर व मेन) बैच 2022, 2023 व 2024, एमएससी साइकोलॉजी कोर्स कोड-111 तृतीय सेमेस्टर (रिअपीयर व मेन) बैच 2022 व 2023, एमए हिंदी चतुर्थ सेमेस्टर (मेन) बैच 2023, एमए हिंदी चतुर्थ सेमेस्टर (रिअपीयर) बैच 2021-2022, एमएड तृतीय सेमेस्टर (रिअपीयर) बैच 2022, एमएड तृतीय सेमेस्टर (मेन) बैच 2023, एलएलबी प्रथम सेमेस्टर (रिअपीयर) बैच 2022 व 2023, एलएलबी प्रथम सेमेस्टर (मेन) बैच 2024, बीटेक सीएसई आठवां सेमेस्टर (रिअपीयर) बैच 2019-2020, बीटेक प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी आठवां सेमेस्टर (रिअपीयर/इम्प्रूवमेंट) बैच 2019-2020, बैचलर ऑफ फामेर्सी रेमेडियल बायो आठवां सेमेस्टर (मेन) बैच 2021, बैचलर ऑफ फामेर्सी रेमेडियल मैथेमेटिक्स आठवां सेमेस्टर (मेन) बैच 2020-2021, बीएससी ऑनर्स इकोनोमिक्स द्वितीय व चतुर्थ सेमेस्टर (रिअपीयर) बैच 2022, बीएससी ऑनर्स इकोनोमिक्स छठा सेमेस्टर (मेन) बैच 2022, बीएससी ऑनर्स कंप्यूटर डेटा साइंस-063 छठा सेमेस्टर (रिअपीयर) बैच 2021, बीएससी ऑनर्स कंप्यूटर डेटा साइंस-063 द्वितीय सेमेस्टर (रिअपीयर) बैच 2020-2022, बीएससी ऑनर्स कंप्यूटर डेटा साइंस-063 चतुर्थ सेमेस्टर (रिअपीयर) बैच 2022, बीएससी नॉन-मेडिकल कोर्स कोड-230 प्रथम सेमेस्टर (रिअपीयर) बैच 2022 व 2023 तथा बीए जनरल प्रथम सेमेस्टर (रिअपीयर) बैच 2022 व 2023 का परीक्षा परिणाम घोषित किया गया है। इसके अतिरिक्त फरवरी 2025 में आयोजित दूरस्थ शिक्षा की एमएएमसी तृतीय सेमेस्टर (मेन) सीरीज 2304, बीकॉम पंचम सेमेस्टर (रिअपीयर) सीरीज 2155, बीकॉम पंचम सेमेस्टर (मेन) सीरीज 2255 तथा बीकॉम पंचम सेमेस्टर गैप इयर (मेन) सीरीज 2055 व 2155 का परीक्षा परिणाम घोषित किया गया है।

13.50 ग्राम स्मैक के मामले में दूसरा आरोपी गिरफ्तार

हरियाणा वाटिका/प्रवीण वालिया
करनाल, 28 जून। बीती शाम जिला पुलिस थाना बुटाना के अंतर्गत आने वाली पुलिस चौकी नीलोखेड़ी की टीम द्वारा विश्वसनीय सूचना के आधार पर उप निरीक्षक संदीप कुमार की अध्यक्षता में बस स्टैंड नीलोखेड़ी से आरोपी मामुद्दीन पुत्र नानाद्दीन निवासी गांव खेड़ी मानसिंह,करनाल को गिरफ्तार किया गया।
इस संबंध में अनुसंधान अधिकारी ने बताया इस मामले में दिनांक 24 जून 2025 को एक आरोपी जूफान अली पुत्र वसीरद्दीन को पहले ही 13.50 ग्राम स्मैक के साथ गिरफ्तार किया जा चुका है। गहनता से पूछताछ में खुलासा हुआ कि आरोपी मामुद्दीन पुत्र नानाद्दीन से नशे की इस खेप को खरीदकर लाया था जिसे आज टीम द्वारा गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय के सम्मुख पेश कर जिला जेल भेजा गया है।

अध्यापकों को शिक्षा को रोचक बना कर शिक्षित करने के गुर बताए

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
इस्माईलाबाद, 28 जून। मनीष पपनेजा मेमोरियल पब्लिक स्कूल के ऑडिटोरियम में सीबीएसई सक्रिय शिक्षण अधिगम कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जानकारी देते हुए स्कूल की प्रधानाचार्य रचना बत्रा ने बताया कि कार्यशाला के दूसरे दिन का उद्देश्य शिक्षकों को नवीन शिक्षण विधियां और रणनीतियों से अवगत कराना रहा। इस दौरान प्रशिक्षण कार्यक्रम सक्रिय शिक्षण तकनीक पर केंद्रित रहा। जो अध्यापकों के लिए आकर्षक तथा रुचि पूर्ण शिक्षक अनुभव बनाने के लिए डिजाइन किया गया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य शिक्षा को उत्तम पद्धति द्वारा पढ़ाने के लिए प्रेरित करना रहा। कार्यक्रम में सीबीएसई के रिसोर्स पर्सन के रूप में श्वेता गोयल एवं भारती ने शिरकत की। मुख्य प्रशिक्षक ने अपनी विशेषता पर विचार साझे किए और शिक्षकों को व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया। कार्यशाला में अध्यापक गण द्वारा पिक्चर के माध्यम से, खेल के माध्यम से, कहानी, कविता, गाना गाकर विभिन्न कौशलों से अवगत करवाया गया ताकि अध्यापकगण भावी छात्रों को इन कौशलों के माध्यम से शिक्षा को रोचक बना कर उन्हें शिक्षित कर सके। इसके बाद कार्यशाला में समस्त अध्यापकों को विषय वार समूह में बांटा गया। सभी अध्यापकगण ने गतिविधियों में बढ़-चढकर भाग लिया। इस अवसर पर समस्त स्कूल स्टाफ मौजूद रहा।

आदेश अस्पताल को अंग पुनः प्राप्ति की मिली मान्यता

हरियाणा वाटिका/एकजोत
कुरुक्षेत्र, 28 जून। स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि हासिल करते हुए आदेश मैडिकल कालेज एवं अस्पताल मोहड़ी को हरियाणा सरकार द्वारा अंग पुनः प्राप्ति हेतु अधिकृत अस्पताल घोषित किया गया है। यह जानकारी देते हुए आदेश के एम.डी. डा. गुणतास सिंह गिल ने कहा कि यह मान्यता मिलने के साथ ही आदेश अस्पताल राज्य अंग एवं ऊतक प्रत्यारोपण संगठन (सॉट्टो) तथा राष्ट्रीय अंग एवं ऊतक प्रत्यारोपण संगठन (नॉट्टो) की सूची में शामिल हो गया है। यह गौरवपूर्ण उपलब्धि इसे पीजीआई रोहतक के बाद हरियाणा का दूसरा ऐसा मैडिकल कॉलेज बन गया है, जो अंग पुनः प्राप्ति में भागीदारी करेगा। इससे क्षेत्र में गंभीर रूप से बीमार रोगियों को जीवन रक्षक सहायता सुलभ हो सकेगी। आदेश के एम.डी. गुणतास सिंह गिल ने कहा कि यह सिर्फ एक मान्यता नहीं, बल्कि एक बड़ा उत्तरदायित्व है। अब आदेश अस्पताल उन परिवारों के लिए आशा की किरण बनेगा, जिन्हें प्रत्यारोपण की आवश्यकता है। हम पूरी निष्ठा, संवेदनशीलता और पारदर्शिता के साथ इस सेवा को आगे बढ़ाएंगे। उन्होंने कहा कि इस निर्णय से न सिर्फ आदेश अस्पताल को नई पहचान मिली है, बल्कि इसका सीधा लाभ हरियाणा की जनता को मिलेगा।

कुवि के शिक्षक डॉ. अनिल कुमार को मिला सर्वश्रेष्ठ पेपर अवार्ड

हरियाणा वाटिका/एकजोत
कुरुक्षेत्र, 28 जून। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट स्ट्डीज के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. अनिल कुमार को श्रीराम कॉलेज आफ कॉमर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय के सहयोग से गल्फ मेडिकल यूनिवर्सिटी, अजमान, यूएई के थुम्बे कॉलेज आफ मैनेजमेंट एंड एआई इन हेल्थकेयर में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में सर्वश्रेष्ठ पेपर अवार्ड मिला है। संस्थान के निदेशक प्रो. अनिल मित्तल ने भी डॉ. अनिल कुमार को सर्वश्रेष्ठ पेपर अवार्ड मिलने पर शुभकामनाएं दी। डॉ अनिल कुमार ने कहा कि कुलपति प्रो सोमनाथ सचदेवा के मार्गदर्शन में विश्वविद्यालय द्वारा शिक्षकों के शोध कार्य को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ अनुसंधान के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को छूने में हर संभव प्रयास किए जा रहे है जिससे विश्वविद्यालय शिक्षकों मे शोध एवं एवं अनुसंधान के क्षेत्र में नवाचार की करने की भावना पैदा हो रही है। इस अवसर पर संजय सुधीर, यूएई में भारतीय राजदूत, प्रो. सिमरित कौर, प्रिंसिपल, एसआरसीसी, दिल्ली विश्वविद्यालय, और डॉ. थुम्बे मोइदीन, चेयरमैन, थुम्बे ग्रुप, यूएई मौजूद थे।

नेशनल नारकोटिक्स हेल्पलाइन-मानस 1933 अब हरियाणा में पूरी तरह से कार्यशील

नशे के कार्य में संलिप्त के बारे में हेल्पलाइन नंबर 1933 पर दें जानकारी। डीसी डॉ विवेक भारती की युवाओं से अपील : नशे से दूर रहें, 'नशा मुक्त भारत' अभियान को सफल बनाएं

नितिन वालिया, नारनौल
महेंद्रगढ़ जिला प्रशासन ने युवाओं और नागरिकों से अपील की है कि वे नशे जैसी बुराइयों से दूर रहें और 'नशा मुक्त भारत' अभियान को सफल बनाने में अपना सक्रिय योगदान दें। नशे के कार्य में संलिप्त किसी भी व्यक्ति या समूह के बारे में जानकारी होने पर तत्काल हेल्पलाइन नंबर 1933 पर शिकायत दर्ज कराएं।
उपायुक्त डॉ. विवेक भारती ने विशेष रूप से युवाओं से नशे के दुष्प्रभावों के प्रति सचेत रहने और स्वस्थ जीवन शैली अपनाने का आग्रह किया।
उपायुक्त ने बताया कि केंद्रीय सरकार द्वारा नशीली दवाओं के दुरुपयोग के विरुद्ध शुरू की गई नेशनल नारकोटिक्स हेल्पलाइन-मानस 1933 अब हरियाणा राज्य में पूरी तरह से कार्यशील है। जिला प्रशासन ने नागरिकों से अपील की है कि वे नशे के कार्य में संलिप्त किसी भी व्यक्ति या समूह के बारे में जानकारी होने पर तत्काल हेल्पलाइन नंबर 1933 पर शिकायत दर्ज कराएं। यह नंबर नागरिकों को त्वरित और गोपनीय तरीके से शिकायत दर्ज कराने की सुविधा प्रदान करता है, जिससे नशीली दवाओं के तस्करों के खिलाफ कार्रवाई की जा सके।
इस संबंध में सामाजिक न्याय, अधिकारिता, अनुसूचित जाति एवं पिछड़े वर्ग कल्याण एवं अंत्योदय विभाग, हरियाणा द्वारा जारी एक पत्र का हवाला देते हुए जिला समाज कल्याण अधिकारी अमित शर्मा ने बताया कि इस पहल का मुख्य उद्देश्य नशे के खतरे से समाज को बचाना और विशेष रूप से युवा पीढ़ी को इसके चंगुल से मुक्त करना है।
सरकार का लक्ष्य 2047 तक भारत को 'नशा मुक्त' राष्ट्र बनाना है, और इसमें जनभागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है।
उन्होंने कहा कि नशा न केवल व्यक्ति के स्वास्थ्य और भविष्य को बर्बाद करता है, बल्कि यह परिवार और समाज पर भी नकारात्मक प्रभाव डालता है। हमें अपने युवाओं को इस दलदल में फंसने से बचाना होगा और उन्हें एक उज्जवल भविष्य की ओर प्रेरित करना होगा।
उन्होंने आगे कहा कि हम सभी की जिम्मेदारी है कि हम अपने आस-पास नशे के खिलाफ एक मजबूत दीवार खड़ी करें। हेल्पलाइन नंबर 1933 इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, और मैं सभी नागरिकों से इसका उपयोग करने और इस लड़ाई में सहयोग करने का आग्रह करता हूं।
उन्होंने बताया कि जिला प्रशासन ने सभी संबंधित विभागों को भी कहा है कि वे हेल्पलाइन नंबर 1933 के बारे में व्यापक प्रचार-प्रसार करें ताकि अधिक से अधिक लोग इस सेवा के बारे में जागरूक हों और नशीली दवाओं की तस्करी की रिपोर्ट कर सकें।

हनीट्रैप में फंसाकर हिसार के युवक की कर दी हत्या

-बिहार की युवती ने दोस्ती कर 5 लाख लिए, वापस मांगने पर पति-भाइयों संग मिलकर दिया वारदात को अंजाम

हरियाणा वाटिका/सुरेंद्र सोढी
हिसार, 28 जून। गुरूग्राम की एक कंपनी में काम करने वाले हिसार के नारनौंद के गांव कापड़ो निवासी 32 वर्षीय प्रवीण टंडन की बिहार के मुंगेर में चाकू मारकर हत्या कर दी गई। यह मामला हनीट्रेप से जुड़ा हुआ बताया जा रहा है। इस मामले में पुलिस ने कार्रवाई करते हुए प्रवीण के हत्यारोपी सुमित को बिहार की जुमई पुलिस के सहयोग से गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इस मामले में अन्य हत्यारोपियों की गिरफ्तारी के प्रयास तेज कर दिए हैं।
मामले अनुसार बिहार के जमुई की रहने वाली प्रिया भारती नाम की युवती की प्रवीण के साथ सोशल मीडिया पर दोस्ती हुई थी। प्रिया ने पैसे मांगे तो प्रवीण ने 5 लाख रुपए दे दिए। प्रवीण ने कुछ समय बाद पैसे वापस मांगे तो प्रिया ने देने से मना कर दिया। इस पर प्रवीण ने प्रिया को उसकी अश्लील तस्वीरें वायरल करने की धमकी दी। इसके बाद प्रिया ने पति राजेंद्र शर्मा, देवर धर्मेंद्र शर्मा, भाई पीयूष कुमार और ममेरे भाई सुमित कुमार के साथ मिलकर 2 जनवरी को मुंगेर में प्रवीण की हत्या कर दी।
गौरतलब है कि प्रवीण 30 दिसंबर 2024 को अपने घर नारनौंद के कापडो गांव से गुरुग्राम गया था। इसके बाद वह नहीं लौटा। 17 जनवरी को हिसार के नारनौंद थाने में प्रवीण की गुमशुदगी का मामला दर्ज किया गया था। 26 जून को हरियाणा एसटीएफ और जमुई पुलिस ने सुमित कुमार को गिरफ्तार कर लिया। तब खुलासा हुआ कि प्रवीण की हत्या 2 जनवरी को हनीट्रैप को लेकर की गई थी। सुमित ने पुलिस पूछताछ में बताया कि 2 जनवरी को हम स्कॉर्पियो से मुंगेर पहुंचे। स्कॉर्पियो राजेंद्र उर्फ राजू की थी। यहां पहले से प्रिया ने प्रवीण को बुला लिया था। उसने उसे कासिम बाजार थाना क्षेत्र के एक कमरे में रखा था। वहां पहुंचने के बाद हम पांचों ने मिलकर प्रवीण की हत्या की और जेआरएम कॉलेज के पीछे उसका शव फेंक दिया। इस मामले में 8 जनवरी को मुंगेर के कासिम बाजार थाने में केस दर्ज किया गया था। प्रिया ने 8 साल पहले राजेंद्र शर्मा उर्फ राजू से लव मैरिज की थी। इन दोनों को एक 5 साल का बेटा है। जमुई से 3 किलोमीटर दूर इनदपे गांव स्थित अपने मायके में वह अपने पति के साथ रहती थी। घर पर प्रिया की मां नहीं थी।
सिर्फ बूढ़ी दादी थी। उसने बताया कि मुझे नहीं पता कि वो कहां है। पुलिस आई थी। उसने क्या किया है मुझे जानकारी नहीं है। यहां वो अपने पति के साथ ही रहती थी। दोनों क्या करते थे मुझे नहीं पता। प्रिया का ससुराल जमुई शहर के बोधवन तालाब के पास है। इलेक्ट्रॉनिक की दुकान चलाने वाली उसकी सास ने पुलिस को बताया कि प्रिया मायके में रहती है। मायके में होगी। वो हमेशा मायके कहकर ही जाती थी। बेटा भी हमेशा पत्नी के साथ मायके में ही रहता था। बेटी की वजह से हम भी परेशान थे, इसलिए हमने घर से निकाल दिया था। हमने उसकी शादी नहीं की है। उसने खुद लव मैरिज की थी।

कंपनी में काम करता था प्रवीण
डीएसपी रविंद्र सांगवान ने बताया कि नारनौंद थाने में प्रवीण की गुमशुदगी का मामला दर्ज किया गया था। जब उसका सुराग नहीं लगा तो स्क्क सर के आदेश पर स्पेशल टास्क फोर्स को जिम्मेदारी दी गई। प्रवीण गुरुग्राम की एक कंपनी में काम करता था। जांच में प्रिया भारती नाम की लडकी का नाम सामने आया। इनका 5 लाख रुपए का लेन-देन था। प्रवीण ने गुरुग्राम से प्रिया को पैसे ट्रांसफर किए थे।

सीसीटीवी और मोबाइल लोकेशन से बिहार पहुंचे
डीएसपी रविंद्र सांगवान ने बताया कि सीसीटीवी और मोबाइल की लोकेशन से ट्रेस करते हुए हम बिहार पहुंचे। प्रिया ने बिहार में पैसे देने के लिए प्रवीण को जमालपुर में बुलाया। 2 जनवरी को वहां उसकी हत्या कर दी। 26 जनवरी को हमने प्रिया की बुआ के लडके सुमित को गिरफ्तार कर लिया। प्रिया और दूसरे आरोपियों का फोन नंबर बंद आ रहा है। प्रवीण का बिहार में ही अंतिम संस्कार कर दिया गया था।

ऐसे झांसा देकर बुलाया था मुंगेर
गिरफ्तार किए गए हत्यारोपी सुमित ने पुलिस पूछताछ में बताया कि मेरी ममेरी बहन प्रिया भारती के प्रवीण के साथ अवैध संबंध थे। दोस्ती होने के बाद प्रिया उससे मिलने हरियाणा गई थी। प्रवीण को अपने जाल में फंसाकर प्रिया ने प्रवीण से 5 लाख रुपए ले लिए। अब प्रवीण पैसे वापस मांग रहा था। वो कह रहा था कि पैसे नहीं दिए तो अश्लील फोटो वीडियो वायरल कर दूंगा। इसके बाद हमने योजना बनाई और प्रवीण को पैसे लौटाने के बहाने मुंगेर बुलाया।

महाराणा प्रताप पब्लिक स्कूल ने नवाचारी आंतरिक प्रशिक्षण सत्र का किया आयोजन

हरियाणा वाटिका/एकजोत
कुरुक्षेत्र, 28 जून। महाराणा प्रताप पब्लिक स्कूल, कुरुक्षेत्र ने एक्टिव लर्निंग टॉपिकपर एक विशेष आंतरिक प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया। इस सत्र का सफल नेतृत्व मीनाक्षी मलिक और पूजा कक्कड़ ने किया, जिन्होंने शिक्षकों को सक्रिय अधिगम के महत्व और तरीकों से अवगत कराया। मीनाक्षी मलिक ने सक्रिय अधिगम को अपनाने के लिए उपयोगी रणनीतियां सांझा कीं, जबकि श्रीमती पूजा कक्कड़ ने इसके पीछे के वैज्ञानिक आधार को विस्तार से समझाया। इस सत्र में 69 से अधिक शिक्षकों ने भाग लिया और सक्रिय रूप से चर्चा में शामिल हुए। विद्यालय की प्रधानाचार्या प्रतिमा शर्मा ने कहा कि ऐसे सत्र शिक्षा के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और स्कूल के लिए नए अवसरों की शुरूआत करेंगे।
उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह प्रशिक्षण सत्र स्कूल में शिक्षण गुणवत्ता में सुधार और नवाचारी शिक्षण पद्धतियों को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।

कूड़े का डंप पॉइंट बनाने से निजात दिलाने की मेयर से गुहार

शहर की शहीद उधम सिंह व शहीद मदन लाल ढीगंडा मार्केट एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने सौंपा ज्ञापन

हरियाणा वाटिका/सुरेंद्र सोढी
हिसार, 28 जून। शहीद उधम सिंह व शहीद मदन लाल ढीगंडा मार्केट एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने मेयर प्रवीण पोपली को एक ज्ञापन सौंपा। इस ज्ञापन में कूड़े का डंप प्वाइंट बनाने से निजात दिलाने की मांग की गई है। इस मौके पर प्रधान प्रवीण हिन्दू के प्रतिनिधित्व में राकेश ठकराल, अनिल जैन, दर्शन खुराना, नागेंद्र दलाल व जितेन्द्र सोनी आदि मार्केट के पैंडिंग कार्यों को लेकर हिसार नगर निगम मेयर प्रवीण पोपली से मिले और उन्हें समस्याओं संबंधी लिखित पत्र सौंपा। मेयर प्रवीण पोपली ने नगर निगम ज्वाईंट कमीश्नर प्रीतपाल को बुलाकर मार्केट की समस्याओं को दूर करने के निर्देश दिए। एसोसिएशन की मुख्य मांगों में खाली मल्टीप्लेक्स प्लाट में कई मार्केटों का कूड़ा निगम सफाई कर्मचारीयों द्वारा इका कर मार्केट के बीच बनाए गए डंपिंग प्वाइंट को यहां से हटाने व मार्केट में जो सफाई एक सप्ताह में सिर्फ एक बार होती है इसे प्रतिदिन सुचारू किया करने व पूरी मार्केट में कई वर्षो से फुटपाथ नहीं के बराबर हैं इसे बनाए जाने व एक कबाड़ी द्वारा ग्राउंड में काफी गंदगी फैलाई जा रही है और वह नशे का कारोबार भी करता है और उसने मार्केट की काफी जगह रोक रखी है, उसे वहां से हटाने संबंधी मांगें शामिल थीं। प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने कहा कि ग्रीन स्क्वेयर मार्केट शहर के मध्य स्थित मुख्य मार्केट है व टीम स्वच्छता अभियान व मार्केट ऐसोसिएशन के सदस्यों ने मिलकर इस मार्केट को एकदम स्वच्छ मार्केट बनाया हुआ था, लेकिन नगर निगम हिसार कि लापरवाही से मार्केट को डंपिंग पॉइंट बनाकर इसकी स्वच्छता को तहस-नहस कर दिया गया है। मार्केट की इन समस्याओं को लेकर ऐसोसिएशन की मेयर से दूसरी मीटींग थी। प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने उम्मीद व्यक्त की कि मेयर जल्द ही उनकी समस्या का समाधान करेंगे।

प्रतिरक्षण सप्ताह के तहत 1315 बच्चों व 192 गर्भवती महिलाओं को लगाए गए टीके

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
नारनौल, 28 जून। जिला में 23 से 28 जून तक चलाए गए स्पेशल प्रतिरक्षण सप्ताह के तहत लगभग 1315 बच्चों व 192 गर्भवती महिलाओं को टीके लगाए गए।
यह जानकारी देते हुए सिविल सर्जन डा. अशोक कुमार ने बताया कि यदि किसी कारण से कोई बच्चा बिना टीकाकरण के वंचित रह गया हो तो वो अपने बच्चा का नजदीकी स्वास्थ्य संस्था पर कार्यरत एएनएम से मिलकर टीकाकरण करवा सकते हैं।
उन्होंने बताया कि इसके अलावा जिले में 16 से 31 जूलाई तक दस्त रोको अभियान चलाया जा रहा है। जिसका लक्ष्य -ह्लदस्तों की वजह से जीरों मृत्यु दर प्राप्त करना ह्ल उन्होंने बताया कि गावों में आशा वर्कर 5 साल तक के सभी बच्चों को ओआरएस के पैकेट तथा जिंक की गोलियां घर-घर जाकर वितरित की जा रही है व ओआरएस का घोल बनाने की विधि बताई जा रही है।
सिविल सर्जन ने आमजन से अनुरोध किया है कि बच्चें को दस्त होने पर अपने नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र में सम्पर्क करें और बच्चें को ओआरएस का गोल व जिंक की गोली अवश्य दें।

पारदर्शिता और व्यवस्था सरल की बदौलत आमजन में सन्तुष्टिभाव: डॉ अरविंद शर्मा

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
गोहाना, 28 जून। सहकारिता, कारागार, निर्वाचन, विरासत व पर्यटन मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार द्वारा बीते 11 साल में पारदर्शिता और व्यवस्था को सरल बनाया गया है, इससे आमजन को सरकारी कार्यालयों के चक्कर नहीं काटने पड़ते। उन्होंने कहा कि सैंकड़ों योजनाओं का घर बैठे लाभ उठाने की व्यवस्था की बदौलत आज आमजन में भाजपा सरकार के प्रति संतुष्टि का भाव है।
शनिवार को सहकारिता मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने सिंचाई विश्राम गृह में नियमित साप्ताहिक दरबार लगाते हुए क्षेत्रवासियों से जनसंवाद किया। विभिन्न गांवों और शहरी क्षेत्र से आए सैंकड़ो लोगों से मुलाकात करते हुए उनका कुशलक्षेम जाना व इसके उपरांत उनकी समस्याएं सुनी। कैबिनेट मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि जब भी कोई व्यक्ति अपनी समस्या लेकर सरकारी कार्यालय में जाए तो उसकी बात को प्राथमिकता से सुनते हुए उचित कार्रवाई की जाए। उन्होंने कहा कि अधिकारी आमजन के साथ विनम्र व्यवहार करते हुए उनकी समस्या का मौके पर ही निपटान करेंगे तो उनकी परेशानियां दूर हो जाएंगी। कैबिनेट मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने कहा कि बीते 11 साल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व की केंद्र सरकार व मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व की प्रदेश सरकार द्वारा गरीब, वंचित व जरूरतमंद के उत्थान को लेकर प्रभावी कदम उठाए गए हैं। इससे आमजन में भाजपा सरकार के प्रति विश्वास बढ़ा है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार निरन्तर आमजन, किसान, युवा, महिला, गरीब कल्याण की दिशा में काम कर रही है। सरकारी नौकरियों में पारदर्शिता की बदौलत आज युवाओं को योग्यता के आधार पर अवसर मिल रहे हैं, जिससे उनमें प्रतियोगी भावना बढ़ी है। यही नहीं युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए केंद्र व प्रदेश सरकार की योजनाओं का भी लाभ उठाकर युवा अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहे हैं।

गीता कन्या स्कूल की पूर्व छात्रा दीपिका शर्मा का फेडरल बैंक में चयन, मिलेगा 8 लाख वार्षिक

हरियाणा वाटिका/एकजोत
कुरुक्षेत्र, 28 जून। गीता कन्या सीनियर सेकेंडरी स्कूल, कुरुक्षेत्र की पूर्व छात्रा और कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की बी.कॉम. अंतिम वर्ष की छात्रा दीपिका शर्मा ने अपनी मेहनत और लगन से एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। दीपिका का चयन प्रतिष्ठित फेडरल बैंक में 8 लाख वार्षिक पैकेज पर हुआ है, जो विद्यालय एवं विश्वविद्यालय दोनों के लिए गर्व की बात है। दीपिका ने अपनी इस सफलता का श्रेय अपने विद्यालय और कॉलेज के शिक्षकों तथा माता-पिता के मार्गदर्शन को दिया है। उन्होंने कहा कि उनके जीवन के हर मोड़ पर शिक्षकों और परिवार का सहयोग उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहा। इस गौरवपूर्ण अवसर पर विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष राजेंद्र सिंह कलेर, उपाध्यक्ष डॉ जितेंद्र जांगड़ा, प्रबंधक बलबीर प्रकाश, कोषाध्यक्ष सुरेश सैनी, शिक्षाविद डॉ हरि प्रकाश शर्मा, सदस्य डॉ राजेश अग्रवाल एवं सौरभ त्रिखा, महिला प्रतिनिधि अंजलि शर्मा, प्रांत प्रतिनिधि संजय चौधरी, प्राचार्या सुमन बाला तथा सभी अध्यापिकाओं ने दीपिका को इस सफलता पर हार्दिक बधाई दी और उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि दीपिका की सफलता आज की युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा है। विद्यालय परिवार को दीपिका पर गर्व है और सभी ने आशा जताई कि वह भविष्य में और ऊँचाइयों को छुएगी।

एलएनजेपी अस्पताल में रक्तदान शिविर आज

हरियाणा वाटिका/एकजोत
कुरुक्षेत्र, 28 जून। ग्रीष्म ऋतु में रक्त के अभाव को देखते हुए आज रविवार को प्रातः 9 बजे से 11 बजे के मध्य लोकनायक जयप्रकाश अस्पताल के रक्त कोष में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर आयोजित किया जाएगा जिसमें कोई भी स्वस्थ व्यक्ति रक्तदान कर सकता है। यह जानकारी शिविर संयोजक डॉ. अशोक कुमार वर्मा ने देते हुए बताया कि ग्रीष्म ऋतु में रक्त का अभाव हो जाता है। उन्होंने युवाओं से आग्रह किया कि रक्तदान के लिए आगे आकर समाज के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वहन करें।

छात्राओं ने ली ग्राउंड सेल्फ डिफेंस ट्रेनिंग

हरियाणा वाटिका/एकजोत
कुरुक्षेत्र, 28 जून। प्रेरणा वृद्ध आश्रम में आयोजित 11 दिवसीय निशुल्क सेल्फ डिफेंस ट्रेनिंग कैंप के 9वें दिन ग्राउंड सेल्फ डिफेंस तकनीक का प्रशिक्षण दिया गया। श्रीकृष्ण मार्शल आर्टस संस्थान के मुख्य प्रशिक्षक राजेश शर्मा एडवोकेट ने जानकारी देते हुए बताया की असामाजिक तत्वों द्वारा जमीन पर गिरा कर हमला करने की स्थिति में बचाव की तकनीक का प्रशिक्षण दिया गया। यदि असामाजिक तत्वों द्वारा महिला को जबरन नीचे गिराकर गला दबाने या दुष्कर्म करने का प्रयास किया जाता है तो ग्राउंड सेल्फ डिफेंस तकनीक का प्रयोग करके न केवल अपना बचाव किया जा सकता है बल्कि विरोधी को धराशायी भी किया जा सकता है। कैंप में छात्राओं को गुड टच और बैड टच के बारे में जानकारी दी गई और शरीर के नाजुक अंगों के बारे में जानकारी दी गई जहां पर प्रहार करके विरोधी को पस्त किया जा सकता है। प्रेरणा वृद्ध आश्रम के संस्थापक डॉ जय भगवान सिंगला ने कहा कि आज समाज में दुष्कर्म की घटनाएं बढ़ रही हैं आए दिन मीडिया में इस तरह की खबरें पढ़ने को मिलती हैं। इसलिए बेटियों को ग्राउंड सेल्फ डिफेंस ट्रेनिंग अनिवार्य रूप से मिलनी चाहिए। जिसके बाद बेटियां निर्भय हो जाएंगी और भारत सरकार के महिला सशक्तिकरण अभियान को मजबूत करने में अहम भूमिका निभाएंगी।

कुरुक्षेत्र जिला बैडमिंटन चैंपियनशिप 5 को

हरियाणा वाटिका/एकजोत
कुरुक्षेत्र, 28 जून। जिला कुरुक्षेत्र बैडमिंटन संघ द्वारा कुरुक्षेत्र जिला बैडमिंटन चैंपियनशिप-2025 का आयोजन वायर विंग्स अकैडमी, सैक्टर-7 में 5 और 6 जुलाई 2025 को किया जाएगा। प्रतियोगिता में विभिन्न आयु वर्ग एकल, युगल, मिश्रित टीमों के लिए मैच खेले जाएंगे। सभी खिलाड़ियों को हरियाणा म्युनिसिपल कॉरपोरेशन या कमेटी द्वारा प्रमाणित अपना आयु प्रमाण पत्र चैंपियनशिप प्रारंभ होने से पहले जमा करवाना होगा। प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु सभी आयु वर्गों के लिए अंतिम कट ऑफ 1 जनवरी 2017, 1 जनवरी 2015, 1 जनवरी 2013, 1 जनवरी 2011, 1 जनवरी 2009, 1 जनवरी 2007 या उसके बाद होनी चाहिए।

कांग्रेस ऑब्जर्वर जगदीश जांगिड़ का हिसार दौरा संपन्न

जिला अध्यक्ष के नाम पर व्यापक विचार-विमर्श, विभिन्न प्रकोष्ठों से राय और व्यक्तिगत आवेदन भी लिए गए

हरियाणा वाटिका/सुरेंद्र सोढी
हिसार, 28 जून। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष एवं अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के ऑब्जर्वर जगदीश जांगिड़ का हिसार जिले का दूसरा चरण का दौरा शनिवार को खत्म हुआ। कांग्रेस पर्यवेक्षक जगदीश जांगिड़ ने बताया कि यह दौरा संगठन को और अधिक सुदृढ़ करने तथा स्थानीय नेताओं और कार्यकताओं के साथ सीधा संवाद स्थापित करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था। इस अवसर पर हरियाणा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के ऑब्जर्वर अमित सिहाग, जयपाल सिंह लाली पंकज चौहान भी मौजूद रहे। शनिवार की सुबह शहर के कांग्रेस भवन पहुंचे पर्यवेक्षक जांगिड़ ने सबसे पहले कांग्रेस विधायकों एवं विधानसभा में उम्मीदवार रहे कांग्रेसी साथियों से मुलाकात की। इस बैठक में उकलाना से विधायक नरेश सेलवाल, आदमपुर से विधायक चंद्रप्रकाश जांगड़ा, नारनौंद से विधायक जस्सी पेटवाड़ एवं नलवा से प्रत्याशी अनिल मान शामिल रहे। बैठक के दौरान, उन्होंने जिला अध्यक्ष के नाम के लिए गहन विचार-विमर्श किया, जो संगठनात्मक ढांचे को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

इसके बाद जांगिड़ ने यूथ कांग्रेस एवं एनएसयूआई (हस्ढ्ढ) के जिला पदाधिकारियों के साथ संयुक्त रूप से एक बैठक की। इस दौरान उन्होंने युवा कार्यकताओं से जिला अध्यक्ष पद के लिए उनकी राय ली, ताकि संगठन में युवा ऊर्जा और विचारों को भी समुचित स्थान मिल सके। अपने दौरे के अगले चरण में जांगिड़ ने प्रबुद्धजन कांग्रेस एवं कांग्रेस एडवोकेट सेल के पदाधिकारियों के साथ भी अलग-अलग बैठकें कीं। इन बैठकों में उन्होंने जिला अध्यक्ष के चयन को लेकर इन अनुभवी और विशिष्ट प्रकोष्ठों से भी महत्वपूर्ण सलाह ली, ताकि एक सर्वसम्मति से मजबूत नेतृत्व का चुनाव हो सके। दौरे के अंतिम पड़ाव में जांगिड़ ने कांग्रेस के वरिष्ठ साथियों से एक-एक करके व्यक्तिगत रूप से राय ली। इस दौरान, जिला अध्यक्ष पद के लिए आवेदन भी स्वीकार किए गए, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि सभी इच्छुक और योग्य उम्मीदवारों के नाम पर विचार हो। जांगिड़ ने बैठक के दौरान कहा कि हमारा लक्ष्य जमीन से जुड़े कार्यकताओं की आवाज सुनना और उनकी समस्याओं का समाधान करना है। कांग्रेस पार्टी सभी वर्गों को साथ लेकर चलने में विश्वास रखती है और हम संगठन को मजबूत बनाने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं। दौरे के समापन पर जिला अध्यक्ष के चुनाव के लिए सर्वसम्मति से एक पैनल तैयार किया गया है, जिसे शीघ्र ही अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को भेजा जाएगा।

श्री कृष्ण आयुष विश्वविद्यालय में बच्चों को पिलाया स्वर्णप्राशन

हरियाणा वाटिका/एकजोत
कुरुक्षेत्र, 28 जून। श्री कृष्ण आयुष विश्वविद्यालय के कौमारभृत्य विभाग द्वारा आयुर्वेदिक अस्पताल में शनिवार को स्वर्णप्राशन संस्कार शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 400 से अधिक बच्चों को स्वर्णप्राशन की बूंदें पिलाई गई। स्वर्णप्राशन शिविर का उद्देश्य बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता, बुद्धि, स्मरण शक्ति एवं संपूर्ण विकास को बढ़ाना है। कौमारभृत्य विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर वैद्य सुधीर मलिक ने बच्चों के अभिभावकों को स्वर्णप्राशन के लाभों के बारे में जागरूक किया और बताया कि हर पुष्य नक्षत्र के दिन यह संस्कार बच्चों के लिए अत्यंत लाभकारी माना गया है। स्वर्णप्राशन बच्चों की प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाता है। स्मरण शक्ति व बुद्धि विकास में सहायता करता है। बार-बार बीमार पड़ने वाले बच्चों को स्वास्थ्य लाभ देता है। कौमारभृत्य विभाग के चेयरमैन प्रो.वैद्य शंभू दयाल शर्मा ने बताया कि स्वर्ण प्राशन के सेवन से बच्चों का शारीरिक एवं मानसिक दोनों तरह से विकास होता है। इसके साथ ही बच्चों में रोग-प्रतिरोधक क्षमता यानी बीमारियों से लड़ने की शक्ति बढ़ती है, जिसकी वजह से बच्चों में रोग होने की संभावना कम होती है। स्वर्णप्राशन एक आयुर्वेदिक विधि है जिसमें शुद्ध स्वर्ण भस्म, घृत (घी), मधु और कुछ औषधियों के मिश्रण को विशेष विधि से तैयार कर बच्चों को दिया जाता है। यह परंपरा वैदिक काल से चली आ रही है और बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाने में कारगर मानी जाती है।

राधास्वामी सत्संग गृह से ताला तोड़कर हजारों का सामान चोरी, मामला दर्ज

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
सतनाली, 28 जून। कस्बे के नावां रोड पर राधास्वामी सत्संग गृह में अज्ञात चोरों द्वारा ताला तोड़कर चोरी की वारदात को अंजाम देते हुए हजारों का सामान चोरी किए जाने का मामला प्रकाश में आया है। पुलिस ने शिकायत के आधार पर मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। शिकायत में

रोशन लाल पुत्र कुरडाराम गांव बडराई जिला चरखी दादरी ने बताया कि वह सतनाली मे नए बस अड्डे के पास स्थाई (रिहायशी मकान) बना कर रहा रहा है। वह तथा उसका परिवार सतनाली स्थित राधास्वामी सत्संग गृह का संचालन व रख रखाव बिना किसी परिश्रमिक के करते है। गत 26 मार्च की कैलास सेवादार जो सत्संग गृह में चौकीदार के रुप में रहता था वह डेरा ब्यास गया हुआ था तथा कृष्ण शाम 8 बजे लाईटे जला कर आया था। दिनांक 27 जून को सुबह 6 बजे वह लाईटे बंद करने के लिए गया तो वहां एक मकान का ताला टूटा हुआ पाया गया व सामान बिखरा पडा था। इसकी सूचना कृष्ण कुमार ने उसे फोन पर दी जिसके बाद वह तथा उसकी पत्नी प्रमिला देवी मौके पर पहुंचे। इस दौरान वहां लगी पानी के लिए लगी बिजली की मोटर, एक सिलिंग फैन व यूएसबी प्लेयर जो भजन कीर्तन की साऊंड बजाने के काम में लिया जाता था वह गायब मिले। इसकी सूचना पुलिस को दी गई। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांचबकी तथा शिकायत के आधार पर मामला दर्ज कर अज्ञात चोरों की तलाश शुरू कर दी है।

सड़क हादसे में बाइक सवार व्यक्ति की मौत, मामला दर्ज

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
सतनाली, 28 जून। सतनाली - नावां सड़क मार्ग पर हुए सड़क हादसे में बाइक सवार व्यक्ति की मौत हो गई। मृतक की पहचान कनीना क्षेत्र के गांव खेड़ी निवासी 42 वर्षीय नरेश के रूप में हुई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार शुक्रवार रात्रि नरेश अपनी बाइक लेकर कार्यवश जा रहा था। इस दौरान जब वह सतनाली और नावां के बीच पहुंचा तो अज्ञात वाहन ने उसकी बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में नरेश गंभीर रूप से घायल हो गया। आसपास के लोगों ने हादसे की सूचना पुलिस को दी जिसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची तथा घायल नरेश को सतनाली पीएचसी में पहुंचाया जहां से उसे हायर सेंटर रेफर कर दिया गया। हायर सेंटर ले जाते समय नरेश ने रास्ते में ही दम तोड़ दिया। पुलिस ने मृतक का पोस्टमार्टम महेंद्रगढ़ के सरकारी अस्पताल में करवा कर शव परिजनों को सौंप दिया। पुलिस ने मृतक की पत्नी की शिकायत के आधार पर अज्ञात वाहन चालक के विरुद्ध विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज कर हादसे की जांच शुरू कर दी है।

बेबी शेखावत जिला कष्ट निवारण समिति की सदस्य नियुक्त

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
सतनाली, 28 जून। गत दिवस सरकार द्वारा जारी की गई जिला कष्ट निवारण समिति के सदस्यों की सूची में सतनाली भाजपा मंडल अध्यक्ष बेबी शेखावत को भी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिली है तथा उन्हें जिला लोक संपर्क एवं शिकायत निवारण समिति (ग्रीवेंस कमेटी) का सदस्य नियुक्त किया गया है। इस नियुक्ति के लिए बेबी शेखावत ने मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, महेन्द्रगढ़ विधायक कंवर सिंह यादव एवं पार्टी के शीर्ष नेतृत्व का आभार व्यक्त किया है

तथा कहा कि उन्हें जो जिम्मेदारी सौंपी गई है वे उसका बखूबी निर्वहन करेंगी तथा आमजन की समस्याओं की पैरवी करेंगी। उन्होंने कहा कि सरकार प्रत्येक वर्ग की भलाई के लिए कार्य कर रही है तथा आमजन की छोटी से छोटी समस्या के समाधान के लिए प्रयासरत है। जिला लोक संपर्क एवं शिकायत निवारण समिति में आने वाली समस्याओं के उचित समाधान के लिए वे प्रयासरत रहेगी। उन्होंने भरोसा दिलाया कि वे इस जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा व ईमानदारी से निभाते हुए आमजन की समस्याओं को प्राथमिकता से सरकार तक पहुंचाकर उनका समाधान करवाने का प्रयास करेगी। उनकी नियुक्ति पर सतनाली इलाके के भाजपा कार्यकताओं ने भी खुशी जताई है तथा बेबी शेखावत को बधाई दी है।

सावा एस बी आई के एस सी/एस टी वर्ग की समस्याओं को गंभीरता से उठाएगा

हरियाणा वाटिका/प्रवीन कुमार
चंडीगढ़, 28 जून। बैंकिंग क्षेत्र में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के मुद्दों को उजागर करने और इन वर्ग से जुड़े कर्मियों की दिक्कतों और समस्याओं को उच्च अधिकारियों के समक्ष रखने व हल करवाने हेतु एस बी आई-सावा संस्था का गठन किया गया है। जिसको लेकर संस्था के पदाधिकारियों ने अपने विचार सांझा किए। सावा के प्रेसिडेंट प्रेम सिंह की अध्यक्षता में आयोजित इस बैठक में एस सी-एस टी वर्ग से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई।
मीडिया से बातचीत करते हुए एस सी एस टी एस बी आई आल एम्प्लाइज वेलफेयर एसोसिएशन-सावा के जनरल सेक्रेटरी बृज लाल ने बताया कि इस संस्था का गठन एस सी एस टी एम्प्लाइज को दरपेश आ रही समस्याओं को हल करवाना और उन्हें मोरल सपोर्ट प्रदान करना है।

हकृवि में विभिन्न कोर्सों में दाखिले के लिए प्रवेश परीक्षा शांतिपूर्वक संपन्न

कुलसचिव ने किया परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण

हरियाणा वाटिका/सुरेंद्र सोढी
हिसार, 28 जून। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में शनिवार को विभिन्न स्नातक व स्नात्तकोतर कोर्सिज के लिए आयोजित प्रवेश परीक्षा शांतिपूर्वक व व्यवस्थित ढंग से संपन्न हुई। इसके लिए विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा सभी परीक्षा केन्द्रों पर पुख्ता प्रबंध किए गए थे।
विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ पवन कुमार ने परीक्षा केंद्रों का दौरा किया और उम्मीदवारों की सुविधा तथा परीक्षा के सुचारू संचालन के लिए की गई व्यवस्थाओं का भी जायजा लिया।
आज जिन कोर्सिज के लिए प्रवेश परीक्षा हुई, उनमें बीएससी ऑनर्स एग्रीकल्चर चार वर्षीय कोर्स, बीएससी आनर्स एग्री-

बिजनेस मैनेजमेंट, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में बायो-केमिस्ट्री, केमिस्ट्री, इनवायरमेंटल साइंस, फूड साइंस एंड टेक्नोलॉजी, मैथेमेटिक्स, माइक्रो-बायोलॉजी, फिजिक्स, प्लांट फिजियोलोजी, सोशियोलॉजी, स्टेटिसटिक्स व जूलॉजी, कॉलेज ऑफ बायो-टेक्नोलॉजी में एग्रीकल्चरल बायोटेक्नोलॉजी, बायोइंफोरमेटिक्स, मोलेक्यूलर बायोलॉजी एंड बायो-टेक्नोलॉजी, बायो नैनोटेक्नोलोजी व इंडस्ट्रीयल बायोटेक्नोलोजी कोर्सिज शामिल है। प्रवेश परीक्षा के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय सहित हिसार शहर में 17 परीक्षा केंद्र बनाए गए थे। उपरोक्त पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए 9094 उम्मीदवारों ने आवेदन किए थे जिसमें 8441 उम्मीदवार प्रवेश परीक्षा के लिए योग्य पाए गए। सभी परीक्षा केंद्रों में कुल 6639 परीक्षर्थियों ने परीक्षा दी। प्रवेश परीक्षा के सफल आयोजन के लिए विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से विशेष निरीक्षण दलों का गठन किया गया था। परीक्षा के दौरान प्रत्येक उम्मीदवार की फोटोग्राफी भी की गई। इस परीक्षा में उम्मीदवारों की कुल 78.64 प्रतिशत उपस्थिति दर्ज की गई। उपरोक्त पाठ्यक्रमों में दाखिला संबंधी नवीनतम जानकारियों के लिए विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर नियमित रूप से चेक करते रहें।

पहले हुआ टीबी गर्भधारण में समस्या पैदा कर सकता हैं? - विशेषज्ञ

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
गुडगाँव, 28 जून। डॉ. रश्मि अग्रवाल, फर्टिलिटी स्पेशलिस्ट, नोवा आईवीएफ फर्टिलिटी, गुरगाव, टीबी (ट्यूबरकुलोसिस) की बिमारी का इलाज संभव हैं लेकिन समय रहते इलाज किया जाए तो मरीज जल्दी ठीक हो सकता हैं। खासकर जननांग या पेल्विक टीबी के कारण आगे चलकर प्रजनन क्षमता पर बुरा असर पड सकता हैं। इसलिए जरूरी है कि टीबी का सही समय पर इलाज हो और फर्टिलिटी (उर्वरता) का भी ध्यान रखा जाए।
टीबी क्या है और यह कैसे फैलता है?
टीबी एक संक्रामक रोग है, जो ट८ूढ्ढष्टशी४ ३४ढ्ढ१४ष्टह्वद्य२२ नामक बैक्टीरिया से होता है। यह मुख्य रूप से फेफड़ों को प्रभावित करता है और संक्रमित व्यक्ति के खांसने या छींकने से हवा के माध्यम से फैलता है। इसके सामान्य लक्षणों में लगातार खांसी, वजन घटना, बुखार, रात को पसीना आना और थकान शामिल हैं। कुछ मामलों में टीबी के कोई लक्षण दिखाई नही देते हैं। टीबी आमतौर पर फेफड़ों को प्रभावित करती है, लेकिन यह शरीर के दूसरे हिस्सों जैसे कि महिलाओं की फैलोपियन ट्यूब्स, गर्भाशय, और पुरुषों के अंडकोष को भी नुकसान पहुंचा सकती है। इससे महिला और पुरुष दोनों को गर्भधारण में दिक्कत हो सकती है। कई बार टीबी के इलाज के बाद भी शरीर में जो निशान रह जाते हैं, वे गर्भधारण में अड़चन बन सकते हैं।
टीबी और बांझपन का संबंध
जब टीबी महिलाओं के प्रजनन अंगों को प्रभावित करती है, तो इसे पेल्विक या जननांग टीबी कहा जाता है। यह फैलोपियन ट्यूब्स, गर्भाशय की परत (एंडोमेट्रियम) और अंडाशय को नुकसान पहुंचा सकती है। इससे अंडाणु का ठीक से चलना या गर्भ में टिकना मुश्किल हो सकता है और गर्भधारण नहीं हो पाता। पुरुषों में यह बीमारी अंडकोष या प्रोस्टेट को प्रभावित कर सकती है, जिससे शुक्राणुओं की संख्या कम हो सकती है या उनके रास्ते में रुकावट आ सकती है। भले ही टीबी का इलाज पहले हो चुका हो, लेकिन अंगों को हुआ नुकसान बना रह सकता है और गर्भधारण में परेशानी आ सकती है।
टीबी से संबंधित बांझपन से बचाव कैसे करें?
अगर पहले टीबी हो चुकी है, खासकर पेट या पेल्विक हिस्से में, और गर्भधारण में दिक्कत हो रही है, तो फर्टिलिटी विशेषज्ञ से सलाह जरूर लें।
समय पर जांच और पूरा इलाज जरूरी है।
अगर टीबी से प्रजनन अंगों को नुकसान हुआ है, तो आईवीएफ जैसे उपचार आपकी मदद कर सकते हैं।
आईवीएफ यानी टेस्ट ट्यूब बेबी तकनीक के जरिए शरीर के बाहर अंडाणु और शुक्राणु मिलाए जाते हैं और तैयार भ्रूण को सीधे गर्भ में डाला जाता है। इससे फैलोपियन ट्यूब्स या गर्भाशय की परत में हुए नुकसान को बायपास किया जा सकता है।
टीबी के कारण गर्भधारण में परेशानी हो सकती है, लेकिन आज के मेडिकल विकल्पों से मां-बाप बनने का सपना पूरा हो सकता है। समय पर डॉक्टर से मिलें और सही इलाज लें।

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की मांगों को पूरा करे सरकार : दलेल राणा

-हरियाणा राज्य चतुर्थ श्रेणी सरकारी कर्मचारी यूनियन की राज्य कमेटी की बैठक का आयोजन

हरियाणा वाटिका/सुरेंद्र सोढी
हिसार, 28 जून। सर्व कर्मचारी संघ से संबंधित हरियाणा राज्य चतुर्थ श्रेणी सरकारी कर्मचारी यूनियन की महत्वपूर्ण मीटिंग स्थानीय सर्व कर्मचारी संघ कार्यालय में राज्य प्रधान दलेल राणा की अध्यक्षता में संपन्न हुई।
इस मौके पर राज्य प्रधान दलेल राणा ने कहा कि सरकार चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की मांगों की अनदेखी करने की बजाय उनका समाधान करे, अन्यथा संगठन इसको लेकर कड़ा कदम उठाने को मजबूर होगी। सर्व कर्मचारी संघ के राज्य अध्यक्ष धर्मवीर फोगाट ने

यूनियन की मांगों का जिक्र करते हुए तमाम मांगों को पूरा किए की सरकार से गुहार लगाई। मीटिंग का संचालन करते हुए ईश्वर सिरोही ने कहा कि हरियाणा सरकार चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की मांगों के समाधान को लेकर गंभीर नहीं है, जिसके चलते कर्मचारियों में भारी रोष है। उन्होंने कहा कि सोनु गांव कुम्हारिया में चपरासी कम स्वीपर की पोस्ट पर थी और 10 से 12 साल ड्यूटी कर रही थी। इसके बावजूद उसको ड्यूटी से बाहर कर दिया है। युनियन मांग करती है कि सोनु को तुरंत प्रभाव से बहाल किया जाए। उन्होंने कहा कि केंद्रीय ट्रेड यूनियनों के आह्वान पर आगामी 9 जुलाई को होने वाली राष्ट्रीय व्यापी हड़ताल में सभी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी बढ़-चढकर हिस्सा लेंगे।

लोहारू क्षेत्र के बीएलओ को कर्तव्य और दायित्व विषय पर दिया जाएगा प्रशिक्षण: एसडीएम मनोज दलाल

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
लोहारू, 28 जून। लोहारू क्षेत्र के बूथ लेवल अधिकारियों के कर्तव्य और दायित्व के विषय में स्थानीय बीडीपीओ कार्यालय में 10, 11, 14, 15 व 16 जुलाई को प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम में सभी बूथ लेवल अधिकारियों को उनके कर्तव्य और जिम्मेवारियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी जाएगी। लोहारू विधानसभा क्षेत्र के निर्वाचन पंजीयन अधिकारी एवं एसडीएम मनोज दलाल ने बताया कि बीएलओ को 10, 11, 14, 15 और 16 जुलाई को प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम में बीएलओ की नियुक्ति, कार्य और जिम्मेवारियों की जानकारी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम में तहसीलदार कम निर्वाचन पंजीयन अधिकारी एक तथा नायब तहसीलदार को सहायक निर्वाचन पंजीयन अधिकारी दो नियुक्त किया गया है। कार्यक्रम में मास्टर ट्रेनर विस्तार से बीएलओ की कार्य, जिम्मेदारी और दायित्व के बारे में जानकारी देंगे। कार्यक्रम में बीएलओ किस प्रकार चुनाव कार्य में अपनी बेहतर जिम्मेदारी निभा सकता है कि जानकारी दी जाएगी।

सफाई व्यवस्था के अभाव में परशुराम चौक पर हालात बद से बदतर, छुट्टा पशुओं का रहता है जमघट

स्थानीय निवासी भी सफाई व्यवस्था के प्रति नहीं है जागरूक, खुले में डाल रहे कूड़ा करकट

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
लोहारू, 28 जून। नगर के अति व्यस्त भगवान परशुराम चौक पर गंदगी व कूड़े करकट के ढेर नगर पालिका की सफाई व्यवस्था की पोल खोल रहे हैं। स्थानीय निवासियों द्वारा परशुराम चौक पर डाले जाने वाला कूड़ा करकट जन स्वास्थ्य विभाग के खुले पड़े वॉल की हौद में गिरकर जलापूर्ति के रूप में लोगों के घरों तक सप्लाई हो रहा है जिस कारण गर्मी के मौसम में बीमारियां फैलने का भी भय बन गया है। वहीं जन स्वास्थ्य विभाग की होद में लगे वॉल का पानी कूड़े करकट के कारण ओवरफ्लो होकर मुख्य रास्तों पर भी बह रहा है। गंदगी का आलम इस कदर है कि यहां सुबह सवेरे लोगों द्वारा डाले जाने वाला कूड़ा करकट आम लोगों के आवागमन में भी बाधा उत्पन्न कर रहा है वही इस कूड़े करकट के आसपास आवारा पशु भटकते रहते हैं जिस कारण यह कभी भी हादसे को दावत दे सकता है। ध्यान रहे की कुछ वर्ष पूर्व परशुराम चौक पर आवारा पशुओं के आतंक के कारण एक व्यक्ति की मौत भी हो चुकी है इसके बावजूद भी न तो नगर पालिका प्रशासन गंभीर है तथा न ही स्थानीय निवासी। स्थानीय निवासी जानबूझकर यहां

कूड़ा डालते हैं तथा यहां की बदहाल सफाई व्यवस्था के लिए नगर पालिका से अधिक जिम्मेदार स्थानीय निवासी ही है। यदि नगर पालिका यहां कोई बड़ा कूड़ा दान रखवा दे तो यहां गंदगी व कूड़े करकट की समस्या से कुछ हद तक निजात मिल सकती है। चौक पर बड़ा कूड़ादन ने होने के कारण लोग अपने घरों का कूड़ा परशुराम चौक पर खुलेआम भी सडक पर ही डाल देते हैं। यह भी काबिले गौर है की नगर पालिका द्वारा घरों से कूड़ा करकट उठाने के लिए गाडि?ं भी लगाई गई है जो प्रतिदिन घरों से कूड़ा एकत्रित करती है परंतु इसके बावजूद परशुराम चौक व आसपास के घरों के लोग नगर पालिका की गाडियों में कूड़ा डालने की बजाय खुले में कूड़ा डालना उचित समझते हैं जिसकी वजह से चौक की सुंदरता तो प्रभावित होती है साथ ही गंदगी के ढ़ेर में आवारा पशु मुहं मारते रहते है जो आवागमन में भी बाधा बनते है। हालांकि नगरपालिका के सफाई कर्मी प्रतिदिन सुबह यहां से कूड़ा करकट उठाते भी है लेकिन अगले दिन फिर से वहीं हालात हो जाते है। नगरवासियों ने प्रशासन व नपा से परशुराम चौक पर कूड़ा करकट डालने के लिए कूड़ादान रखवाने की मांग करते हुए यहां बने हौद को ढकवाने की मांग की है ताकि गंदगी व कूडा करकट हौद के वॉल से पानी सप्लाई में मिलकर घरों तक न पहुंच पाए। इस बारे में नपा सचिव तेजपाल सिंह तंवर ने बताया कि सफाई कर्मचारियों द्वारा नियमित रूप से सफाई होती है। यदि इसके बाद भी सफाई व्यवस्था प्रभावित है तो सफाई कर्मचारियों को सख्त निर्देश देकर परशुराम चौक की सफाई करवा दी जाएगी और हौद का ढक दिया जाएगा। वहीं छुट्टा पशुओं के बारे में उन्होंने कहा कि इनको पकड़ने की योजना बनाई गई है जिसके तहत जल्द ही इनको पकडकर गौशाला तक पहुंचाया जाएगा।

उमस भरी गर्मी पशुओं पर पड़ रही भारी, पशु हो रहे बीमार

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
सतनाली, 28 जून। सतनाली क्षेत्र में मौसम में आई खुश्की व उमस भरे वातावरण के बीच जहां आम लोग परेशान है वहीं पशुओं में भी इसके प्रभाव के कारण बेचैनी देखी जा सकती है। इंसान तो तपिश के कारण आई बेचैनी व दबाव को डॉक्टरों के समक्ष जाकर बता सकते हैं, लेकिन बेजुबान जानवर इस दबाव को किसी को नहीं बता सकते। मौसम में गर्मी के इस दबाव के कारण पशुओं में गलघोटू जैसी जानलेवा बीमारी होने की आशंका बढ़ जाती है। जैसे-जैसे मौसम में बदलाव होता है उतनी जल्दी पशु अपने शरीर को मौसम के अनुसार नहीं ढ़ाल सकता और पशु दबाव में जाता है। इस दबाव वाले मौसम में पशुओं के गले में रहने वाले पाश्चुरेला मल्टोसिडा नामक जीवाणु सक्रिय हो जाते हैं। पशु पहले ही दबाव में होता है जिससे पशु की प्रतिरोधक क्षमता उन जीवाणुओं से लड़ने में सक्षम नहीं हो पाती और ये जीवाणु पशु के लिए जानलेवा साबित हो जाते हैं। पशुपालन विभाग की मानें तो इस बदलते मौसम में पशुओं को दबाव गलघोटू से बचाने के लिए एचएस, गलघोटू का टीकाकरण कराना चाहिए। विभाग द्वारा गलघोंटू वैक्सीन भेज उपलब्ध करवाई गई है। अगर एक भी पशु टीकाकरण से वंचित रह गया और यह बीमारी एक पशु में हो गई तो पूरे गांव के पशुओं को अपनी चपेट में ले लेती है और बहुत से पशुओं की मौत का कारण बन जाती है। उन्होंने बताया कि कई लोगों को भ्रांति है कि टीकाकरण से पशु का दूध सूख जाता है गर्भपात हो जाता है। टीकाकरण से पशु को फायदा ही होता है और उसके शरीर में गलघोटू बीमारी से लड़ने की क्षमता बढ़ती है।
लक्षण व बचाव के उपायः-
पशुओं को सांस लेने में समस्या होना, पशु का तापमान बढ़ना, मुंह से पानी गिरना, पशु चरना बंद कर देता है, पशु बिल्कुल सुस्त रहता है। इस तरह के लक्षण दिखाई देने पर तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए ताकि पशुओं को समय रहते बचाया जा सके।

संपादक की कलम से

कैंसर को ठीक करने में योग सक्षम

आनुवांशिकता, पर्यावरणीय, लाइफस्टाइल में गड़बड़ी, रसायनों के अधिक संपर्क के कारण कैंसर होने का जोखिम बढ़ जाता है। महिलाओं में सर्वाइकल और ब्रेस्ट कैंसर और पुरुषों में फेफड़े-प्रोस्टेट और कोलन कैंसर का खतरा सबसे अधिक देखा जाता रहा है।

कैंसर को नियंत्रित करने में भारतीय योग, आयुर्वेद एवं अध्यात्म की महत्वपूर्ण भूमिका है। क्योंकि अध्यात्म से व्यक्ति को आत्मविश्वास व मानसिक बल मिलता है। अध्यात्म के सहारे से जीवन की यात्रा को सुगम व सरल किया जा सकता है। इसे एक पारंपरिक उपचार प्रणाली के रूप में जाना जाता है, जो पूरे शरीर, मन और आत्मा में ऊर्जा के संतुलन और प्रवाह को पुनर्स्थापित करती है। जिस प्रकार दवाई हमारे शरीर के अंदर जाकर बीमारी को ठीक करती है, ठीक उसी प्रकार आध्यात्मिक इलाज हमारे मन को मजबूत बना कर किसी भी बीमारी से लड़ने की हिम्मत देता है। अध्यात्म में वो शक्ति है, जो हारे हुए व्यक्ति के जीवन में नई ऊर्जा भर देता है। अध्यात्म के बहुत सारे अंग हैं जैसे- योग, प्राणायाम, मंत्र साधना, ध्यान, आदि। इसके माध्यम से व्यक्ति अपने आप को भीतर से मजबूत बना सकता है। यही वजह है कि जो व्यक्ति अपने जीवन में अध्यात्म को अपना लेता है, वो कैंसर से जुड़ी हर पीड़ा, वेदना एवं हर परिस्थिति का डटकर सामना करता है। ऐसा व्यक्ति जीवन में कभी हार नहीं सकता।

कैंसर अब एक तरह से जीवनशैली से जुड़ी बीमारी बनती जा रही है। कई बार तो लंबे समय तक यह बीमारी पकड़ में ही नहीं आती। इसका एक बड़ा कारण जागरूकता का अभाव भी है। **कैंसर एक ऐसा रोग है जिसके बारे में सुनकर ही लोग डर जाते हैं। कैंसर, वैश्विक स्तर पर** तेजी से बढ़ती गंभीर और जानलेवा स्वास्थ्य समस्याओं एवं बीमारियों में से एक है, जिसके कारण हर साल लाखों लोगों की मौत हो जाती है। विश्व कैंसर दिवस दुनिया के हर कोने में कैंसर की रोकथाम, कैंसर के लक्षणों की पहचान और इलाज के प्रति जागरूकता लाने एक महत्वपूर्ण दिन है, इस दिवस को मनाने की शुरूआत साल 2000 में पेरिस में हुई थी। 4 फरवरी 2000 को पेरिस में ह्यवर्ल्ड समिट अगेंस्ट कैंसरह्न कार्यक्रम का आयोजन कर इस दिवस को मनाने की शुरूआत हुई। अंतर्राष्ट्रीय कैंसर नियंत्रण संघ हर साल एक खास थीम पर वर्ल्ड कैंसर डे मनाता है। यह खास थीम लोगों को जागरूक करने और कैंसर के खिलाफ वैश्विक कार्रवाई को प्रेरित करने के लिए बनाई जाती है। साल 2025 में वर्ल्ड कैंसर डे की थीम ह्ययूनाइटेड बाय यूनीकह्न रखी गई है। इस थीम को रखने का उद्देश्य लोगों को यह बताना है कि कैंसर न सिर्फ इलाज से बल्कि लोगों के आत्मविश्वास एवं मनोबल से जीतने वाली एक लड़ाई है, जिसे हमें जड़ से खत्म करना है। ह्यमैं हूँ और मैं करूँगाह्न जो व्यक्तियों से कैंसर के खिलाफ लड़ाई के लिए व्यक्तिगत प्रतिबद्धता बनाने का आह्वान करता है। हालांकि, कैंसर पूर्व के कुछ लक्षण दिखते हैं, जिन्हें आमतौर पर नजरअंदाज कर दिया जाता है। मुंह में सफेद या लाल धब्बे, शरीर में कहीं गांठ बन जाना और उसका बढ़ना, लंबे समय तक खांसी, कब्ज की लगातार समस्या, अधिक थकान और वजन में गिरावट जैसे लक्षणों को कतई नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। कैंसर संक्रामक रोग नहीं है। कैंसर के मरीजों से दूरी न बनाएं, बल्कि उनके साथ जुड़कर उनको मानसिक संबल दें, उनमें सकारात्मक सोच विकसित करें। कैंसर की जंग में सकारात्मक सोच रोगी का सबसे बड़ा हथियार हो सकता है। सकारात्मक सोच वाले शरीर पर ही दवाइयां अपना असर दिखती हैं। इसलिए कभी भी व्यक्ति को हताश नहीं होना चाहिए। योग से शरीर, मन और आत्मा को नियंत्रित करने में मदद मिलती है। रोजाना 30 मिनट तक योग करके कैंसर जैसी खतरनाक बीमारियों के जोखिम को कम किया जा सकता है। विश्व कैंसर दिवस कैंसर के वैश्विक बोझ पर चिंतन करने के साथ-साथ जांच योगमय संतुलित जीवन और जीवनरक्षक उपचार में हुई प्रगति का जश्न मनाने का भी दिन है। पूरे समुदाय को जागरूकता बढ़ाने, शिक्षा को बढ़ावा देने तथा कैंसर के खिलाफ लड़ाई में व्यक्तिगत, सामूहिक और सरकारी कार्रवाई को प्रेरित करता है।

मानव शरीर कई कोशिकाओं से मिलकर बना होता है। इनका समय-समय पर रिप्लेसमेंट होता है। जैसे-जैसे कोशिकाएं मरती जाती हैं उनकी जगह पर नई कोशिकाओं का निर्माण होता है। इन रिप्लेसमेंट के दौरान जो सेल मल्टिप्लीकेशन होता है उसके अंदर कोई एक विकृत कोशिका भी पैदा हो जाती है और यह असामान्य कोशिका ऐसी होती है जिस पर शरीर के सिस्टम्स का कोई नियंत्रण नहीं होता और यह सेल इस तरह मल्टीप्लाई करता है कि अंततोगत्वा यह ट्यूमर अथवा कैंसर का रूप अख्तियार कर लेता है। कैंसर कई प्रकार के हो सकते हैं, सभी उम्र के व्यक्तियों में इसका जोखिम देखा जा रहा है। लक्षणों की समय पर पहचान और इलाज प्राप्त करके कैंसर से मृत्यु के जोखिमों को कम करने में मदद मिल सकती है। हर साल लाखों लोग कैंसर से मरते हैं, जो विश्व स्तर पर मृत्यु का प्रमुख कारण है। साल 2022 में दुनिया भर में कैंसर से करीब 9.7 मिलियन लोगों की मौत हुई थी।

सौंदर्य की अनुभूति में तादात्म्य पहली शर्त

अरुण कुमार दीक्षित

सौंदर्य आनंदित करता है। भारतीय दर्शन सौंदर्य को शब्दातीत मानता है। रामायण में सौंदर्य शब्द के स्थान पर रमणीय, शोभन और चारु शब्द आए हैं। वैदिक साहित्य में मनुष्य का मन सहज प्रकृति के दिव्य रूपों में रमण करता है। वैदिक कालीन अनुभूति प्रतीति को सौंदर्य कह सकते हैं। जब हम आनंद मगन हों तब सौंदर्य घटित होता है। जब सूर्य की अरुणाभा के दर्शन होते हैं तब सौंदर्य ही है। जब पक्षियों का कलरव ब्रह्म मुहूर्त में छंद बन जाए तब सौंदर्य समझो। जब आकाश गंगा रात्रि में जगमग उदीप्त दिखे तो सौंदर्य ही होता है। जब नदियां-झरने गीत गाते आगे बढ़ रहे हो तब वह सौंदर्य ही प्रवाहित होता है। जब अथाह जलराशि पर शुभ्र ज्योत्स्ना नर्तन में हो सौंदर्य है। नदी समुद्र में जब लहरें उफान मारती मचलती हैं तब सौंदर्य है। जब फूल खिलते हैं, सौंदर्य ही है। जब अनायास कोई गीत आपके हृदय में उमड़ आए तब वह ऋचा रूप सौंदर्य है। पूर्णिमा और अमावस्या दोनों सौंदर्य हैं। एक तमस का सौंदर्य तो दूसरा दीप्ति का सौंदर्य है। ऋतुराज बसन्त ऋतुओं का सौंदर्य है।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के शब्दों में सौंदर्य हमारी धारणा में निहित है। वह कहते हैं- सौंदर्य की विकृत अभिव्यक्ति ही कुरूपता है। कला आत्मविस्मृत आनंद से पोषित होती है। सौंदर्य अनुभूति, भावना कल्पना, संपूर्णता, कला और सौंदर्य शास्त्र की मूल अवधारणाएं हैं। वे न केवल कला को परिभाषित करते हैं, कला और सौंदर्य को जोड़ते भी हैं। कला मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति है। यूनानी दार्शनिक अरस्तू का कहना है कि सुंदरता को मापा जा सकता है। सुंदरता के लिए व्यवस्था समरूपता और निश्चितता प्रमुख है। सुंदर शरीर के रूप को परिभाषित किया है। सुंदरता के लिए गणितीय विज्ञान का भी उपयोग किया। उसका मानना था कला प्रकृति की नकल करती है। अरस्तू ने सौंदर्य के साथ राजनीति और तत्व मीमांसा पर भी कई रचनाएं लिखी है। सौंदर्य मूल्य और कला के बारे में दार्शनिक जांच है। सौंदर्य बोध की प्रथम यात्रा है। सुंदरता नैतिक या शारीरिक आंतरिक सौंदर्य के रूप में व्यक्ति परक है।

(पृष्ठ 182 बालकांड)। कालिदास ने मेघदूत में कई प्रकार के सौंदर्य का वर्णन किया है। नदी, पर्वत, वन, मेघ, पुष्पों और पक्षियों के सौंदर्य को अद्वितीय ढंग दिया है। यक्ष की कथा में अभूतपूर्व सौंदर्य की झलक है। सौंदर्य प्रसाधन का करोड़ों का कारोबार है। सुंदर दिखने की होड़ है। टीवी-सोशल मीडिया पर सुंदर दिखने और बनने के लाखों तरीके बताए दिखाए जा रहे हैं। नकली पलकें हैं। आंखों के बदलते रंग हैं, रंगों भीतर भी कई रंग हैं। नकली बालों को लगाने और रंगने का चलन बढ़ा है। पहले महिलाओं के लिए साज-सज्जा केन्द्र आये। अब पुरुषों के पार्लर बढ़े हैं। सौंदर्य प्रसाधन क्षेत्र में देशी-विदेशी कम्पनियों का भारी मुनाफा है। बात यहीं समाप्त नहीं होती। शरीर को काट कर सुंदर दिखने का चलन यूरोप की तर्ज पर बढ़ा है। दिल्ली, मुंबई, कोलकाता जैसे महानगरों में प्लास्टिक सर्जरी की मांग बढ़ी है। विज्ञापनों की भरमार है। अन्तर्स का सौंदर्य बाजार में नहीं मिलता।

श्रीमद्भागवद गीता में सौंदर्य को सत्य कहा गया है। सांसारिक सौंदर्य कृष्ण के सर्वोच्च सौंदर्य की एक झलक है, आभा है। कृष्ण परम सत्य की अभिव्यक्ति हैं। दसवें अध्याय का 41वां श्लोक रामचरितमानस के बालकांड में तुलसीदास ने राम के सौंदर्य पर लिखा है। उनके (राम) नील कमल और गम्भीर (जल से भरे हुए) मेघ के समान श्याम शरीर मे करोड़ों कामदेवों की शोभा है। लाल-लाल चरण कमल के नखों की (शुभ्र) ज्योति ऐसी मालूम होती है जैसे कमल के पत्तों पर मोती स्थिर हो गए हों। (पृष्ठ 182 बालकांड)। कालिदास ने मेघदूत में कई प्रकार के सौंदर्य का वर्णन किया है। नदी, पर्वत, वन, मेघ, पुष्पों और पक्षियों के सौंदर्य को अद्वितीय ढंग दिया है। यक्ष की कथा में अभूतपूर्व सौंदर्य की झलक है। सौंदर्य प्रसाधन का करोड़ों का कारोबार है। सुंदर दिखने की होड़ है। टीवी-सोशल मीडिया पर सुंदर दिखने और बनने के लाखों तरीके बताए दिखाए जा रहे हैं। नकली पलकें हैं। आंखों के बदलते रंग हैं, रंगों भीतर भी कई रंग हैं। नकली बालों को लगाने और रंगने का चलन बढ़ा है। पहले महिलाओं के लिए साज-सज्जा केन्द्र आये। अब पुरुषों के पार्लर बढ़े हैं। सौंदर्य प्रसाधन क्षेत्र में देशी-विदेशी कम्पनियों का भारी मुनाफा है। बात यहीं समाप्त नहीं होती। शरीर को काट कर सुंदर दिखने का चलन यूरोप की तर्ज पर बढ़ा है। दिल्ली, मुंबई, कोलकाता जैसे महानगरों में प्लास्टिक सर्जरी की मांग बढ़ी है। विज्ञापनों की भरमार है। अन्तर्स का सौंदर्य बाजार में नहीं मिलता।

सौंदर्य की अनुभूति में तादात्म्य (एम्थी) पहली शर्त है। जब हम प्राकृतिक दृश्यों को देखते हैं तो केवल स्वयं एक सुखद अनुभूति में होते हैं। हम बगल में बैठे व्यक्ति का ध्यान सुंदर दृश्य की ओर खींचते हैं कि वह भी सौंदर्य का आनंद ले। सौंदर्य का व्यावहारिक पक्ष यही है कि प्रत्येक व्यक्ति सुंदर वस्तुओं से आकर्षित होता है। चाहे हंसता गुलाब, जूही-चम्पा, लीली और उस पर मंडराती तितलियां, रंगबिरंगी चिड़िया भौंरें हों। मनोरम घाटियां, जगमग सितारे, भव्य पूर्णिमा के चांद का सौंदर्य आकर्षित करता हैं। प्रत्येक सुंदर वस्तु के दो पक्ष होते हैं- जड़ और चेतन। इंद्रियों से समझा जाने वाला रूप आकार और उसके माध्यम से अभिव्यक्त विचार, सौंदर्य अनुभूति, कला सृजन परस्पर संबंधित हैं। सौंदर्य शास्त्र का एक विषय के रूप में अध्ययन (स्टेथिक्स) कहलाता है। इसे स्वतंत्र विषय बनाने वाला 18वीं सदी का जर्मन दार्शनिक बामगार्टन था। भारत में सौंदर्य "रस" रूप में देखा गया है

सौंदर्य अनुभूति का सबसे सशक्त स्थल भरत मुनि ने रंगमंच को माना है, जहां प्रत्येक प्रेक्षक भाव विभोर होकर "रस" अनुभूति करता है। जिन चीजों में आनंद आता है उन सुंदर चीजों को देखकर हृदय बार-बार उसी ओर आकर्षित हो जाता है। उसकी छाया पीछा करती है। गीत फूटने लगते हैं। यह भौतिक आनंद क्षणिक होता है। सौंदर्य विषय पर प्राचीनकाल से चिंतन मंथन है। कला शरीर है। सौंदर्य उसकी आत्मा है। सच्ची कला सौंदर्य का ही मूर्ति रूप होती है। कला बिना पढ़े समझ में आती है। प्राचीनकाल में मानव ने पर्वतों की गुफाओं में पशुओं सहित भिन्न प्रकार के चित्र उकेरे हैं। यह चित्र हमें उस पाषाण, पुरापाषाण काल की सूचनाएं देते हैं कि तब का मानव कैसा था। चित्र भाषा, मानव आत्मा की भाषा है। सौंदर्य का अस्तित्व भी इसलिए है कि दुनिया में कुरूपता भी है। यही कारण है कि सौंदर्य कुरूपता का परिष्कृत रूप है। गुण की पहचान अवगुण है। विशेष कर पश्चिमी देशों में सौंदर्य की प्रतियोगिताएं होती हैं। विश्व सुंदरी के चुनाव के लिए सौंदर्य प्रतियोगिता होती है। ऊपर से कुरूप व्यक्ति तब सुंदर दिखाई देगा जब उसके कार्यों में शुभता और लोकमंगल हो। सौंदर्य अनुभूति अन्य अनुभूतियों से भिन्न है। आंतरिक आनंद की भावना इस अनुभूति में बड़ी होती है। सौंदर्य की प्रशंसा और सम्मोहन इसका चरित्र है। सौंदर्य की अनुभूति को अंग्रेजी में (एम्थी) कहते हैं यह

आयकर कानून के सरल होने विवाद घटेंगे

वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने लोकसभा में 64 साल पुराने आयकर कानून-1961 के सरलीकरण और इसमें चले आ रहे बेवजह के प्रविधानों को समाप्त करने के उद्देश्य से नया इनकम टैक्स बिल-2025 पेश कर दिया। 622 पन्नों के इस विधेयक में 536 धाराएं शामिल हैं। जबकि आयकर कानून-1961 में 1647 पन्ने और 819 धाराएं रही है। इस विधेयक में कई पुराने और जटिल प्रावधानों को हटाकर करदाताओं के लिए इसे आसान और पारदर्शी बनाया गया है। नए कानून का उद्देश्य कर प्रक्रिया को स्पष्ट, सहज, सरल और कानूनी उलझनों से मुक्त बनाना है जिससे लंबे समय तक चलने वाले विवादों की संख्या कम हो। इसे लागू करने की संभावित तारीख 1 अप्रैल 2026 तय की गई है। निश्चित ही नये आयकर कानून से टैक्स व्यवस्था में पारदर्शिता और सरलता के नए दौर की शुरूआत होगी, यह आयकर कानून का नया सूरज है, जो जटिलताओं एवं पेचिदगियों की जगह सरलता एवं सहजता की रोशनी बनेगा।

मौजूदा आयकर कानून की तुलना में नया आयकर कानून शब्दों और धाराओं की संख्या के हिसाब से काफी छोटा है, पुराने इनकम टैक्स एक्ट में 5.12 लाख शब्द थे, जबकि नए बिल में सिर्फ 2.6 लाख शब्द हैं। एक्ट के अलग-अलग चैप्टर भी 47 से घटाकर 23 कर दिए गए हैं, नए कानून में 1,200 प्रावधान और 900 स्पष्टीकरण हटा दिए गए हैं। इन बदलावों का मकसद यह है कि लोग आसानी से आयकर के नियम समझ सकें और टैक्स भरने की प्रक्रिया पहले से आसान हो जाए। यह बिल आयकर प्रावधानों को सरल और आसान बनाने के बड़े मकसद से जुड़ा है, जिसका फायदा आने वाले वर्षों में दिख सकता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी प्रारंभ से ही कम-से-कम कानूनों एवं सरल-व्यवस्था के हिमायती रहे हैं। दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर देश में आर्थिक क्रांति का शंखनाद अनेक मोर्चे पर हो रहा है। न केवल भारत की अर्थव्यवस्था बदली है बल्कि हमारे आसपास की पूरी दुनिया बदल चुकी है। 1961 में बने आयकर कानून में बदलती जरूरत के मुताबिक नए-नए संशोधन होते रहे, जिससे इसकी जटिलता बढ़ती चली गई। यह जटिलता न केवल करदाताओं को उलझन में डालती थी बल्कि कानूनी प्रावधानों की कई तरह से व्याख्या अनेक उलझने एवं विवाद खड़ा करती रही है। इन जटिल होती परिस्थितियों का परिणाम यह हुआ कि अपने देश में टैक्स को लेकर विवाद लगातार बढते. गये। इन लगातार बढ़ते विवादों के कारण ही इसे दुनिया की टैक्स विवादों की राजधानी कहा जाने लगा। खासकर पिछले करीब डेढ दशक में यह ट्रेंड बहुत तेजी से बढ़ा। नौबत ऐसी आ गई कि 2023-24 तक टैक्स संबंधी मुकदमों में विवादित रकम बढ़कर 15.4 लाख करोड़ रुपये हो गई, जिसका करीब 87 प्रतिशत हिस्सा डायरेक्ट टैक्स से जुड़ा है। संभावनाएं हैं एवं सराहनीय भी है कि नये कानून के लागू होने से विवाद भी कम होंगे एवं जनता भी राहत की सांस लेगी। निश्चित ही यह कदम स्वागतयोग्य है। इस कानून को लाकर मोदी सरकार और विशेषतः वित्तमंत्री ने अपने दायित्व का ईमानदारी से पालन किया है।आयकर कानून-1961 की जटिलताओं के कारण विवादों का अंबार लगा रहा है। जबकि आयकर विभाग को इन विवादों से कोई फायदा भी नहीं होता है क्योंकि इनमें जीत का उसका रेकॉर्ड बड़ा खराब रहा है। ऑर्गनाइजेशन फॉर इकॉनमिक कोऑपरेशन एंड डिवेलपमेंट (ओईसीडी) की ओर से 34 देशों में टैक्स विवादों पर हुई एक स्टडी के मुताबिक 2015 में भारत में टैक्स विभाग को महज 11.5 प्रतिशत मामलों में ही जीत मिली थी। ओईसीडी देशों का औसत इस मामले में 65 प्रतिशत है।

कांग्रेस को किससे खतरा?

-ललित -

कांग्रेस पार्टी की नीति हमेशा से विभाजनकारी रही है। इनका एजेंडा ही रहा है देश में जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्र के नाम पर बंटवारा करके अराजकता का माहौल बनाना। इसके लिये वह कभी संविधान को खतरे में बताती है तो कभी जातिगत जनगणना की मांग करती है। एक बार फिर डॉ. भीमराव आंबेडकर की जन्मस्थली महू में रैली के दौरान कांग्रेस ने जिस तरह इस पर जोर दिया कि संविधान पर हमला किया जा रहा है और महात्मा गांधी का अपमान किया जा रहा है, उससे उसकी विचारशून्यता एवं राजनीति अपरिपक्वता ही प्रकट नहीं हो रही है,, बल्कि देश को बांटने की मानसिकता भी उजागर हो रही है। यदि कांग्रेस के रणनीतिकार एवं नेता यह समझ रहे हैं कि वे संविधान के संदर्भ में भय का भूत खड़ा करने और भाजपा एवं संघ के नेताओं के बयानों को तोड़-मरोड़कर पेश करने से देश की जनता को गुमराह करने, बरगलाने में समर्थ हो जाएंगे तो ऐसा अब होने वाला नहीं है। उलटे इस क्रम में कांग्रेस की विश्वसनीयता और अधिक गिर सकती रही है और वह हास्यास्पद स्थिति का शिकार होकर अपनी राजनीतिक जमीन को कमजोर ही कर रही है। ऐसा हरियाणा, महाराष्ट्र के चुनावों में हुआ है और अब दिल्ली के विधानसभा चुनाव भी ऐसे ही होते हुए दिख रहे हैं।

संविधान के खतरे में होने के कांग्रेस के दुष्प्रचार का लाभ भले ही कुछ सीमा तक लोकसभा चुनाव मिला हो, लेकिन हर बार मतदाता ऐसे नारों एवं दुष्प्रचार में गुमराह नहीं होने वाला है। वैसे भी काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती। कांग्रेस इस बात को भी तूल दे रही है कि महात्मा गांधी के साथ डॉ. आंबेडकर का अपमान किया जा रहा है। ये ऐसी बातें हैं, जिनका कोई मूल्य-महत्व नहीं। यह सब अंधेरे में तीर चलाने जैसा है। यह असत्य एवं झूठ की राजनीति है। कांग्रेस भले ही सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने की बातें कर रही हो, लेकिन सच यह है कि वह सामाजिक विभाजन की खाई को चैड़ा करते हुए देश को जोड़ने नहीं, बल्कि तोड़ने में जुटी हुई है। अब मतदाता समझदार हो चुका है, वह ऐसे झूठे प्रचार में बार-बार नहीं आने वाला है। कांग्रेस सामाजिक न्याय की बात करते हुए भाजपा के साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को भी निशाने पर ले रही है, लेकिन कांग्रेस की इन कुचालों का भाजपा एवं आरएसएस करारा जबाव दे रहे हैं।

गत दिवस ही संघ प्रमुख मोहन भागवत ने कांग्रेस एवं उसके नेता राहुल गांधी को नसीहत देते हुए कहा- बंधुभाव ही असली धर्म है। यही बात डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ने संविधान-प्रस्तुति के समय अपने भाषण में भी समझाई है। भागवत ने कहा- समाज आपसी सद्भावना के आधार पर काम करता है।

दोषी को सजा और समाज की जिम्मेदारी

प.बंगाल में आरजी कर अस्पताल में 8-9 अगस्त 2024 की रात ट्रेनी डॉक्टर के साथ बलात्कार और हत्या के दोषी संजय रॉय को सोमवार को सियालदह कोर्ट ने उम्रकैद की सजा सुनाई है। इससे दो दिन पहले अदालत ने 18 जनवरी को संजय को दोषी ठहराया था। अदालत ने इस मामले को जघन्य तो माना, लेकिन दुर्लभतम यानी रेयरेस्ट ऑफ द रेयर नहीं माना, इसलिए दोषी को मृत्युदंड न देकर मरने तक उम्रकैद दी गई है। हालांकि प.बंगाल सरकार ने अब कलकत्ता हाईकोर्ट में उम्रकैद को सही नहीं मानते हुए दोषी को फांसी देने के लिए याचिका दायर की है, जो मंजूर तो कर ली गई है, लेकिन इस पर सुनवाई कब होगी, यह अभी तय नहीं है। वहीं पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने सोशल मीडिया एक्स पर लिखा- मुझे पूरा विश्वास है कि यह रेयरेस्ट ऑफ रेयर मामला है, जिसके लिए मौत की सजा मिलनी चाहिए। कोर्ट यह कैसे कह सकता है कि यह दुर्लभतम मामला नहीं है? वहीं भाजपा ने भी इस मामले में उम्रकैद मिलने पर अपनी नाराजगी जताई और इसके लिए ममता सरकार को कटघरे में खड़ा किया।

जबकि भाजपा यह जानती है कि मामले की पूरी जांच सीबीआई की निगरानी में हुई और उसके द्वारा पेश तथ्यों और सबूतों के आधार पर ही दोषी को सजा दी गई है। अगर भाजपा को आपत्ति दर्ज करनी ही है तो उसे फिर सीबीआई पर भी सवाल उठाने चाहिए। लेकिन ऐसा लगता है कि यहां न्याय से अधिक राजनीतिक लाभ लेने का खेल चल रहा है। वैसे पीड़िता के परिजन भी इस फैसले से निराश हैं और उन्होंने भी बड़ी अदालत में याचिका दायर करने का फैसला किया है। सियालदह अदालत ने दोषी को सजा के साथ-साथ पीड़िता के परिवार को मुआवजा देने का भी आदेश दिया है। अदालत ने डॉक्टर की मौत के लिए 10 लाख और बलात्कार के लिए 7 लाख मुआवजा तय किया। इस दौरान कोर्ट में मौजूद ट्रेनी डॉक्टर के माता-पिता ने हाथ जोड़कर कहा कि हमें मुआवजा नहीं, न्याय चाहिए।

लॉरिट्ज नुडसेन इलेक्ट्रिकल नेअब तक का सबसे बड़ा प्रोडक्ट पोर्टफोलियो लॉन्च किया

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो

रोहतक, 28 जून। भारत के इलेक्ट्रिकल और ऑटोमेशन क्षेत्र की प्रमुख कंपनी लॉरिट्ज नुडसेन इलेक्ट्रिकल एंड ऑटोमेशन ने आज अपने इतिहास का सबसे बड़ा प्रॉडक्ट पोर्टफोलियो लॉन्च किया। यह कदम भारत के प्रमुख औद्योगिक क्लस्टर्स और विकास गलियारों को आधुनिक तकनीकों से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इस अभियान के तहत कंपनी देश के 30 औद्योगिक शहरों में जाकर स्थानीय नेतृत्व, हितधारकों और सहयोगियों से संवाद करेगी। इसका उद्देश्य भारत के विनिर्माण और बुनियादी ढांचे के केंद्रों में तकनीकी अपनाने की गति को बढ़ाना है।

कम वोल्टेज समाधानों, औद्योगिक ऑटोमेशन और नई ऊर्जा आवश्यकताओं पर गहरे फोकस के साथ, लॉरिट्ज नुडसेन एक तकनीक-आधारित बदलाव को आगे बढ़ा रहा है, जो भारत के प्रमुख और महत्वपूर्ण औद्योगिक नगरों तक पहुंचता है। लॉरिट्ज नुडसेन इलेक्ट्रिकल एंड ऑटोमेशन के सीओओ नरेश कुमार ने कहाः ह्लहमारा उद्देश्य स्मार्ट टेक्नोलॉजीज के जरिए ग्राहकों को ज्यादा सुरक्षित, तेज और स्मार्ट तरीके से काम करने में सक्षम बनाना है। इस प्रोडक्ट शोकेस के माध्यम से हम यह भरोसा और मजबूत कर रहे हैं कि नवाचार हर क्षेत्र की अलग-अलग जरूरतों के अनुसार सुलभ, अनुकूलनीय और प्रासंगिक होना चाहिए। फिर चाहे बात रायपुर की राइस मिल को ऑटोमेट करने की हो, कोयंबटूर की टेक्सटाइल मिल को ऊर्जा देने की हो, या पुणे के किसी प्लांट का आधुनिकीकरण करने की – हमारा पोर्टफोलियो असर डालने के लिए तैयार है। उन्होंने आगे कहा, भारत का इलेक्ट्रिकल उपकरण क्षेत्र 2029 तक 95 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक और इंडस्ट्रियल ऑटोमेशन बाजार 2033 तक 39.65 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने की दिशा में बढ़ रहा है–यह रफ्तार बहुत स्पष्ट है। भारतीय निमार्ता पहले ही अपने संचालन बजट का 35% तकनीकी आधुनिकीकरण में निवेश कर रहे हैं–जो वैश्विक औसत से कहीं अधिक है।

वी बिजनेस ने एमएसएमई दिवस के मौके पर मनाया विकास का जश्न

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो

हिसार, 28 जून। विश्व एमएसएमई दिवस के मौके पर जानो-मानो दूरसंचार सेवा प्रदाता वी की एंटरप्राइज शाखा वी बिजनेस ने अपने प्रमुख रेडी फॉर नेक्स्ट एमएसएमई ग्रोथ इनसाईट्स स्टडी 2025 के तीसरे संस्करण को जारी किया।

डिजिटल भारत, भारत नेट एवं मोबाइल ब्रॉडबैण्ड के बढ़ते इस्तेमाल के साथ भारत की तेजी से विकसित होती डिजिटल इकोनोमी में छोटे कारोबार अपने संचालन की दक्षता एवं बाजार में पहुंच बढ़ाने के लिए डिजिटल टूल्स का उपयोग कर रहे हैं।

रेडी फॉर नेक्स्ट एमएसएमई ग्रोथ इनसाईट्स स्टडी 2025 इस सकारात्मक बदलाव की ओर इशारा करती है, जहां देश के डिजिटल मैच्योरिटी इंडैक्स (डीएमआई) में बढ़ोतरी हो रही है, हालांकि डिजिटल अडॉप्शन खंडित बना हुआ है। मजबूत इरादे, सही आर्थिक सहयोग एवं उचित अडवाइजरी सहयोग के साथ भारत के छोटे कारोबार अपनी डिजटल यात्रा को गति प्रदान करने के लिए मजबूत स्थिति में हैं।

इस अध्ययन पर बात करते हुए अरविंद नेवातिया, चीफ एंटरप्राइज बिजनेस ऑफिसर, वोडाफोन आइडिया लिमिटेड ने कहा, भारत के एमएसएमई स्पष्ट रूप से डिजिटल उत्सुकता से बढ़कर डिजिटल प्रतिबद्धता की ओर रुख कर रहे हैं- और यह उत्साहजनक बदलाव है। क्लाउड, साइबरसिक्योरिटी एवं ऑटोमेशन में बढ़ता निवेश दशार्ता है कि छोटे कारोबार टेक्नोलॉजी को युटिलिटी के रूप में नहीं बल्कि विकास को बढ़ावा देने वाले कारक के रूप में देख रहे हैं। रेडी फॉर नेक्स्ट प्रोग्राम के माध्यम से हमारा उद्देश्य भारत के एमएसएमई की अतुलनीय विकास यात्रा का जश्न मनाना है, जो छोटे नगरों से विश्वस्तरीय बाजारों तक, मैनुअल प्रक्रियाओं से डिजिटल-फर्स्ट उद्यमों तक विकसित हुए हैं।

क्रेडिला फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड ने सेबी के पास यूडीआरएचपी-क दाखिल किया

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो

गुरुग्राम, 28 जून। क्रेडिला फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड (कंपनी), जो एक भारतीय एजुकेशन फाइनेंस कंपनी है और भारत तथा विदेशों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले भारतीय छात्रों को शिक्षा ऋण प्रदान करने पर केंद्रित है, ने भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड के पास अपना यूडीआरएचपी-क दाखिल किया है।

कंपनी प्रारंभिक सार्वजनिक निर्गम के माध्यम से रु 5,000 करोड़ तक जुटाने की योजना बना रही है। कुल निर्गम में रु 3,000 करोड़ के नए इक्विटी शेयर जारी किए जाएंगे और रु 2,000 करोड़ तक के इक्विटी शेयरों की बिक्री (ऑफर फॉर सेल) शामिल होगी। प्रत्येक इक्विटी शेयर का अंकित मूल्य रु10 है।

ऑफर फॉर सेल के तहत रु 2,000 करोड़ तक के शेयरों की बिक्री की जाएगी, जिसमें से रु 950 करोड़ के शेयर प्रमोटर सेलिंग शेयरधारक कोपवूर्न बी.वी. (प्रमोटर सेलिंग शेयरहोल्डर) द्वारा और रु 1,050 करोड़ के शेयर एचडीएफसी बैंक लिमिटेड (अन्य विक्रय शेयरधारक) द्वारा बेचे जाएंगे।

2006 में स्थापित क्रेडिला भारत की अग्रणी एजुकेशन फाइनेंस कंपनियों में से एक है, जैसा कि उद्योग रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है।

कंपनी फ्रेश इश्यू से आने वाले पैसे का उपयोग अपने पूंजी आधार को सुदृढ़ करने और भविष्य में व्यापार व परिसंपत्तियों के विस्तार के लिए पूंजी आवश्यकताओं को पूरा करने के मकसद से करेगी।

कंपनी द्वारा, आरओसी के साथ रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस दाखिल करने से पहले, बीआरएलएम के परामर्श से निर्दिष्ट प्रतिभूतियों का प्री-आईपीओ प्लेसमेंट किया जा सकता है, जिसकी कुल राशि रु600 करोड़ से अधिक नहीं होगी (प्री-आईपीओ प्लेसमेंट)। यदि प्री-आईपीओ प्लेसमेंट किया जाता है, तो कंपनी द्वारा बीआरएलएम के परामर्श से तय की जाने वाली कीमत पर होगा। यदि प्री-आईपीओ प्लेसमेंट किया जाता है, तो प्री-आईपीओ प्लेसमेंट से जुटाई गई राशि नए निर्गम से कम हो जाएगी, बशर्ते कि प्रतिभूति अनुबंध (विनियमन) नियम, 1957 के नियम 19(2)(बी) का अनुपालन किया जाए, जैसा कि संशोधित किया गया है (एससीआरआर)। यदि प्री-आईपीओ प्लेसमेंट किया जाता है, तो नए निर्गम के 20% से अधिक नहीं होना चाहिए।

रास और रवि ने एक भावनाओं भरा गीत फॉरएवर माइन रिलीज किया

जो सच्चे प्यार की गहराई और शुद्धता को महसूस कराता है

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो

हिसार, 28 जून। मशहूर पंजाबी म्यूजिक प्रोड्यूसर रास और उभरते हुए आर्टिस्ट रवि ने मिलकर अपना नया गाना ह्लफॉरएवर माइनह्व लॉन्च किया है। यह एक भावनाओं भरा गीत है जो सच्चे प्यार की गहराई को दिखाता है। ह्लफॉरएवर माइनह्व एक ऐसा सफर है जिसमें टिमटिमाते तारों वाला आसमान है, शांत बातचीत है और ऐसा खास रिश्ता होता है, जो साधारण पलों को भी जादुई बना देता है। इस गाने में भावनाएं बसी हैं और इसकी धुनें भी बहुत प्यारी और सपनों जैसी हैं। यह प्यार को एक शांत और कोमल वादा मानता है, जो समय के साथ और भी मजबूत होता जाता है।

प्रेम ढिल्लों, एकम सुधार और सरदार खेहरा के लिए हिट गाने बनाने वाले रास अब अपने नए गाने ह्लफॉरएवर माइनह्व के साथ एक नए और खास सफर की शुरूआत कर रहे हैं, जहां वो पहली बार अपने खुद के म्यूजिक के जरिए सामने आ रहे हैं। वहीं रवि के लिए यह गाना उनका एक और अहम कदम है, जिसमें वह एक ऐसे म्यूजिक कंपोजर और लिरिसिस्ट बनकर उभर रहे हैं, जो दिल से धुनें बनाते हैं और ऐसे बोल लिखते हैं, जो गाना खत्म होने के बाद भी हमेशा के लिए याद रह जाएं।

रास और रवि दोनों का जन्म और पालन-पोषण पंजाब में हुआ, जहां से उनके संगीत की शुरूआत हुई। अब ये दोनों कलाकार कैनेडा में रहते हैं और अपने हर गाने में पंजाबी संस्कृति की गहराई के साथ-साथ दुनिया भर के म्यूजिक का नया अंदाज भी लेकर आते हैं। ह्लफॉरएवर माइनह्व सिर्फ एक गाना नहीं है, बल्कि यह एक ठोस संदेश है।

दो ऐसे कलाकारों का जो अपनी संस्कृति को गर्व से आगे बढ़ा रहे हैं और साथ ही इंटरनेशनल म्यूजिक वर्ल्ड में अपनी एक खास जगह बना रहे हैं।

बिजली की केबल पर झूल रही पेड़ की टूटी टहनी बन सकती है हादसे का सबब, विभाग नहीं दे रहा ध्यान

-एक माह पूर्व तेज आंधी में टूटी थी टहनी, प्रतिदिन होता है हजारों वाहनों का आवागमन

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो

लोहारू, 28 जून। नगर के मुख्य बाजार से पुराना शहर की ओर जाने वाले मुख्य मार्ग पर जनस्वास्थ्य विभाग के जलघर संख्या एक की चारदीवारी व निजी स्कूल के गेट के सामने लगे बिजली के पोल की केबल पर पेड़ की टूटी टहनी झूल रही है जो किसी भी समय हादसे का सबब बन सकती है। हादसे के भय के बीच प्रतिदिन यहां से हजारों लोगों व वाहनों का आवागमन रहता है। स्थानीय लोग बिजली विभाग से बिजली के पोल की केबल पर झूल रही पेड़ की टहनी को हटाने की मांग कर चुके है परंतु शायद विभाग व प्रशासन किसी बड़े हादसे का इंतजार कर रहा है। आलम यह है कि हल्की हवा चलने पर ही बिजली की केबल पर झूल रही

पेड़ की टहनी हिलने लगती है जो कभी भी बीच मार्ग पर गिर सकती है। ध्यान रहे कि पुराना शहर के लोग, मुख्य बाजार, सरकारी अस्पताल, बस स्टेंड, रेलवे स्टेशन, कोर्ट परिसर, लघु सचिवालय, नगर पालिका कार्यालय सहित अन्य सरकारी कार्यालयों में आवागमन के लिए यहीं से गुजरते है। जिस स्थान पर यह पेड़ की टहनी बिजली के तारों पर झूल रही है वह एक निजी स्कूल के बिल्कुल सामने है तथा दो दिन बाद स्कूलों के ग्रीष्मकालीन अवकाश समाप्त होने के बाद यहां हजारों स्कूली बच्चों का भी आवागमन रहेगा। ऐसे में कभी भी बड़ा हादसा घटित हो सकती है। स्थानीय लोगों का कहना है कि करीब एक माह पूर्व तेज आंधी के कारण पेड़ की टहनी टूटकर बिजली की केबल पर लटक गई थी। इस बारें बिजली विभाग के कर्मचारियों को अनेक बार अवगत करवाने के बावजूद भी इस समस्या का समाधान नहीं किया जा रहा है जो विभाग व प्रशासन की लापरवाही को दशार्ता है। स्थानीय निवासियों ने पेड़ की टहनी को बिजली की केबल के ऊपर से हटाने की मांग की है ताकि लोगों व वाहन चालकों को आवागमन के दौरान हादसे का भय न रहे।

इस बारे में बिजली विभाग के एसडीओ मनोज कुमार ने बताया कि पेड़ों की टूटी हुई टहनियों को लाइन के ऊपर से हटा दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि आंधी की वजह से टहनी टूटी होगी, कर्मचारियों को बोलकर अभी हटवा दिया जाएगा।

सुरेहती जाखल के एथलीट संदीप पूनिया ने ऑस्ट्रियाई रेस वॉकिंग चैम्पियनशिप की 35 किमी पैदल चाल में हासिल किया रजत पदक

ओलंपिक में देश का प्रतिनिधित्व कर चुके है संदीप पूनिया, 2 घंटे 38 मिनट 45 सेकंड में किया पैदल चाल को पूरा

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो

सतनाली, 28 जून। खंड के गांव सुरेहती जाखल निवासी एथलीट, भारतीय सेना की 16वीं बटालियन, जाट रेजिमेंट के सूबेदार संदीप पूनिया ने गत 9 जून को इंसब्रुक में आयोजित ऑस्ट्रियाई रेस वॉकिंग चैम्पियनशिप में 35 किमी रेस वॉक स्पर्धा में रजत पदक हासिल कर एक और उपलब्धि अपने नाम हासिल की है वहीं सतनाली क्षेत्र, जिले, प्रदेश व देश का नाम अंर्तराष्ट्रीय पटल पर रोशन किया है। संदीप ने इस स्पर्धा में 2 घंटे 38 मिनट 45 सैकेंड का समय यह उपलब्धि हासिल की है। संदीप की इस उपलब्धि पर ग्रामीणों व क्षेत्रवासियों सहित परिजनों में खुशी का माहौल है तथा क्षेत्र के सामाजिक संगठनों ने संदीप पूनिया को बधाई दी है। ध्यान रहे कि इससे पहले भी संदीप पूनिया अनेक अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में देश

को गौरवान्वित कर चुके है तथा ओलंपिक में भी भारत की ओर से प्रतिनिधित्व कर चुके है। वर्ष 2022 में आयोजित राष्ट्रमंडल खेलों में भी संदीप ने कास्य पदक हासिल कर प्रदेश को गौरवान्वित किया था। वहीं हाल ही में गत 19 अप्रैल को चंडीगढ़ में आयोजित की गई 12वीं भारतीय ओपन रेस वाकिंग प्रतियोगिता में भी एथलेटिक्स संदीप कुमार पूनिया ने रजत पदक हासिल किया था। ध्यान रहे कि संदीप कुमार पुनिया आर्मी की जाट रेजिमेंट में सूबेदार की रैंक पर तैनात हैं। नवंबर में ये सूबेदार मेजर की पदोन्नति पा लेंगे। एथलेटिक्स संदीप कुमार महेंद्रगढ़ जिले के सतनाली खंड के गांव सुरेहती जाखल की ग्रामीण पृष्टभूमि से आते है तथा उनका सफर ग्रामीण खेतों से शुरू हुआ जहां उन्होंने परिवार की आर्थिक तंगी के बावजूद अपना लक्ष्य निर्धारित कर कड़ी मेहनत की तथा उन्होंने अपने प्रारंभिक वर्ष अपने परिवार की सहायता करने और स्थानीय कुश्ती प्रतियोगिताओं में भाग लेने में बिताए।

उनके जीवन ने एक महत्वपूर्ण मोड़ तब लिया जब वे सेना में भर्ती हुए, जहां उन्हें जाट रेजिमेंट सेंटर में रेस वॉकिंग से परिचित कराया गया। सेना में मिले प्रशिक्षण के बाद संदीप ने पीछे मुडकर नहीं देखा तथा अनेक राष्ट्रीय व अंर्तराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में अपना परचम लहराया तथा ओलंपिक तक का सफर तय किया। दक्षिण पश्चिमी कमान के सेना कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल मनजिंदर सिंह ने संदीप के असाधारण प्रदर्शन की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह भारतीय सेना की खेलों में उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता का प्रमाण है। यह न केवल व्यक्तिगत सफलताओं को उजागर करता है बल्कि अंतरराष्ट्रीय एथलेटिक्स के क्षेत्र में सैन्य कर्मियों के बढ़ते प्रभाव पर भी जोर देता है। संदीप पूनियां की उपलब्धि पर क्षेत्र के सामाजिक व राजनीतिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने बधाई दी है।

कवितावली जुलाई अंक का भव्य विमोचन

साहित्यिक संकल्प का उत्सव सुप्रसिद्ध अभिनेत्री एवं निर्देशक डॉ. रानी बलवीर कौर ने किया विमोचन

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो

चंडीगढ़, 28 जून। हिन्दी साहित्यिक जगत में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुकी 'कवितावली' पत्रिका के जुलाई अंक का अनावरण एक गरिमामय ऑनलाइन समारोह में सुप्रसिद्ध रंगकर्मी एवं डिर्पाटमेंट ऑफ इंडियन थिएटर, पंजाब यूनिर्वासटी की पूर्व अध्यक्षा डॉ. रानी बलवीर कौर के कर-कमलों द्वारा संपन्न हुआ। यह अवसर मात्र एक अंक का विमोचन नहीं, बल्कि साहित्यिक संकल्प के उत्सव के रूप में मनाया गया।

इस विशेष आयोजन में कवितावली के सम्पादकीय मंडल से कई गणमान्य सदस्यों की उपस्थिति रही, जिनमें मुख्य संपादक श्री सुरेश

पुष्पाकर (ग्रेट ब्रिटेन), संपादक श्री प्रेम विज, सलाहकार संपादक श्री विजय कपूर, वित्तीय सलाहकार श्रीमती इनु शर्मा, सलाहकार श्री साहिल सिंह, संयुक्त संपादक डॉ. संतोष गर्ग, प्रो. अलका कांसरा, तथा डॉ. विनोद शर्मा प्रमुख हैं।

डॉ. रानी बलवीर कौर ने अपने प्रेरक संबोधन में कहा, "संगीत और नाटक आत्मा की गहराई से जुड़ते हैं। जब सुर, शब्द और संवेदना एकाकार होते हैं, तो कला केवल मंच की नहीं, आत्मा की अभिव्यक्ति बन जाती है। कलाकार जीवन के उन अंशों में भी सौंदर्य ढूँढ़ लेता है, जिन्हें दुनिया व्यर्थ समझती है–जैसे नेकचंद ने रॉक गार्डन को वैश्विक पहचान दिलाई।"

उन्होंने चण्डीगढ़ की सांस्कृतिक समृद्धि की सराहना करते हुए 'कवितावली' की संपादकीय टीम को बधाई दी और कहा कि यह पत्रिका विश्वभर में फैले भारतीय मूल के हिंदी साहित्यप्रेमियों के लिए एक महत्वपूर्ण वैश्विक मंच बन चुकी है। मुख्य संपादक श्री सुरेश पुष्पाकर की विशेष सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि विदेश में रहते हुए भी वे भारतीय संस्कृति की जड़ों से गहराई से जुड़े हुए हैं और देश-विदेश के साहित्यकारों को एक मंच पर लाकर हिंदी साहित्य के प्रचार-प्रसार में योगदान दे रहे हैं। समापन पर सलाहकार संपादक श्री विजय कपूर ने धन्यवाद ज्ञापन में कहा, ह्लयह केवल जुलाई अंक का विमोचन नहीं, बल्कि हमारी भाषा और सांस्कृतिक चेतना को कविता की लौ से प्रकाशित करने का एक साहित्यिक संकल्प है।

ग्राम आधारित लघु मशरूम प्रसंस्करण उद्योग पर गहरा संकट

हरियाणा वाटिका/एकजोत

कुरुक्षेत्र, 28 जून। भारत सरकार के वित्त मंत्रालय के अधीन वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) खुफिया महानिदेशालय ने हाल ही में उत्तर भारत के कई खुम्ब प्रसंस्करण इकाइयों को कारण बताओ नोटिस जारी किए हैं। इन नोटिसों में एचएसएन कोड के गलत वर्गीकरण का आरोप लगाया गया है विशेष रूप से एचएसएन 0711 (अस्थायी रूप से संरक्षित सब्जियां, तत्काल उपभोग हेतु नहीं) और एचएसएन 2003 (तैयार या संरक्षित सब्जियां, तत्काल उपभोग हेतु) के बीच। इन नोटिसों में पिछले सात वर्षों के लिए 105 करोड़ रुपये का रेट्रोस्पेक्टिव टैक्स मांगा गया है, जो उभरते मशरूम प्रसंस्करण क्षेत्र के लिए विनाशकारी सिद्ध हो सकता है।

देवशयनी एकादशी से थम जाएगा विवाह शादियों का दौर, वैवाहिक सीजन का अंतिम मुहूर्त 4 जुलाई को

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो

सतनाली, 28 जून। देवशयनी एकादशी यानि 6 जुलाई के बाद देव निद्रा व विश्राम की अवस्था में चले जाएंगे जिसके बाद विवाह शादियों सहित शुभ कार्यों पर नवंबर में देवउठनी एकादशी तक रोक लग जाएगी। ऐसे में इस सीजन का आखिरी सावा चार जुलाई को आषाढ़ माह की भडल्या नवमी का रहेगा। इस दिन जिले में सैकड़ों शादियां होंगी। शादी को लेकर कपड़े, गहनों, वाहनों व बिजली के उपकरणों सहित शादी के सामानों की जमकर खरीदारी हो रही है। आखिरी सावे के लिए बैंड, डीजे, घोड़ी, वाहन, हलवाई, फोटोग्राफर आदि बुक हो चुके। इसके बाद करीब चार माह शादियां नहीं होगी। फिर नवंबर में देवउठनी एकादशी से शहनाई गूंजेगी। पंडित दिनेश मिश्रा ने बताया कि भडल्या नवमी तिथि को अबूझ मुहूर्त माना जाता है। यह तिथि भगवान विष्णु को समर्पित है। मान्यता है कि जिन लोगों का विवाह का मुहूर्त नहीं निकलता, उनका विवाह इस तिथि में किया जा सकता है। देवशयनी एकादशी को भगवान विष्णु क्षीर सागर में योग मुद्रा में चले जाते हैं। देवशयनी एकादशी से चातुर्मास प्रारंभ हो जाता है, उसके बाद चार महीनों के लिए सभी शुभ कार्य रुक जाते हैं। ऐसी मान्यता है इस दिन खरीदारी और नए कार्य की शुरूआत करने से मां लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है और घर में सुख शांति और समृद्धि का आगमन होता है। मिश्रा ने बताया कि आखा तीज की तरह भडल्या नवमी भी स्वयं सिद्ध मुहूर्त है। इस बार यह शुक्रवार के दिन है, ऐसे में यह और विशेष हो गई है। इस बार भडल्या नवमी को शिव योग व रवि योग रहेगा। इस तिथि को शास्त्रों में अबूझ और स्वयं सिद्ध मुहूर्त की संज्ञा दी गई है। इस समय में अपने इष्टदेव की पूजा कर कोई भी शुभ कार्य कर सकते हैं। भडल्या नवमी को भड़रिया नौमी, भडल्या नवमी, भड़ली नवमी, भड़ली नवमी, भादरिया नवमी, भदरिया नवमी, कंदर्प नवमी व बदरिया नवमी आदि नाम से भी जाना जाता है। इसी दिन आषाढ़ मास की गुप्त नवरात्रि की नवमी तिथि भी है। इस तिथि पर वाहन खरीदना, नए घर में प्रवेश, नवीन गृहारंभ, व्यापार आरंभ, आभूषण खरीद आदि शुभ कार्य करना अच्छा रहता है

गणपति कॉन्वेंट स्कूल में किया इंग्लिश कोर विषय की सी. बी. पी. का हूआ आयोजन

हरियाणा वाटिका/सरदारी लाल

व्यासपुर, 28 जून। गणपति कॉन्वेंट स्कूलबिलासपुर में किया गया इंग्लिश कोर विषय की सी. बी. पी. का आयोजन। दो दिवसीय सीबीएसई की तरफ से शिक्षकों की क्षमता वृद्धि के लिये कैपेसिटी बिल्डिंग प्रोग्राम इंग्लिश कोर विषय की सी. बी. पी.का आयोजन किया गया।कार्यक्रम का आयोजन तर्नप्रीत कौर व सुधांशु सिन्हा के द्वारा किया गया।जिसमें विभिन्न स्कूलों के 60 अध्यापकों ने भाग लिया।कार्यक्रम का आयोजन विद्यालय की प्रधानाचार्या रजनी भारती जी के मार्गदर्शन में हुआ। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बच्चों को प्रभावी तरीके से अंग्रेजी विषय पढ़ाने के तरीकों का प्रशिक्षण देना था। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथिगण और विद्यालय के स्थल निर्देशक परीक्षित बंसल

ल द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। आयोजित कार्यक्रम में शिक्षकों ने अपने प्रत्येक कार्य से तनाव मुक्त होकर बच्चों को आकर्षित तरीके से पढ़ाने के बारे में जाना । कार्यक्रम में तरनप्रीत कौर और सुधांशु सिंह ने बताया कि किस प्रकार हम विभिन्न कौशल जैसे-श्रवण,वाचन और पठन कौशल द्वारा प्रभावशाली तरीके से बच्चों के अधिगम को निखार सकते हैं।उन्होंने शिक्षा के स्तर को और अधिक बेहतर बनाने के लिए शिक्षकों को अभिप्रेरित करते हुए कविता वाचन और संचार कौशल के विषय में जानकारी दी। इसके साथ ही उन्होंने नोटिस बनाने के प्रारूप,लेखन कौशल योजना आदि के बारे में भी बताया। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के स्थल निर्देशक श्रीमान परीक्षित बंसल ने मुख्य अतिथिगण को इस कुशल प्रशिक्षण के लिए धन्यवाद दिया व अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि शिक्षकों को समय समय पर इस प्रकार के क्षमता वृद्धि प्रशिक्षण का आयोजन किया जाना ताकि वे अपने कार्य को कुशलता से कर पाए।

पार्क हॉस्पिटल मोहाली में अब होगा एडवांस रोबोटिक किडनी ट्रांसप्लांट: डॉ. प्रियदर्शी रंजन

हरियाणा वाटिका/प्रवीन कुमार

चंडीगढ़, 28 जून। पार्क हॉस्पिटल मोहाली ने शुक्रवार को एडवांस रोबोटिक किडनी ट्रांसप्लांट की शुरूआत की घोषणा की।

पार्क हॉस्पिटल मोहाली में रोबोटिक यूरोलॉजी और रीनल ट्रांसप्लांट के डायरेक्टर डॉ. प्रियदर्शी रंजन ने आज यहां एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए कहा, "रोबोटिक ट्रांसप्लांट के अलावा, हम सभी प्रकार के लिविंग डोनर ट्रांसप्लांट कर रहे हैं, जिसमें हाई रिस्क ट्रांसप्लांट, पीडियाट्रिक ट्रांसप्लांट स्वैप केस, एबीओ असंगत ट्रांसप्लांट (गैर-ब्लड ग्रुप विशिष्ट) और रीडू ट्रांसप्लांट शामिल हैं।"

उन्होंने आगे कहा कि हमारे देश में हर साल 2.2 लाख नए मरीज क्रोनिक किडनी फेलियर का शिकार होते हैं और यह मृत्यु का छठा सबसे तेजी से बढ़ता कारण भी है, जो 2040 तक पांचवां प्रमुख कारण बन सकता है। उन्होंने बताया कि भारत में किडनी फेलियर के मुख्य कारण हाई बीपी, डायबिटीज, बीपीएच, अनुपचारित किडनी स्टोन और यूटीआई हैं।

डायरेक्टर नेफ्रोलॉजी डॉ. मुकेश गोयल ने कहा, "पिछले एक दशक में क्रोनिक किडनी फेलियर रोग का प्रसार लगभग दोगुना हो गया है, और उच्च रक्तचाप, मधुमेह, मोटापा, तनाव और अस्वास्थ्यकर खान-पान जैसे जोखिम कारकों में वृद्धि के कारण इसके और बढ़ने की उम्मीद है।"

ट्रैक्टर-ट्राली से टकराई कार, एक की मौत, 4 घायल

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 28 जून। राष्ट्रीय राजमार्ग नंबर 9 पर गांव ओढां में मैरिज पैलेस के सामने एक कार ईंटों से भरी ट्रैक्टर-ट्राली में पीछे से जा टकराई। हादसे में कार में सवार दो महिलाओं सहित कुल 5 लोगों में से करीब 30 वर्षीय चमकदीप सिंह निवासी गांव त्योणा, जिला श्री मुक्तसर साहिब पंजाब की मौत हो गई जबकि अन्य 4 घायल हो गए। सूचना के बाद ओढां थाना पुलिस ने मौके पर पहुंचकर दुर्घटना का जायजा लेते हुए शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम क लिए अस्पताल में भिजवाया।

जानकारी अनुसार गांव त्योणा जिला श्री मुक्तसर साहिब पंजाब निवासी चमकदीप सिंह, जसकरण सिंह, सुखमीत कौर, हरमीत कौर व मासूम बच्चे गुरफतेह सहित 5 लोग आल्टो कार में सवार होकर सिरसा से अपने गांव जा रहे थे। कार को जसकरण चला रहा था। रास्ते में हाईवे पर गांव ओढां में एक मैरिज पैलेस के समीप कार आगे जा रही ईंटों से भरी एक ट्रैक्टर-ट्राली के पिछले हिस्से में जा लगी। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार कार जब ट्रैक्टर को ओवरटेक कर रही थी तो ट्रैक्टर चालक ने एकदम से ट्रैक्टर को दूसरी तरफ मोड़ दिया, जिसके चलते कार चालक संतुलन खो बैठा और ये हादसा हो गया। हादसे के बाद ट्रैक्टर चालक ट्रैक्टर छोडकर मौके से फरार हो गया। हादसे में घायल कार सवार पांचों लोगों को अस्पताल में दाखिल करवाया गया जहां चमकदीप सिंह को मृत घोषित कर दिया गया। जबकि 4 अन्य घायलों का उपचार चल रहा है। एसआई पवन कुमार ने बताया कि इस मामले में घायल के बयानों उपरांत कार्रवाई की जाएगी।

विधायक का आश्वासन, ठेकेदार की मनमानी से गुस्साए सफाई कर्मचारी

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 28 जून। डबवाली म सफाई कर्मचारियों व डोर-टू-डोर कचरा उठाने वाले कर्मचारियों का धरना शनिवार को 20वें दिन में प्रवेश कर गया है। धरने के 20वें दिन इनेलो से डबवाली विधायक आदित्य चौटाला ने आश्वासन दिया कि वे उनकी मांगों को सरकार तक पहुंचाकर उन्हें इंसाफ दिलाएंगे। उन्होंने ईओ से बात भी कर ली थी।

प्रधान अमित कुमार, उप प्रधान रविंद्र कुमार ने कहा कि विधायक के आश्वासन के बाद हमें लगा था कि आज धरना उठ जाएगा। विधायक आदित्य ने डोर-टू-डोर गाड़ी चालकों को ड्यूटी पर जाने के लिए कह दिया। बाद में जब हमने ठेकेदार विजय से बात की तो उसने विधायक की बातों को अनसुना करके हमें दो दिन का टाइम दे दिया। ठेकेदार की बातों से नहीं लगता कि वो कोई कार्रवाई कर्मचारियों के हित में करेगा। कर्मचारियों ने भी साफ शब्दों में कह दिया कि जब तक हमें कार्य पर नहीं लिया जाता, तब तक हमारा धरना जारी रहेगा। इस मौके पर प्रधान अमित कुमार, उप प्रधान रविंद्र कुमार, चरणजीत, दीपक, सपना, उषा, आरती, मोनिका, सुनीता, विशाल, गुरदीप आदि कर्मचारी उपस्थित रहे।

सांसद सैलजा ने लिया बाबा श्याम का आशीर्वाद

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 28 जून। सिरसा की सांसद कुमारी सैलजा ने प्राचीन श्री श्याम मंदिर में बाबा श्याम की पूजा-अर्चना की और बाबा श्याम का आशीर्वाद लिया।

इस अवसर पर पंडित प्रिंस शर्मा और तेजपाल शर्मा ने सांसद कुमारी सैलजा और कांग्रेस नेताओं को बाबा श्याम के पटके पहनाए। इसके बाद मंदिर के संरक्षक और पुजारी डॉ. चांद रतन शर्मा के निधन पर उनकी आत्मा की शांति के लिए विशेष पूजा की गई। सांसद सैलजा ने दिवंगत पुजारी के परिजनों से मुलाकात कर शोक जताया। उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को शांति और परिवार को दुख सहने की शक्ति मिले। इस मौके पर उनके साथ कांग्रेस नेता वीरभान मेहता, राजकुमार शर्मा, नवीन केडिया, प्रेम शर्मा, भूपेंद्र राठौड़, मोहित शर्मा, अंकित चाड़ीवाल, धर्मपाल खोखर, सतपाल मेहता और मनीष सोनी मौजूद रहे।

2009 हत्या के मामले में वांछित भगौड़ा आरोपी काबू

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 28 जून। जिला पुलिस सिरसा द्वारा चलाए जा रहे अपराध व अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत कार्यवाही करते हुए जिला की थाना शहर सिरसा की पुलिस पार्टी द्वारा अभियोग संख्या 635 दिनांक 24.10.2009 धारा 302/34 भा.द.स. थाना शहर सिरसा में वांछित भगौड़ा आरोपी रामुदीत पुत्र विफन भैया निवासी बेला जिला गया (बिहार) को गिरफ्तार किया है। उप निरीक्षक संदीप कुमार प्रबंधक थाना शहर सिरसा ने बताया कि गिरफ्तार किए गए युवक को अदालत में पेश किया गया व पांच दिन पुलिस हिरासत प्राप्त किया गया। आरोपी से दौराने अनुसंधान वारदात में प्रयुक्त हथियार व अन्य आरोपियों बारे गहन पुछताछ की जाएगी।

मां-बेटी सुसाइड केस: फरार पति का नहीं लगा सुराग, बठिंडा पहुंची पुलिस, नहीं मिली लोकेशन

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 28 जून। जिला में मां-बेटी सुसाइड मामले में फरार आरोपी पति जादविंद्र की तलाश में डबवाली पुलिस पंजाब के बठिंडा पहुंची। वहां पर उसका घर बंद मिला। आरोपी घटना के दिन से ही फरार बताया जा रहा है। उसका या परिवार का कोई फोन नंबर भी नहीं लग रहा है। राजविंद्र कौर और अमृतपाल कौर के सुसाइड करने से पहले उसकी अंतिम बार बात भी हुई थी। पुलिस के अनुसार, यादविंद्र पर अपनी पत्नी अमृतपाल कौर और सास राजविंद्र कौर को तलाक के लिए परेशान करने का आरोप है। आरोपी ने अपना मोबाइल फोन बंद कर लिया है और उसकी लोकेशन भी ट्रेस नहीं हो पा रही है। पुलिस ने उसकी गिरफ्तारी के लिए प्रयास तेज कर दिए हैं। जांच में सामने आया है कि जादविंद्र किसी कॉलेज में पढ? वाली लडकी से शादी करने के लिए अपनी पत्नी से तलाक मांग रहा था और इसी बात को लेकर उसे लगातार मानसिक रूप से प्रताड़ित करता था।

गड़बड़ी: पीपीपी में रेहड़ी चलाने वाले के नाम दिखा दी तीन गाडियां

बीपीएल राशन कार्ड कटा, सभी सुविधाओं से हुआ वंचित

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 28 जून। जिला में परिवार पहचान पत्र में गड़बड़ी का मामला सामने आया है। सुरतगढि?ा मोहल्ले में एक रेहड़ी चलाने वाले के नाम पर तीन गाडि?ां दर्ज कर दी गई। इसके कारण उसका बीपीएल राशन कार्ड कट गया। इसका पता उसे तब चला, जब वह डिपो पर राशन लेने गया।

बताया जा रहा है किवार्ड 19 में रहने वाले मनोज कुमार सब्जी की रेहड़ी लगाकर अपना परिवार चला रहे हैं। उनके परिवार

पहचान पत्र में उनके परिवार के तीन सदस्यों के नाम पर गाडि?ां दर्ज कर दी गईं। जब वह इस महीने राशन लेने गया तो पता चला कि उनका कार्ड से कट गया है। सीएससी सेंटर पर जाकर जांच कराई तो पता चला कि तीन गाडि?ों के कारण कार्ड निरस्त किया गया है, जबकि ये गाडि?ां पड़ोसियों की हैं। मनोज ने बताया कि वह किराए के मकान में रहते हैं और उनके पास सिर्फ एक साइकिल है। पीपीपी में उनकी वार्षिक आय 1 लाख रुपए दर्ज है, लेकिन महंगी गाडि?ां उनके नाम पर दिखा दी गईं। अब राशन कार्ड कटने से परिवार बीपीएल से मिलने वाली सरकारी सुविधाओं से वंचित हो गया।

पूर्व पार्षद प्रतिनिधि अमित सोनी ने बताया कि सिरसा में फर्जी तरीके से वाहन दिखाकर बीपीएल कार्ड काटने के मामले लगातार सामने आ रहे हैं। अप्रेल के बाद दूसरी बार हजारों बीपीएल राशन कार्ड काटे गए हैं। उन्होंने मुख्यमंत्री से क्रीड कंपनी के सर्वे की जांच की मांग की है। इस गड़बड़ी के कारण गरीब परिवार सरकारी योजनाओं से मिलने वाली सुविधाओं से वंचित हो रहे हैं। स्थानीय लोगों ने इस मामले में त्वरित कार्रवाई की मांग की है।

जांच को प्रभावित करने का हो रहा प्रयास: सैनी

शिवपुरी में गड़बड़ी को लेकर धरना 12वें दिन जारी

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 28 जून। पूर्व नगरपार्षद सुशील सैनी ने सिरसा के भाजपा नेता पर आरोप लगाया कि नगर परिषद के घोटालों में उसका सीधा हाथ है। नगरपरिषद में तत्कालीन चेयरपर्सन पर दबाव बनाकर करोड़ों रुपए का हेरफेर किया गया। उन्होंने दावा किया कि उनके पास भ्रष्टाचार के पुख्ता सबूत मौजूद हैं।

शिवपुरी के गेट पर धरने के 12वें दिन लोगों को संबोधित करते हुए सुशील सैनी ने कहा कि प्रशासन ने डीएमसी की जांच के लिए छोटे अधिकारियों की ड्यूटी लगाई है। छोटे अधिकारी अपने सीनियर

अधिकारी की जांच कैसे कर सकेंगे। केवल जांच को प्रभावित करने के लिए ऐसा किया जा रहा है ताकि मामले को रफा दफा किया जा सके लेकिन वे ऐसा नहीं होने देंगे। उन्होंने कहा कि अगर प्रशासन ने व्यापक और सही जांच न करवाई तो वे हाईकोर्ट जाएंगे और उपायुक्त को भी पार्टी बनाएंगे। उन्होंने कहा कि इस पूरे घोटाले की जांच जिम्मेदार अधिकारी से करवाई जानी चाहिए अन्यथा उनका आंदोलन इसी तरह जारी रहेगा। प्रशासन का नगरपरिषद के गेट पर पुतला फूंका जाएगा और शवयात्रा निकाली जाएगी। सुशील सैनी ने आरोप लगाया कि कथित भाजपा नेता ने नगरपरिषद के अधिकारियों से मिलीभगत करके डबवाली रोड पर ट्रस्ट बनाकर जमीन पर कब्जा किया और उसके निर्माण के लिए 40 लाख रुपए नगरपरिषद द्वारा भुगतान किया गया।

बीजेपी सरकार ने बिजली के बढ़े रेट कम नहीं किए तो इनेलो पार्टी 1 जुलाई को सेक्टर 6 स्थित शक्ति भवन पंचकूला पर करेगी जोरदार प्रदर्शन

बिजली के अनाप शनाप रेट बढ़ाकर प्रदेश की जनता की जेब पर डाका डालने का काम कर रही बीजेपी सरकार: माजरा

हरियाणा वाटिका/विकास कुमार

कैथल, 28 जून। इनेलो के प्रदेशाध्यक्ष रामपाल माजरा ने कहा कि अगर 30 जून तक बीजेपी सरकार ने बिजली के बढ़े रेट कम नहीं किए तो इनेलो पार्टी 1 जुलाई को सेक्टर 6 स्थित शक्ति भवन पंचकूला पर जोरदार प्रदर्शन करेगी। प्रदर्शन में राष्ट्रीय अध्यक्ष चौ. अभय सिंह चौटाला

राष्ट्रीय प्रधान महासचिव प्रकाश भारती, विधायक अदित्य देवीलाल, विधायक अर्जुन चौटाला, संगठन सचिव उमेद लोहान, महिला और युवा प्रकोष्ठ समेत पार्टी के वरिष्ठ पदाधिकारी और कार्यकर्ता शामिल होंगे।

माजरा ने कहा कि बेहिसाब बढ़ रही महंगाई के दौर में बीजेपी सरकार ने बिजली के अनाप शनाप रेट बढ़ाकर प्रदेश की जनता की जेब पर डाका डालने का काम किया है। माजरा ने कहा कि भाजपा सरकार ने बिजली दरों के 3 सैल बदलकर 9 प्रतिशत से 30 प्रतिशत तक बिजली महंगी कर आम जनता की जेब में डाका डालने का काम किया है। पहले जो बिल 900 रूपए आता था वो अब 3600 रूपए आया है। बीजेपी के 11 साल के शासन में लगातार बिजली के रेट बढ़े हैं। चुनावों में वोट लेने के लिए बीजेपी ने तरह तरह के वादे किए थे जिसमें बिजली सस्ती देने का वादा भी शामिल था लेकिन अब जनता से किए सभी वादों को भूल गए हैं। प्रदेश की जनता बिजली के बिल चार गुना बढ़ कर मिलने से सकते में है और बिजली मंत्री बेशर्मी से सरे आम मीडिया में बयान दे रहे हैं कि सरकार ने बिजली की दरों में कोई परिवर्तन नहीं किया है। बीजेपी सरकार के मुख्यमंत्री और मंत्री मुफ्त में मिल रही सरकारी सुविधाओं का भरपूर आनंद ले रहे हैं उन्हें प्रदेश की आम जनता की पीड़ा का अहसास ही नहीं है। इससे पहले 2015 में भी बीजेपी द्वारा बिजली के बिल बढ़ाए जाने पर इनेलो पार्टी सडकों पर उतरी थी और बीजेपी सरकार को बढ़े बिजली के दामों को वापिस लेने पर मजबूर कर दिया था। अब भी बीजेपी सरकार को इनेलो पार्टी बढ़े बिजली के दामों को वापिस लेने पर मजबूर कर देगी और प्रदेश की जनता को राहत दिलवाएगी।

कालांवाली नगरपालिका चुनाव: पोलिंग पार्टियां चुनाव सामग्री लेकर रवाना

- 20 पोलिंग पार्टियां बनाई गई- आज सुबह आठ से शाम छह बजे तक होगा मतदान

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 28 जून। नगरपालिका कालांवाली के आम चुनाव के लिए सभी तैयारियां पूर्ण कर ली गई है। 29 जून रविवार को मतदान होगा, जिसके लिए शनिवार को सीडीएलयू के अंबेडकर भवन से पोलिंग पार्टियों को ईवीएम व अन्य चुनाव सामग्री देकर रवाना किया गया। इस दौरान रिटर्निंग अधिकारी एवं एसडीएम मोहित कुमार, सहायक रिटर्निंग अधिकारी एवं तहसीलदार रानियां शुभम शर्मा, सहायक रिटर्निंग अधिकारी एवं नायब तहसीलदार कुंवरदीप सिंह भी मौजूद रहे। इससे पहले कर्मचारियों को मतदान को लेकर ट्रेनिंग करवाई गई थी। कालांवाली नगरपालिका में प्रधान पद और 16 वार्ड सदस्य पद के चुनाव के लिए मतदान प्रक्रिया 29 जून रविवार सुबह आठ बजे से शुरू होगी जो शाम छह बजे तक चलेगी तथा आगमी 30 जून को सीडीएलयू सिरसा के अंबेडकर भवन में मतगणना होगी। मतदान प्रक्रिया के लिए 80 कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है। रिटर्निंग अधिकारी एवं एसडीएम मोहित कुमार ने बताया कि चुनाव को स्वतंत्र, निष्पक्ष और शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने के लिए व्यापक इंतजाम किए गए हैं। उन्होंने बताया कि कालांवाली नगरपालिका के 16

वार्डों के लिए 17 मतदान केंद्र बनाए गए हैं। मतदान प्रक्रिया संपन्न कराने के लिए 17 पोलिंग पार्टियां बनाई गई हैं तथा तीन पोलिंग पार्टियां रिजर्व रखी गई हैं और 80 कर्मचारियों को मतदान केंद्रों पर तैनात किया गया है। उन्होंने बताया कि अतिरिक्त उपायुक्त वीरेंद्र सहरावत को आब्जर्वर नियुक्त किया है। उन्होंने बताया कि चुनावी प्रक्रिया को सुचारू बनाए रखने के लिए दो ड्यूटी मजिस्ट्रेट नियुक्त किए गए हैं। मतदान प्रक्रिया में रिजर्व समेत कुल 31 ईवीएम का प्रयोग होगा। उन्होंने बताया कि कालांवाली के 16 वार्डों में कुल मतदाताओं की संख्या 16 हजार 161 है जिनमें से 8550 पुरुष तथा 7611 महिला मतदाता है। प्रधान पद के लिए नोटा सहित 11 प्रत्याशी तथा वार्ड पार्षद के लिए 41 उम्मीदवार चुनावी मैदान में हैं। वार्ड नंबर 12 व 15 में उम्मीदवार सर्वसम्मति से बनाए गए हैं। उन्होंने मतदाताओं से अपील की कि वे अपने मताधिकार का प्रयोग अवश्य करें, उन्होंने आश्वस्त किया कि जिला प्रशासन ने मतदान प्रक्रिया को सुगम और सुरक्षित बनाने के लिए सभी आवश्यक प्रबंध कर लिए हैं।

मतदान केंद्र के 200 मीटर के दायरे में कैंप लगाने पर रोक: रिटर्निंग अधिकारी एवं एसडीएम मोहित कुमार ने बताया कि कालांवाली नगरपालिका चुनाव के बीती 29 जून को होने वाले आम चुनाव में शांति और कानून व्यवस्था बनाए रखने के मद्देनजर जिलाधीश शांतनु शर्मा ने मतदान केंद्रों के 200 मीटर के दायरे में किसी भी उम्मीदवार या राजनीतिक दल द्वारा बूथ / कैंप लगाने पर रोक लगाई है। यदि किसी स्थान पर एक से अधिक मतदान केंद्र हैं, तो वहां भी केवल एक ही बूथ/कैंप की अनुमति दी जाएगी, जो 200 मीटर की सीमा से बाहर होना चाहिए। इनमें केवल मतदाता, मतदान अधिकारी, प्रत्याशी स्वयं, उनका चुनाव एजेंट, प्रत्येक प्रत्याशी का एक पोलिंग एजेंट (एक समय में), राज्य चुनाव आयोग द्वारा अधिकृत व्यक्ति, ड्यूटी पर तैनात सरकारी कर्मचारी, मतदाता के साथ गोद में लिया बच्चा, दृष्टिहीन या अशक्त मतदाता की सहायता हेतु साथ आया व्यक्ति, पीठासीन अधिकारी द्वारा अनुमति प्राप्त अन्य आवश्यक व्यक्ति को प्रवेश की अनुमति होगी।

अखिल भारतवर्षीय श्री गुर्जर गौड़ ब्राह्मण महासभा की कार्यकारिणी का सिरसा में स्वागत

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 28 जून। जनसंपर्क अभियान के तहत श्रीगंगानगर जा रहे राष्ट्रीय अध्यक्ष ओमप्रकाश जोशी, प्रधानमंत्री प्रद्युम्न जोशी एवं अखिल भारतवर्षीय श्री गुर्जरगौड़ ब्राह्मण युवक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल जोशी, बलजीत जाजड़ा, बसंत पिरगावत, पूर्व अध्यक्ष रामचंद्र मताणा के हरियाणा आगमन पर अखिल भारतवर्षीय श्री गुर्जर गौड़ ब्राह्मण महासभा व श्री ब्राह्मण महासभा द्वारा दिल्ली पुल पर जोरदार स्वागत किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष ओमप्रकाश जोशी ने कार्यकारी अध्यक्ष विजय जोशी से कहा कि आपको राष्ट्रीय स्तर की कार्यकारिणी में काम करना है। अधिक से अधिक लोगों को महासभा से जोड़ें, ताकि संगठन को मजबूती प्रदान की जा सके। महर्षि गौतम आश्रम के विषय में भी राष्ट्रीय अध्यक्ष से चर्चा की गई। कार्यकारी अध्यक्ष विजय जोशी ने राष्ट्रीय अध्यक्ष व अनिल जोशी को मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा का निमंत्रण दिया, जिस पर उन्होंने कहा कि जब आश्रम में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा होगी तो वे अवश्य आएंगे। इस अवसर पर हिसार से मुख्य समाजसेवी विनोद जोशी, प्रदेशाध्यक्ष इंद्र पाईवाल, युवा अध्यक्ष प्रदीप शर्मा जोधकां, उपाध्यक्ष प्रदीप शर्मा जोधकां, जगदीश जोशी, मोहित जोशी, सुरेश दड़बा, महासभा अध्यक्ष सुशील शर्मा, राहुल शर्मा, युवा अध्यक्ष नितिश शर्मा, पृथ्वी जोशी, बोबी चिंडालिया, मोंटी, मुकेश जोशी, हितेश जोशी, सुधीर सारस्वत, मदनलाल, राजकुमार चोटिया सहित समाज के गणमान्य उपस्थित थे।

बाइक सवार 1 किलो 71 ग्राम अफीम सहित काबू

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 28 जून। सीआईए सिरसा पुलिस ने गश्त व चैकिंग के दौरान हुडा सेक्टर-20 टी-प्वाइंट वेदवाला रोड से एक बाइक सवार युवक को करीब 2.5 लाख रुपए की 1 किलो 71 ग्राम अफीम के साथ गिरफ्तार किया है।

सीआईए सिरसा प्रभारी सब इंस्पेक्टर प्रेम कुमार ने बताया कि थाना एक पुलिस टीम गश्त व चैकिंग के दौरान हुडा सेक्टर-20 टी-प्वाइंट वेदवाला रोड पर मौजूद थी। इस दौरान सामने से आ रहे बाइक सवार ने पुलिस की गाड़ी को देखकर भागने का प्रयास किया। पुलिस पार्टी ने शक के आधार पर बाइक सवार को काबू कर उसकी तलाशी ली तो उसके कब्जा से करीब 2.5 लाख रुपए की 1 किलो 71 ग्राम अफीम बरामद हुई। आरोपी की पहचान जगदीश उर्फ जग्गू पुत्र महेंद्र सिंह निवासी आदर्श नगर सेक्टर- 20, हुडा सिरसा के रुप में हुई है। पुलिस की प्रारंभिक पूछताछ में आरोपी ने बताया कि उसे यह अफीम राजस्थान के सीकर जिला का व्यक्ति देकर गया था और इसे सिरसा व आसपास के क्षेत्रों में सप्लाई करने की फिराक में था। उन्होंने बताया कि आरोपी के खिलाफ थाना सिविल लाइन सिरसा में मादक पदार्थ अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू की गई है। पुलिस आरोपी को अदालत में पेश कर रिमांड पर लेगी और अफीम तस्करी के नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों के बारे में जानकारी जुटाएगी।

चोरी के दो आरोपी काबू, चोरीशुदा सामान बरामद

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 28 जून। सिविल लाइन थाना पुलिस ने मकान में से दो मोटर चोरी की वारदात को अंजाम देने वाले आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों की पहचान सुनिल कुमार निवासी सेक्टर-19 सिरसा व प्रवीण निवासी सेक्टर-19 सिरसा के रूप में हुई है।

पुलिस को दी शिकायत में पीड़ित महिला भागवंती निवासी सेक्टर 19 सिरसा ने बताया कि बीती 26 जून को दिन में अज्ञात युवकों ने उसके घर में घुसकर दो पानी की मोटर चोरी करके ले गए हैं। निरीक्षक राधेश्याम ने बताया कि पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की और महत्वपूर्ण सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए दोनों आरोपियों को सेक्टर-20 हुडा से गिरफ्तार कर लिया।

श्री गुरुनानक देव महाराज के सिरसा आगमन दिवस पर बांटे लड्डू

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 28 जून। इतिहास में दर्ज कि आज के दिन श्री गुरुनानक देव महाराज के सिरसा में आने के पवित्र दिवस को लेकर तृप्ता वैल्फेयर सोसायटी की अध्यक्ष तृप्ता चिटकारा ने शनिवार को शिव चौक के समीप एक छबील लगाकर आमजन में लड्डुओं का वितरण किया।

कार्यक्रम में मुख्यातिथि समाजसेवी डॉ. इंद्र गोयल व पूर्व इंस्पेक्टर संजीव देवगुण थे जबकि विशिष्ट अतिथियों में आम आदमी पार्टी के युवा नेता मनीष मेहता, दीपक सेठी, रमेश साहुवाला, मयंक बत्रा, बंटी, संजु कुक्कड़, सरबजीत सिंह, राजू धवन, बलविंद्र कौर, सीमा, मैना, गुरदेव कौर, मीना, मोनिका आदि गणमान्यजन मौजूद थे। इस अवसर पर सभी गणमान्यजनों को तृप्ता वैल्फेयर सोसायटी की अध्यक्ष तृप्ता चिटकारा ने सिरोपा पहनाकर उनका अभिनंदन किया। कार्यक्रम में सभी ने इस बात के लिए स्वयं को सौभाग्यशाली माना कि सिरसा में गुरुनानक देव महाराज ने अपने चरण रखे। सभी ने तृप्ता वैल्फेयर सोसायटी की ओर से किए गए कार्यक्रम की जमकर सराहना की। उल्लेखनीय है कि तृप्ता चिटकारा पिछले करीब 19 सालों से सामाजिक व धार्मिक कार्यक्रमों में प्रमुख भूमिका में रहती हैं।

587 विद्यार्थियों ने दी लॉ की प्रवेश परीक्षा, अंग्रेजी में 291 रहे उपस्थित

हरियाणा वाटिका/एकजोत

कुरुक्षेत्र, 28 जून। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए ली जा रही प्रवेश परीक्षा के चरण में शनिवार को 878 परीक्षार्थी एल.एल.बी. व एम.ए. अंग्रेजी की परीक्षा देने पहुंचे। यह परीक्षा शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न हुई। परीक्षा नियंत्रक डॉ. अंकेश्वर प्रकाश ने जानकारी देते हुए बताया कि कुवि द्वारा ली जा रही प्रवेश परीक्षा में शनिवार को सुबह 10 बजे एम.ए. अंग्रेजी की परीक्षा विधि संस्थान व विधि विभाग परीक्षा केन्द्र में सम्पन्न हुई जिसमें 291 विद्यार्थी उपस्थित रहे। दोपहर सत्र में 12.30 बजे एल.एल.बी. की परीक्षा यूनिवर्सिटी सीनियर सेकेंडरी स्कूल, कम्युनिटी सेंटर ब्लॉक -1 व ब्लॉक-2 में संचालित हुई जिसमें 587 परीक्षार्थियों ने यह परीक्षा दी। इस परीक्षा के लिए 688 विद्यार्थियों ने आवेदन किया था। उन्होंने बताया कि कुलपति प्रो सोमनाथ सचदेवा के दिशा-निदेशार्नुसार रविवार को होने वाली बी.ए.एल.एल.बी., एम.बी.ए./बी.बी.ए. आनर्स की प्रवेश परीक्षा के लिए विशेष तौर पर परीक्षार्थियों के परिजनों व अन्य संबंधियों के लिए व्यवस्था की गई है। बी.ए.एल.एल.बी परीक्षा के लिए सर्वाधिक 1825 आवेदकों ने आवेदन किया है जबकि एम.बी.ए./बी.बी.ए. आनर्स में प्रवेश लेने हेतु 1004 विद्यार्थी अपने उपस्थिति दर्ज करवाएंगे। इन परीक्षाओं के लिए वाणिज्य विभाग, यूनिवर्सिटी सीनियर सेकेंडरी स्कूल, यू.आई.ई.टी., विधि संस्थान व विधि विभाग, आर्ट्स फैकल्टी, अंग्रेजी विभाग, कम्प्यूटर साइंस एण्ड एप्लीकेशन्स, भेषज्य विज्ञान संस्थान, आई.आई.एच.एस. को परीक्षा केन्द्र बनाया गया है। डॉ. प्रकाश ने बताया कि सभी दूर-दराज से आए परीक्षार्थियों के परिजनों व संबंधियों के लिए क्रश हॉल (केयू आडिटोरियम) में व यूआईईटी केन्द्र के बाहर बैठने व पेयजल की विशेष व्यवस्था भी की गई है ताकि गर्मी के मौसम में परिजनों को किसी भी प्रकार की कोई असुविधा न हो। यह परीक्षा 8 परीक्षा केन्द्रों पर संचालित की जाएगी जिसके लिए केयू प्रशासन ने विशेष इंतजाम किए है ताकि वे परीक्षा समाप्त होने तक आराम से प्रतीक्षा कर सकें। इस कदम से न सिर्फ परिजनों को राहत मिलेगी बल्कि व्यवस्था भी सुचारू रूप से संचालित हो सकेगी। उन्होंने बताया कि दाखिला प्रक्रिया को लेकर विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर रेगुलर एडमिशन हेतु अलग से पोर्टल पर लिंक भी विद्यार्थियों की सुविधा हेतु उपलब्ध कराया गया ताकि विद्यार्थी बहु-वैकल्पिक प्रश्नों के आधार पर आयोजित हो रही परीक्षा की उत्तर-कुंजी से मिलान कर सकें। उत्तर-कुंजी और परिणाम निर्धारित समय अनुसार आई.यू.एम.एस. पोर्टल पर अपलोड किए जा रहे हैं जिसके लिए विद्यार्थी लिंक पर क्लिक करके अपना परिणाम या उत्तर-कुंजी चुन सकते हैं। सभी परीक्षार्थियों को परीक्षा उपरांत अपनी उत्तर-पुस्तिका (ओ.एम.आर. शीट) की कार्बन कॉपी के साथ प्रश्न पत्र की कॉपी भी अपने साथ ले जाने का अवसर प्रदान किया गया है ताकि निष्पक्षता के आधार पर यह परीक्षाएं संपन्न हो सकें। उन्होंने बताया कि इससे पूर्व जिन विभागों/संस्थानों में चल रहे प्रोग्राम्स की प्रवेश परीक्षाओं का संचालन किया जा चुका है उनमें कई परीक्षार्थियों को इस विभागीय परीक्षा में भाग लेकर उक्त प्रोग्राम में प्रवेश लेने का अवसर मिला है।

कुवि में बी.ए.एल.एल.बी. व एम.बी.ए/बी.बी.ए. की प्रवेश परीक्षा आज

परीक्षा नियंत्रक डॉ. अंकेश्वर प्रकाश ने बताया कि रविवार को यूजी/पीजी कोर्सिज की श्रृंखला में बी.एफ.ए., बीए.एल.एल.बी, एम.फामेर्सी, एम.बी.ए. (पांच वर्षीय)/बी.बी.ए. आनर्स, बैचलर इन फिजिकल एजुकेशन, एम.एस.सी. ग्राफिक्स एनिमेशन एंड मल्टीमीडिया पाठ्यक्रमों की परीक्षा होगी जिसके लिए 3654 आवेदकों ने आनलाइन आवेदन किया है।

करंट लगने से युवक की मौत

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 28 जून। नाथूसरी चौपटा क्षेत्र के गांव लुदेसर में करंट लगने से 20 वर्षीय युवक मौत हो गई। युवक की पहचान गांव लुदेसर निवासी अजय कुमार गाट के रूप में हुई।

जानकारी अनुसार अजय कुमार (20) पुत्र अशोक कुमार निवासी गांव लुदेसर शुक्रवार की शाम को अपने घर में किसी काम में लगा हुआ था। इस दौरान अचानक मशीन में बिजली की तार से करंट लग गया। इससे वह बूरी तरह से घायल हो गया। इसके बाद घायल अजय कुमार को परिजनों ने डेरा सच्चा सौदा स्थित अस्पताल में लेकर गए। जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। गांव में जैसे ही अजय कुमार की मौत के बारे में ग्रामीणों को पता चला गांव में मातम छा गया। मृतक के भाई विजय कुमार के बयान पर नाथुसरी चोपटा थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर इतेफाकिया मौत की कार्रवाई की है। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों को सौंप दिया। मृतक 12वीं कक्षा में पढ़ता था।

कंपनी कर्मचारी ने फंदा लगाकर दी जान

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 28 जून। नाथूसरी चौपटा में भट्ठारोड पर निजी कंपनी में कार्यरत एक युवक ने मकान के अंदर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। युवक द्वारा आत्महत्या किए जाने के कारणों का पता नहीं लग पाया है। घटना की सूचना मिलने पर चौपटा पुलिस मौके पर पहुंची और शव को नीचे उतरवाकर पोस्टमार्टम के लिए सिरसा के नागरिक अस्पताल में पहुंचाया। पुलिस ने परिजनों को घटना की सूचना दे दी है। जानकारी के अनुसार करनाल के गांव निसिंग निवासी गुरकीरत सिंह पुत्र गुरमीत सिंह निजी कंपनी में कार्य करता था। वह भट्ठ रोड पर एक किराए के मकान में रहता था। उसके साथ चार युवक और भी साथ में रहते थे। शुक्रवार रात्रि के समय सभी सो रहे थे। इसके बाद रात्रि के समय गुरकीरत अज्ञात कारणों के चलते फांसी लगा ली। इसके बाद सुबह जैसे ही पास में सो रहे युवक जागे तो उन्होंने फंदे पर लटके हुए गुरकीरत को देखा। इसके बाद आस पास के लोगों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने मौके पर पहुंच कर स्थिति का जायजा लिया और मृतक के परिजनों को घटना की सूचना दी। पुलिस की ओर से बताया गया कि परिजनों के आने के बाद ही आगे की कार्रवाई की जाएगी। एएसआई महेंद्र सिंह ने बताया कि मृतक के जीजा गुरमीत सिंह निवासी तलवाड़ा हनुमानगढ़ राजस्थान के बयान पर मामला दर्ज कर इत्तेफाकिया मौत की कार्रवाई की है।

दो बहनों का इकलौता भाई था मृतकः

जानकारी अनुसार मृतक गुरकीरत सिंह के पिता की साल 2007 में मौत हो चुकी थी। मृतक के दो बहने हैं। मृतक के जीजा गुरमीत सिंह ने बताया कि गुरकीरत पिछले 6-7 महीने से नाथूसरी चोपटा में किराए के मकान में रह रहा था और एक निजी कंपनी में कार्य करता था उन्हें आज सुबह सूचना मिली कि गुरकीरत ने फांसी लगाकर अपने जीवन लीला समाप्त कर ली।

न्यूज फ्लैश

श्री दक्ष प्रजापति जयंती पर आयोजित प्रदेश स्तरीय समारोह के लिए निमंत्रण अभियान जारी

हरियाणा वाटिका/मनोज मलिक

भिवानी, 28 जून। आगामी 13 जुलाई को स्थानीय मेला ग्राऊंड में आयोजित होने वाले श्री दक्ष प्रजापति जयंती के प्रदेश स्तरीय समारोह के लिए निमंत्रण अभियान जोरों पर है। समारोह को भव्य और सफल बनाने के लिए श्री दक्ष प्रजापति जयंती की आयोजन कमेटी के सदस्य विभिन्न स्थानों पर जाकर लोगों को कार्यक्रम में शामिल होने का न्यौता दे रहे हैं। इसी कड़ी में शनिवार को आयोजन कमेटी के सदस्यों महाबीर मोखरा, पूर्व चेयरमैन मामनचंद, सतपाल ठेकेदार, रमेश टाक, संजय कुमार के नेतृत्व में शहर में विभिन्न स्थानों पर निमंत्रण अभियान चलाया तथा अधिक से अधिक संख्या में कार्यक्रम में पहुंचने का निमंत्रण लोगों को दिया। इस मौके पर महाबीर मोखरा और सतपाल ठेकेदार ने बताया कि इस समारोह में प्रदेश के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी बतौर मुख्यअतिथि शिरकत करेंगे। इसके अलावा केबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा सहित अन्य मंत्रीगण भी कार्यक्रम में पहुंचेंगे। उन्होंने कहा कि यह समारोह प्रजापति समाज के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर है, जिसमें पूरे प्रदेश से लोग एकजुट होंगे। इस दौरान समाज की एकजुटता और प्रगति पर चर्चा की जाएगी। उन्होंने कहा कि समारोह में महाराजा दक्ष प्रजापति के जीवन, उनके आदर्शों और सनातन परंपरा में उनके योगदान को याद किया जाएगा। उन्होंने कहा कि यह केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि सामाजिक एकता, सांस्कृतिक चेतना और पुरातन मूल्यों को पुर्नस्थापित करने का प्रयास है। उन्होंने बताया कि आयोजन कमेटी के सदस्य गांव-गांव और शहर-शहर जाकर लोगों से व्यक्तिगत रूप से मुलाकात कर रहे हैं और उन्हें इस ऐतिहासिक अवसर का हिस्सा बनने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। उन्होंने सभी से अपील की है कि वे 13 जुलाई को भिवानी में होने वाले इस प्रदेश स्तरीय समारोह में अधिक से अधिक संख्या में पहुंचें और इसे सफल बनाएं।

एचकेआरएन कर्मचारियों की 5 प्रतिशत वेतन वृद्धि पर हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड कर्मचारियों ने जताई खुशी

हरियाणा वाटिका/मनोज मलिक

भिवानी, 28 जून। हरियाणा कौशल रोजगार निगम (एचकेआरएन) के तहत कार्यरत हजारों कर्मचारियों को मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में प्रदेश की भाजपा सरकार ने बड़ी राहत देने का काम किया है। सरकार ने इन कर्मचारियों के वेतन में 5 प्रतिशत की बढ़ोतरी को मंजूरी दे दी है, जो कि एक जून से लागू हो चुका। प्रदेश सरकार के इस कर्मचारी हित के फैसले से एचकेआरएन के अंतर्गत विभिन्न विभागों में सेवाएं दे रहे कर्मचारियों में हर्ष का माहौल है। वही हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड कर्मचारियों ने भी प्रदेश सरकार के इस फैसले का स्वागत करते हुए इसे कर्मचारी हित में काफी महत्वपूर्ण बताया तथा हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड में लड्डू बाटकर खुशी मनाई। इस मौके पर कर्मचारी नेता पवन शर्मा हालुवासिया ने कहा कि एचकेआरएन कर्मचारी पिछले लंबे समय से वेतन वृद्धि की उम्मीद कर रहे थे तथा सरकार की यह घोषणा उनके लिए किसी सौगात से कम नहीं है। उन्होंने कहा कि महंगाई के इस दौर में 5 प्रतिशत की यह बढ़ोतरी उनके मासिक बजट में थोड़ी राहत प्रदान करेगी। पवन शर्मा हालुवासिया ने कहा कि इस वेतन वृद्धि से एचकेआरएन कर्मचारियों का मनोबल बढ़ेगा तथा वे और अधिक समर्पण के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर पाएंगे। हरियाणा सरकार का यह कदम एचकेआरएन कर्मचारियों के लिए बेहतर भविष्य की दिशा में एक सकारात्मक संकेत है। इसके साथ ही उन्होंने प्रदेश सरकार से मांग की कि हरियाणा के सभी विभागों में जल्द से जल्द कर्मचारियों को जॉब सिक्योरिटी भी दी जाए, ताकि कर्मचारियों का भविष्य सुरक्षित रह सकें।

भिवानी रेडक्रॉस सोसायटी द्वारा रक्तदान शिविर व नि:शुल्क टीबी जांच शिविर कल : सचिव प्रदीप कुमार

हरियाणा वाटिका/मनोज मलिक

भिवानी, 28 जून। भिवानी जिला रेडक्रॉस सोसायटी द्वारा रैडक्रॉस अध्यक्ष एवं उपायुक्त महाबीर कौशिक की सेवानिवृत्ति के अवसर पर उनके सम्मान में स्थानीय रैडक्रॉस भवन में 30 जून को प्रात: 9.30 बजे रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। इसके अलावा 30 जून को ही भिवानी रैडक्रॉस सोसायटी द्वारा सिटी स्टेशन रोड पर राजीव कॉलोनी के श्याम जी पब्लिक स्कूल में नि:शुल्क टीबी जांच शिविर का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए रैडक्रॉस सचिव प्रदीप कुमार ने दी। उन्होंने सभी स्वस्थ व्यक्तियों से आगे आकर रक्तदान की नेक मुहिम में भागीदारी करने की अपील की। उन्होंने बताया कि उपायुक्त महाबीर कौशिक का कार्यकाल भिवानी जिला के विकास और जन कल्याण के लिए अत्यंत सराहनीय रहा है। उनके सम्मान में आयोजित यह शिविर समाज सेवा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि रक्तदान एक ऐसी मुहिम है, जिसके माध्यम से हम जरूरतमंद मरीजों का जीवन बचाने में सहयोग कर सकते है। इसीलिए रक्तदान को महादान कहा गया है। सचिव ने बताया कि इसी दिन 30 जून को नि:शुल्क टीबी जांच शिविर भी आयोजित होगा। जिसमें नागरिक हस्पताल के विशेषज्ञ डॉक्टरों द्वारा टीबी की जांच की जाएगी और संदिग्ध मामलों में आगे की सलाह व उपचार के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया जाएगा।

जामपुर सेवा समिति द्वारा जून माह का हड्डी जांच शिविर कल : गोपाल कृष्ण पोपली

हरियाणा वाटिका/मनोज मलिक

भिवानी, 28 जून। जरूरतमंद व्यक्ति तक स्वास्थ्य सेवाओं को आसान से पहुंचाने के लिए जामपुर सेवा समिति द्वारा स्थानीय कृष्णा कॉलोनी स्थित डा. विद्या सागर चैरिटेबल अस्पताल में हर माह के अंतिम रविवार को हड्डी जांच शिविर का आयोजन करवाया जाता था, जो कि अब रविवार की बजाए प्रत्येक माह के अंतिम सोमवार को आयोजित करवाया जाएगा। इसी कड़ी में जून माह का हड्डी जांच शिविर 30 जून को आयोजित करवाया जाएगा। यह जानकारी देते हुए जामपुर सेवा समिति के प्रधान गोपाल कृष्ण पोपली व महासचिव विनोद मिर्ग ने बताया कि कृष्णा कॉलोनी स्थित डा. विद्या सागर चैरिटेबल अस्पताल में 30 जून को आयोजित होने वाले हड्डी जांच शिविर में कल्याणी अस्पताल गुरूग्राम से डा. विक्रांत खन्ना अपनी सेवाएं देंगे।

5 हजार किलोमीटर दूरी की सड़कों के कारपेट का काम दिसंबर तक किया जाएगा पूरा : रणबीर गंगवा

13 जुलाई को भिवानी में मनाई जाएगी गुरु दक्ष प्रजापति जयंती

हरियाणा वाटिका/एकजोत

कुरुक्षेत्र, 28 जून। पीडब्ल्यूडी, जनस्वास्थ्य आभियांत्रिकी मंत्री रणबीर गंगवा ने कहा कि प्रदेश में 5 हजार किलोमीटर दूरी की सडकों को कारपेट करने के लिए टेंडर प्रक्रिया शुरू की जा चुका है, दिसंबर तक इस काम को पूरा कर लिया जाएगा। इसके साथ ही 5 हजार किलोमीटर दूसरी की सडकों के गड्ढ़ों को पीडब्ल्यूडी विभाग ने पैचवर्क करके ठीक किया है तथा 14 हजार 300 किलोमीटर दूरी ऐसा है जिसको ठेकेदार से उनको दिए गए ठेके के तहत ठीक करवाने की समय सीमा बची है। उन्होंने कहा कि प्रदेश की अधिकतम सड़कें मौजूदा समय में गड्ढा मुक्त हो चुकी हैं, जो बची हैं उन्हें भी जल्द ही ठीक कर दिया जाएगा। यदि कहीं पर कोई अधिकारी सरकार के आदेशों की अनुपालना करता है और अपने काम में कोताही अपनाता है, उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री रणबीर गंगवा शनिवार को प्रजापति-कुम्हार धर्मशाला सभा कुरुक्षेत्र में जनसभा को संबोधित कर रहे थे। इसके बाद

उन्होंने समाज के लोगों की जनसभा को संबोधित करके 13 जुलाई को भिवानी में मनाई जाएगी वाली गुरु दक्ष प्रजापति जयंती का न्यौता दिया। सभा के प्रधान पवन कानूनगो ने पुष्प गुच्छ के साथ मंत्री रणबीर गंगवा का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि भाजपा की सरकार महापुरुषों की जयंती को सरकारी कार्यक्रम के रूप में मना रही है। इससे महापुरुषों की जानकारी जन-जन तक पहुंचाने का काम किया जाता है।

जिससे हर समाज अपने आप को गौरवान्वित महसूस करता है। उन्होंने कहा कि 13 जुलाई को भिवानी के समारोह में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचेंगे। जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री रणबीर गंगवा ने कहा कि पहले की सरकारों ने कभी जरूरतमंद, पिछड़ा वर्ग के लोगों की कोई सूध नहीं ली। बैकलॉग की सभी विभागों में खाली पद पड़े रहते थे, लेकिन भाजपा की सरकार आने के बाद बैकलॉग की सभी भर्तियों को पूरा किया। उन्होंने कहा कि सरकार ने भर्तियों की दिशा और दशा को भी बदला है। अब भर्तियों में युवाओं को किसी भी नेता के पीछे खर्ची लेकर पर्ची लेने के लिए नहीं भटकना पड़ रहा है। युवा सिर्फ किताबों की पीछे लगकर पढ़ाई कर रहे हैं और उन्हें योग्यता के आधार पर बिना पर्ची बिना खर्ची के मेरिट अनुसार नौकरी मिल रही है। इस मौके पर प्रधान पवन कानूनगो, पूर्व चेयरमैन सतबीर वर्मा, वरिष्ठ उपप्रधान मोहन मिजार्पुर, महासचिव सतीश सरोहा, उप-प्रधान शिवलाल सरवारा, कोषाध्यक्ष हरिओम शोकल, मीडिया प्रभारी कृष्ण टीक, वेदपाल, जयभगवान चीका, सह-सचिव विनोद डीग, पूर्व महासचिव रामचरण किरमच, बलबीर नौच, बल्ली डाचर, रामफल डाचर, महेंद्र सरवारा, सुभाष कुराड, सतपाल पधाना, जिले सिंह क्योडक, प्रकाश कैथल, कुलदीप धुरान, प्रेम माजरा, प्रदीप तिगरी, मास्टर नरेश पबाना, मामूराम चीका, धर्मवीर आर्य, राममेहर आर्य, राजू पेंटर पाई, पाले राम धनखड़, दलबीर घराडसी, कृष्ण सिरसमा, राजेंद्र थानेसर, मनोज रामगढ़, अभे राम खनौदा, ऋषिपाल अमीन, नवीन करनाल, राहुल, सतीश सरोहा, मास्टर हरिओम, शिवलाल सरवारा, मोहन मिजार्पुर, ऋषिपाल मथाना, बनारसी दास, होशियार सिंह, राजन वकील, डा चंद्रकांत, गंगाराम सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

श्री कृष्ण गौशाला कमेटी ने ललित जैन को किया सम्मानित

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 28 जून। गांव बप्पां स्थित श्री कृष्ण गौशाला में गौशाला कमेटी व ग्रामीणों द्वारा आयोजित कार्यक्रम में जयदेव-सहदेव जैन चेरिटेबल ट्रस्ट के प्रधान व समाजसेवी ललित जैन व नरसिंह दास बंसल ने शिरकत की। सर्वप्रथम उन्होंने गौशाला परिसर का निरीक्षण किया। गौशाला कमेटी द्वारा गौवंश के लिए की गई व्यवस्थाओं व साफ-सफाई को देखकर उन्होंने गौशाला प्रधान व सदस्यों की प्रशंसा की। उन्होंने ट्रस्ट की ओर से 2 लाख रूपए की सहयोग राशि गौशाला कमेटी को भेंट की। गौशाला कमेटी प्रधान रमेश बिजलानी ने ललित जैन व नरसिंह बंसल को शॉल ओढ़ाकर व मोमेंटो देकर सम्मानित किया व समाजसेवा के क्षेत्र में ट्रस्ट द्वारा किए जा रहे कार्यों की भूरी-भूरी प्रशंसा की। मेहर चंद ने आए हुए सभी सदस्यों का धन्यवाद किया। इस मौके पर ओमप्रकाश, बनवारी लाल, यशपाल, बंसी लाल, लक्ष्मण दास, रामकुमार, मंगत राम, रामस्वरूप, जोगिंद्र सिंह, प्रदीप शर्मा, डॉ. नंद लाल, लीलाधर व किशनदास चावला आदि मौजूद थे।

विधायक घनश्याम सर्राफ ने किया जिला कष्ट निवारण समिति के नवनियुक्त सदस्यों का स्वागत

नागरिकों के बीच रहने व उनकी समस्याओं को समझने वालों को अबकी बार किया गया समिति में शामिल : विधायक

हरियाणा वाटिका/मनोज मलिक

भिवानी, 28 जून। जिला कष्ट निवारण समिति के नवनियुक्त सदस्यों विकास काठपालिय व राम अवतार गोयल उर्फ रामू जेवड़ीवाला का शनिवार को भिवानी के विधायक घनश्याम सर्राफ के आवास पर सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस मौके पर विधायक घनश्याम सर्राफ ने नवनियुक्त सदस्यों का फूल-मालाएं पहनाकर सम्मान किया। यह जानकारी भाजपा स्वच्छता विभाग के जिला संयोजक रमेश सैनी ने दी। वही नवनियुक्त

सदस्यों को सम्मानित करते हुए विधायक घनश्याम सर्राफ ने कहा कि इन नवनियुक्त सदस्यों का चयन उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता और निस्वार्थ सेवा को देखते हुए किया गया है। विधायक ने कहा कि इस बार समिति में कुछ ऐसे चेहरों को शामिल किया गया है, जिनकी समाजसेवा और जनहित के कार्यों में गहरी पैठ रही है। इनमें विकास काठपालिया व राम अवतार गोयल उर्फ रामू जेवड़ीवाला जैसे सामाजिक व्यक्तियों का भी शामिल है। उन्होंने कहा कि यह एक सकारात्मक संकेत है कि अब जिला कष्ट निवारण समिति में ऐसे लोग शामिल हो रहे हैं जो वास्तव में जनता के बीच से हैं और उनकी समस्याओं को समझते हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि ये सदस्य जन शिकायतों के निवारण में पारदर्शिता और संवेदनशीलता लाएंगे, जिससे आम जनता का प्रशासन में विश्वास बढ़ेगा।

बजली दरों में वृद्धि कर जनता को लूट रही भाजपा सरकार : माकपा

हरियाणा वाटिका/एकजोत

कुरुक्षेत्र, 28 जून। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के जिला सचिव रोशन लाल ने कहा कि भाजपा ने एक ही झटके में बिजली के रेट चार गुना तक बढ़ा दिए यानी जिन परिवारों को 900 रुपए या हजार रुपए तक बिल देना पड़ता था उन्हें अब 4000 से लेकर 5000 रुपये बिल आ रहे हैं। एक तरफ गर्मी का सितम, साथ में बिजली के कई-कई घंटों के काट और दूसरी तरफ महंगाई की मार। भाजपा जबसे सत्ता में आई है लोगों को बुरी तरह पीस रही है। बिजली पानी जैसी बुनियादी सुविधाएं न मिलने से प्रदेश में त्राहि-त्राहि मची हुई है। उन्होने कहा कि निगम ने 75 रुपये प्रति किलो वाट फिक्स चार्ज भी इसमें जोड़ दिया है यानी 10 किलो वाट कनेक्शन पर अब हर महीने 750 रुपए अतिरिक्त देने पड़ रहे हैं। पहले बिजली की दरे स्लैब वॉइज थी यानी 50 यूनिट ऐसे ज्यादा इस्तेमाल पर 2.50 से 6:30 रुपये प्रति यूनिट खर्च होता था अब 5 किलो वाट से अधिक लोड होने पर 6.50 से 7.50 रुपये प्रति यूनिट वसूला जा रहा है। अलग से स्लैब वाइस बिजली के दामों में 20 से लेकर 40 पैसे प्रति यूनिट तक बढ़ोतरी की है। इतनी ही नहीं विभिन्न कैटेगरी के लिए बनाए गए स्लैब में भी बदलाव किया गया है। बीजेपी के राज में एक भी यूनिट बिजली उत्पादन का काम नहीं किया गया। बावजूद इसके यह सरकार 10 साल से लगातार बिजली की दरों में बढ़ोतरी करती जा रही है। बीजेपी ने बिजली उपभोक्ताओं को किसी प्रकार की राहत नहीं दी इसके विपरीत रेट बढ़ोतरी के साथ-साथ अनाप-शनाप चार्ज जोड़कर लोगों की जेब काटने में जुटी हैं। बीजेपी लोगों को बार-बार एहसास दिला रही है कि प्रदेश कि जनता ने भाजपा को वोट देकर गलती की है। बीजेपी सरकार यहीं पर नहीं रुक रही। यह सरकार पिछले दो महीनों से जरूरतमंद गरीब परिवारों के बीपीएल राशन कार्ड कट रही है जिससे गरीब लोग राशन डिपो से राशन प्राप्त करने में असमर्थ हो रहा है और यह दस्तूर लगातार जारी है और अगले महीने में भी लगभग पौने दो लाख राशन कार्ड और काटने की सरकार की योजना है। इन हालात में प्रदेश कि मेहनतकश जनता जिसमें मजदूर, किसान, खेत मजदूर, दुकानदार, आम नागरिको के पास सड़कों पर आकर विरोध करने के अलावा कोई चारा नहीं हैं। माकपा ने लगातार बढ़ रही महंगाई, बेरोजगारी, अपराध पर अपना आंदोलन किए हैं। अगर सरकार बढ़े हुए बिजली के दाम वापिस नहीं लेती तो आने वाले दिनों में माकपा आंदोलन करते हुए, 9 जुलाई को होने वाली देशव्यापी हड़ताल में ट्रेंड यूनियन का पुरजोर समर्थन करते हुए प्रदेश कि जनता को लामबंद करेगी।

धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में भव्य जगन्नाथ रथ 5 जुलाई को, देश-विदेश से हजारों भक्त होंगे शामिल

हरियाणा वाटिका/एकजोत

कुरुक्षेत्र, 28 जून। धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में 5 जुलाई शनिवार को इस्कॉन द्वारा पुरी की तर्ज.पर भव्य जगन्नाथ रथ यात्रा का आयोजन किया जाएगा। यह यात्रा न केवल आध्यात्मिक उल्लास का प्रतीक होगी बल्कि इसे भक्ति, सेवा और संस्कृति का महोत्सव कहा जा सकता है। रथ यात्रा का शुभारंभ दोपहर में श्रीकृष्ण अर्जुन मंदिर, ज्योतिसर में भगवान श्री जगन्नाथ, बहन सुभद्रा एवं बलराम की महाआरती के साथ होगा जिसमें भारत व विदेशों से आए सैकड़ों श्रद्धालु भाग लेंगे। इसके उपरांत सभी भक्तों के लिए भव्य प्रीतिभोज ;प्रसाद की व्यवस्था की गई है।

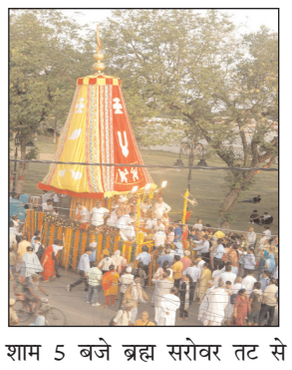

शाम 5 बजे ब्रह्म सरोवर तट से भगवान का रथ नगर भ्रमण पर निकलेगा जिसे भक्तगण प्रेमपूर्वक रस्सियों से खींचेंगे। यह यात्रा बिरला मंदिर, गुरुद्वारा चौक, रेलवे रोड, पीपली रोड होते हुए सेक्टर 13 स्थित कांग्रेस भवन पहुंचेगी, जहां विशाल भंडारे के साथ इसका समापन होगा। इस रथ यात्रा को विशिष्ट बनाने के लिए बैंड.बाजा, झांकियाँ तथा भक्तों की हरिनाम संकीर्तन मंडलियाँ पूरे मार्ग में सहभागी होंगी।

यात्रा मार्ग पर भक्त झाड़ू लगाकर और जल छिड़ककर भगवान के लिए पवित्र पथ बनाएंगे। पूरे रथ मार्ग पर भगवान को आकाशमार्ग से 56 भोग अर्पण किए जाएंगेए और श्रद्धालुओं के लिए प्रशाद के स्टॉल भी लगाए जाएंगे।

पुरी, वृंदावन, कुरुक्षेत्र तीनों तीर्थों का दिव्य संबंध

इस्कॉन कुरुक्षेत्र के अध्यक्ष श्रीमान साक्षी गोपाल प्रभुजी ने बताया कि रथ यात्रा का आध्यात्मिक इतिहास अत्यंत गहरा है। पुराणों में वर्णित है कि पहली रथ यात्रा तब मानी जाती है जब वृंदावनवासियों ने भगवान श्रीकृष्ण को कुरुक्षेत्र से रथ में बैठाकर अपने साथ ले जाने का प्रयास किया। उसी प्रेम भावना को पुरी और कुरुक्षेत्र की रथ यात्राएँ दोहराती हैं। शास्त्रों में कहा गया है कि भगवान के रथ.दर्शन से करोड़ों जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं, और यह रथ यात्रा उसी कृपा का विस्तार है। अध्यक्ष श्रीमान साक्षी गोपाल प्रभुजी, उपाध्यक्ष श्रीमान मोहन गौरचंद्र प्रभुजी और पूरी कार्यकारिणी टीम इस यात्रा को और भव्य बनाने के लिए दिन रात बहुत मेहनत कर रहे है।

नहर किनारे बन रही सड़क में घटिया सामग्री का प्रयोग करने पर ग्रामीण भड़के ग्रामीण

हरियाणा वाटिका/नंदकिशोर

रतिया, 28 जून। रतिया से गांव अलीका तक नहर के किनारे बनाई जा रही सड़क में घटिया सामग्री का प्रयोग करने पर आज क्षेत्र के ग्रामीणों ठेकदार पर आरोप लगाए गए है। गांव लालवास के ग्रामीणों द्वारा आज नहर के किनारे सड़क पर खड़े होकर विभाग व सरकार के खिलाफ रोष प्रदर्शन किया। ग्रामीणों में शामिल श्रवण सिंह ने बताया कि ठेकेदार द्वारा नहर के किनारे नई सड़क बनाए जाने पर घटिया सामग्री का प्रयोग किया जा रहा है, जिसके चलते यह निर्माणधीन सड़क हाथों से ही उखड़ रही है। उन्होंने बताया कि रोड में न तो बजरी डाली गई है और न ही तारकोल डाली गई है। उन्होंने आरोप लगाया कि कंक्रीट के ऊपर मिट्टी डालकर ही सड़क का निर्माण किया जा रहा है और यह सड़क रातों-रात की उखड़ रही है उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि ठेकेदार की लापरवाही के कारण सड़क के निर्माण में घटिया सामग्री का प्रयोग किया जा रहा है उन्होंने विरोध प्रदर्शन करते हुए कहा कि इस सड़क निर्माण को लेकर संबंधित विभाग के अधिकारियों को शिकायत की जाएगी अगर अधिकारियों ने इस तरफ कोई ध्यान ना दिया तो हरियाणा के मुख्यमंत्री को भी ट्विटर के माध्यम से शिकायत की जाएगी।

चित्रकूट का अर्थ है कई 'आश्चर्यो का पर्वत'। विंध्य पर्वत श्रृंखला में फैला चित्रकूट दो भागों में बंटा हुआ है। एक भाग मध्यप्रदेश के सतना जिले का चित्रकूट है, जो कि एक तहसील है और दूसरा भाग उत्तरप्रदेश का चित्रकूट जिला है।

एक भाग मध्यप्रदेश के सतना जिले का चित्रकूट है जो कि एक तहसील है और दूसरा भाग उत्तरप्रदेश का चित्रकूट जिला है। महर्षि वाल्मीकि रचित रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम ने अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ अपने चौदह वर्ष के वनवास में से साढ़े ग्यारह वर्ष का समय यहां पर व्यतीत किया था।

श्रीरामजी की भूमि चित्रकूट

भारत में कई ऐसे स्थान हैं, जो कि ऐतिहासिक होने के साथ ही साथ धार्मिक रूप से भी महत्वपूर्ण हैं। ऐसे ही स्थानों में से एक चित्रकूट है, भगवान श्रीराम का वनवास स्थल। चित्रकूट का अर्थ है 'कई आष्चर्यो का पर्वत'। विंध्य पर्वत श्रृंखला में फैला चित्रकूट दो भागों में बंटा हुआ है। एक भाग मध्यप्रदेश के सतना जिले का चित्रकूट है जो कि एक तहसील है और दूसरा भाग उत्तरप्रदेश का चित्रकूट जिला है। महर्षि वाल्मीकि रचित रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम ने अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ अपने चौदह वर्ष के वनवास में से साढ़े ग्यारह वर्ष का समय यहां पर व्यतीत किया था। इसी कारण से चित्रकूट पर्यटन स्थल होने के साथ ही साथ एक आध्यामिक महत्व भी रखता है, एक ऐसा स्थान जहां के कण-कण में श्रीराम बसते हैं। इसके साथ ही चित्रकूट कई महान ऋषियों की कर्मभूमि भी रही है, जैसे, अत्रि, सती अनुसूया, दत्तात्रेय, मार्कण्डेय, सरभंग, सुतीक्ष्ण। इसके साथ ही चित्रकूट रामचरितमानस के रचियता संत तुलसीदास की जन्मभूमि भी रही है, जिनका जन्म चित्रकूट के राजापुर नामक गांव में हुआ था। संत तुलसीदास द्वारा लिखित रामचरितमानस आज भी उनके वंशजों के पास यहां सुरक्षित रखी है।

क्या देखें

वैसे तो पूरा चित्रकूट ही घूमने लायक हैं, लेकिन अगर आप चित्रकूट जा रहे हैं, तो किस भी हालत में इन स्थानों पर जाना न भूलें।

रामघाट

अगर आप चित्रकूट जा रहे हैं, तो रामघाट में स्नान करना न भूलें, जिसके लिये यह माना जाता है कि अपने वनवास के दौरान चित्रकूट आने पर इसी स्थान पर श्रीराम, सीता और लक्ष्मण ने मंदाकिनी नदी में स्नान किया था। साथ ही ऐसा भी माना जाता है कि चित्रकूट के इसी घाट पर बैठकर संत तुलसीदास ने भगवान राम से चंदन लगवाया था, और फिर हनुमान ने उनका परिचय देते हुए कहा था कि :

चित्रकूट के घाट में भई संतन की भीर।
तुलसीदास चंदन घिसै तिलक देत रघुवीर।।

रामघाट के पास कुछ अन्य महत्वपूर्ण स्थान भी हैं, जैसे कि, राघव प्रयाग घाट, मतगजेंद्रेष्वर स्वामी, पाम कुटी और यज्ञ वेदी।

कामदगिरि

कामदगिरि चित्रकूट का मुख्य दर्शनीय स्थल है। कामदगिरि एक संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ है 'सभी इच्छाओं से परिपूर्ण पर्वत'। ऐसा माना जाता है कि वनवास के दौरान राम, सीता और लक्ष्मण इसी पर्वत पर रहते थें। कामदगिरि और चित्रकूट के भगवान कामतानाथ का मंदिर भी यहीं स्थित है, जहां से कामदगिरि की 5 किलोमीटर लंबी परिक्रमा आरंभ होती है। परिक्रमा के इस पथ का निर्माण सन् 1725 में बुंदेल के महाराज छत्रसाल की पत्नी रानी प्रताप कुंवारी द्वारा करवाया गया था। परिक्रमा पथ के दौरान कई अन्य मंदिर भी स्थित हैं, जैसे, भारत मिलाप जहां पर भरत की मुलाकात राम, सीता और लक्ष्मण से हुई थी।

मठगजेंद्रेश्वर स्वामी : यह मंदिर रामघाट पर स्थित है। पुराणों के अनुसार इस स्थान पर सतयुग में भगवान ब्रह्मा ने तपस्या की थी और फिर शिवलिंग की स्थापना की थी। यहां पर मंदिर की स्थापना पन्ना के महाराज अमन सिंह के द्वारा की गई थी।

जानकी कुंड

जानकी का अर्थ है राजा जनक की पुत्री अर्थात् सीता। ऐसा माना जाता है कि वनवास के दौरान सीता जी इस कुंड का प्रयोग स्नानागार के रूप में करती थी। जानकी कुंड के आसपास कई चैरिटेबल संस्थाएं स्थित है, जैसे कि जानकी कुंड नेत्र चिकित्सालय, ब्लाइंड स्कूल आदि।

अत्रि-अनुसूया आश्रम

यह आश्रम रामघाट से 15 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। ऐसा माना जाता है कि सती अनुसूया ऋषि अत्रि के साथ यहीं रहती थी और इसी आश्रम में उन्होंने त्रिदेवों को बालकों के रूप में परिवर्तित कर दिया था। इसी आश्रम के पास परमहंस आश्रम भी स्थित है।

हनुमान धारा

हनुमान धारा रामघाट से पूर्व की ओर 4 किमी की दूरी पर विंध्य के आरंभ पर स्थित एक अत्यंत रमणीय स्थल है। ऐसा माना जाता है कि लंका दहन करने के कारण अयोध्या लौटने तक हनुमान जी के शरीर में जलन हो रही थी। भगवान राम को अपनी यह समस्या बताने पर उन्होंने उन्हें चित्रकूट के इस पर्वत पर जाने के लिये कहा और यह भी कहा कि यहां पर उनपर ठंडे जल की एक धारा प्रवाहित होगी, जिस कारण से उनकी जलन समाप्त हो जाएगी। आज भी हनुमान जी की मूर्ति पर यह धारा प्रवाहित होती है और उसके बाद कहां अदृष्य हो जाती है, यह पूर्णत : रहस्य है।

गुप्त गोदावरी : चित्रकूट के दक्षिण-पष्चिम में करीब 18 कि.मी. की दूरी पर एक पहाड़ पर स्थित यह स्थान अत्यंत रमणीय ओर रहस्यमय है। गुप्त गोदावरी का आष्चर्य यहां पर स्थित दो गुफाएं हैं।

रामशय्या

सीतापुर से चलने पर भरत कूप से पहले एक और दिव्य स्थल है, जिसे रामशय्या कहते हैं। इस स्थान को परिक्रमा मार्ग से भी देखा जा सकता है। यह एक चट्टान है, जिसके लिये यह माना जाता है कि वनवास के दौरान राम और सीता इस चट्टान पर आराम करते थे।

एक बड़ी सी शिला पर दो चिन्ह भी बने हुए हैं, जिनका निर्माण राम और सीता के लेटने के कारण हुआ था। इनके अतिरिक्त भी चित्रकूट और इसके आसपास के क्षेत्र में कई दर्शनीय स्थल हैं, जैसे कि, राघव-प्रयाग घाट, यज्ञ वेदी, स्फटिक शिला, मयूरध्वज आश्रम, लक्ष्मण चौकी, वाल्मीकि आश्रम, भरत कूप, लक्ष्मण पहाड़ी, सुतीक्ष्ण आश्रम, गणेश बाग, कालिंजर दुर्ग आदि।

कैसे पहुंचे

सड़क द्वारा : मध्यप्रदेश से चित्रकूटके लिये रीवा, सतना, पन्ना, मैहर, सागर, छतरपुर आदि स्थानों से और उत्तरप्रदेष से मिर्शापुर, इलाहाबाद, बांदा, कानपुर, लखनऊ, महोबा, अतरा, नरैनी, झांसी से निरंतर बस सेवाएं उपलब्ध रहती है।

रेल द्वारा : निकटतम रेलवे स्टेषन चित्रकूट धाम कर्वी है, शो कि मानिकपुर-झांसी रेलवे लाइन में स्थित है।

वायुयान द्वारा : चित्रकूट के लिये निकटतम एयरपोर्ट खजुराहो है, जो कि चित्रकूट से 175 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

आइस स्कीइंग के लिए मशहूर

खूबसूरत औली

बद्रीनाथ धाम के निकट नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान के पास स्थित है गढ़वाल का मशहूर औली क्षेत्र। यहां पर घने जंगलों के साथ ही खूबसूरत पहाड़ तथा मखमली घासों से ढंके हुए मैदान फैले हुए हैं। देश का सबसे नया आइसस्कीइंग केंद्र भी यहीं पर मौजूद है। यहां पर आप बर्फ पर फिसलने का भरपूर आनंद उठा सकते हैं। बर्फ की चादरों से ढंकी यहां की खूबसूरत ढलानें एशिया की खूबसूरत ढलानों में भी गिनी जाती हैं। यहां से आप नंदा देवी, हाथी गौरी पर्वत, ऐरावत पर्वत तथा नीलकंठ पर्वत का नजारा भी बखूबी देख सकते हैं।

सबसे पहले भारत-तिब्बत सीमा पुलिस ने इसे आइसस्कीइंग खेल मैदान के रूप में तलाशा था फिर गढ़वाल मंडल विकास निगम ने स्कीइंग को बढ़ावा देने की मंशा से यहां स्कीइंग केंद्र की स्थापना की। यहां पर रोपवे भी है जोकि औली के आकर्षण में अनूठा साबित हुआ है। रोपवे की रोमांचक यात्रा सैलानियों को आनंदविभोर कर देती है। जब पर्यटक इसमें बैठकर जंगल, खेत और गांवों के ऊपर से गुजरते हैं, तो उनका मन झूम उठता है। दर्शनीय स्थलों की बात करें तो आप सबसे पहले गुरसौं बुग्याल देखने जा सकते हैं। ओक और कोनिफर के जंगलों से घिरा हुआ और खूबसूरती से भरापूरा यह मैदान सैंकड़ों मीलों तक फैला हुआ है। औली से तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित गुरसौं बुग्याल में गर्मियों के मौसम में असंख्य फूल भी खिलते हैं।

आप क्वांरी बुग्याल भी घूमने जा सकते हैं। यह एक मनोरम स्थल है। यहां पर दूर-दूर तक फैली हुई खूबसूरत ढलानें देखते ही बनती हैं। इन ढलानों पर ट्रैकिंग का आनंद भी लिया जा सकता है। जोशीमठ भी औली के सर्वश्रेष्ठ दर्शनीय स्थलों में शुमार है। औली से लगभग 12 किलोमीटर दूर स्थित जोशीमठ में आप मठों, स्मारकों के दर्शन कर सकते हैं। यहां पर ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा पौराणिक महत्व के कई सारे मठ व मंदिर मौजूद हैं साथ ही आप यहां पर्वतारोहण भी कर सकते हैं। इस स्थान की सबसे खास बात यह है कि इसे बदरीनाथ और फूलों की घाटी का प्रवेशद्वार भी माना जाता है।

सेलधार तपोवन को देखने का अपना अलग ही मजा है। क्योंकि यहां पर गरम पानी के अनेक सोते हैं, जिन्हें देखते ही बनता है। यहां पर आप अधिक उबलते गरम पानी के फव्वारे और सोते को देख कर दंग रह जाएंगे। इसी प्रकार चिनाब झील भी देखी जा सकती है। यह झील प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर जगह जोशीमठ के पास स्थित है। लेकिन कठिन चढ़ाई होने के कारण अभी इस स्थल का पर्याप्त विकास नहीं हो सका है।

वंशीनारायण कल्पेश्वर भी देखने योग्य जगह है, खासकर गर्मियों में। क्योंकि गर्मियों में यह पूरी घाटी फूलों से ढंकी हुई नजर आती है। इस मनोरम दृश्य को देखकर सभी पर्यटक आकर्षित हुए बिना नहीं रहते। यदि आप औली की यात्रा करने का मन बना चुके हैं तो आपको बता दें कि यहां तक आपको सीधी रेल सेवा नहीं मिल पाएगी। यहां से निकटतम रेलवे स्टेशन ऋषिकेश है। आप ऋषिकेश स्टेशन से औली के लिए बस ले सकते हैं। ऋषिकेश से औली लगभग 253 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

चाहें तो ऋषिकेश से जोशीमठ तक के लिए बसों तथा टैक्सियों व जीपों का भी प्रयोग कर सकते हैं और जोशीमठ से औली तक की यात्रा रोपवे से भी तय कर सकते हैं। जहां तक बात यहां पर ठहरने की है, तो आपको बता दें कि औली में आपको गढ़वाल मंडल विकास निगम द्वारा बनवाए गए हट्स और फाइबर हट्स में रहने की सुविधा आराम से मिल सकती है।

सम्पादक, स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक नेहा वालिया द्वारा साई प्रिंटिंग प्रैस, बी-868, न्यू अशोक नगर, दिल्ली-110096 से मुद्रित एवं वालिया सदन वार्ड संख्या 10, लोहारू, भिवानी (हरियाणा) 127201 से प्रकाशित। समाचार पत्र में प्रकाशित सभी समाचारों के लिए पीआरबी एट के तहत उत्तरदायी। फोनः01252-259260, 9255149495, ईमेलः haryanavatika@gmail.com हरियाणा वाटिकाः- प्रेरणास्त्रोत- स्व. डॉ. एल सी वालिया, समूह संपादक एवं संरक्षक- श्रीमति सरला वालिया, संपादक- श्रीमति नेहा वालिया, कार्यकारी संपादक- श्रीमति रितू वालिया। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लोहारू (भिवानी) होगा।